卐 आचार्य श्री उमास्वामिने नमः 卐

विशद
तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान
का मण्डल

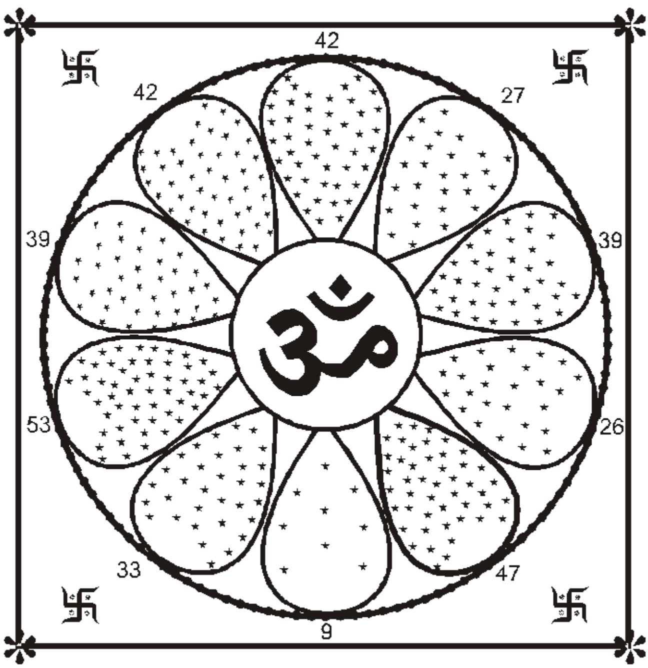

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - **विशद तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - चतुर्थ, 2015 प्रतियाँ - 1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था, सपना दीदी

संयोजन - ब्र. सोनू, किरण, आरती दीदी • मो.: 9829127533

प्राप्ति स्थल -
1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
   2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट,
   मनिहारों का रास्ता, जयपुर मो.: 9414812008
   फोन : 0141-2319907 (घर)
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
   बरौदिया कलाँ, जिला-सागर (म.प्र.)
   फोन : 07581-274244
3. विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस,
   मोतिसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर
   फोन : 2503253, मो.: 9414054624
4. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार, ए-107, बुध विहार, अलवर
   मो.: 9414016566
5. श्री सरस्वती पेपर स्टोर्स, चाँदी की टकसाल, जयपुर
   मो.: 9772220442

पुनः प्रकाश हेतु - 51/- रु.

नोट- पर्युषण पर्व के अवसर पर यह विधान अवश्य करें।

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर • फोन : 2313339, मो.: 9829050791

अपनी बात

भगवान का मंदिर भक्त के ही अन्दर है।
भक्ति की नाव से पार हो जाय भव समंदर है।।

भारत एक धर्म प्रधान देश रहा जहाँ हमेशा से तप साधना और सम्यक् ज्ञानाराधना के मध्य धर्म की सरिता प्रवाहित होती रही है। आज के पूर्व कई महामनीषी अलौकिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए साधनारत रहे हैं। उनमें ही एक हुए हैं परम आराध्य **आचार्य श्री उमास्वामीजी** जिन्होंने एक भक्त की भावना को साकार रूप देकर **'तत्त्वार्थ सूत्र'** जैसे महान् ग्रन्थ की रचना की जैसा कि सर्वविदित कथन है। द्वयाक नामक श्रेष्ठी ने अपने द्वार पर **'दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्ष मार्गः'** यह सूत्र लिख रखा था। आचार्य महाराज चर्या से लौट रहे थे। उन्होंने उस सूत्र के आगे सम्यक् शब्द जोड़ दिया श्रेष्ठी ने आकर देखा और अर्थ लगाया तो उसने गलती का अहसास किया और आचार्य प्रवर के चरणों में सविनय निवेदन किया। गुरुदेव मोक्ष का मार्ग प्रशस्त कीजिए तो उसके आगे रचना कर यह 'तत्त्वार्थ सूत्र' ग्रन्थ लिखकर पूर्ण हुआ जिसका प्रमाण है कि 'तत्त्वार्थ सूत्र' में कोई मंगलाचरण नहीं है जबकि सर्वाचार्यों ने ग्रन्थ रचना के पूर्व कोई न कोई मंगलाचरण अवश्य किया है।

पर्यूषण आदि पर्वों में ग्रन्थ का नियमित वाचन किया जाता है जैसा शास्त्र के अन्त में लिखा है कि जो भावसहित पाठ करता है उसे एक उपवास का फल प्राप्त होता है जिससे उसकी महानता सिद्ध है।

श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ विधान रचना के बाद मुनि विशालसागर एवं कई विद्वानों पं. रतनलालजी नृपत्या, पं. कोमलचंदजी नसीरावाद और श्रावकों द्वारा निवेदन आया कि **'तत्त्वार्थ सूत्र'** पर विधान रचना करें। समयाभाव के कारण टलता रहा किन्तु 2007 अजमेर वर्षायोग पर लेखन प्रारम्भ किया तो कुछ ही दिनों में विधान रचना पूर्ण हो गई जो आपके सामने प्रस्तुत है। ज्ञानी जन इससे धर्मलाभ लेकर जीवन मंगलमय बनावें यही भावना है।

ग्रन्थ का संकलन संघस्थ ब्रह्मचारिणी एवं मंत्र शुद्धि पं. सुगनचन्दजी (केकड़ी) के सहयोग से पूर्ण हुआ। प्रकाशन दिगम्बर जैन समाज फागी ने कराया। सभी आशीर्वाद के पात्र है।

दोहा- **भक्ति से मुक्ति मिले, मुक्ति से सुख नन्त।**
नहीं पूर्ण होते कभी, ना ही होता अन्त।।

- आचार्य विशदसागर

प्रकाशन सहयोगी

श्री ज्ञानचन्द जी अशोक कुमार जी जैन
फिरोजपुर झिरका, नूह (मेवात), हरियाणा

श्री सुभाषचन्द जैन, सचिन जैन (किराना वाले)
नजफगढ़, नई दिल्ली-43

श्री रामप्रसाद पवन कुमार जैन
बी-11, मोतीलाल रोड़, आदर्श नगर, दिल्ली

श्री पीयूष जैन एडवोकेट
एफ-328, कड़कड़डूमा, कोर्ट कॉम्पलेक्स, दिल्ली

पुरोवाक्

वर्तमान में लगभग 1850 वर्ष पूर्व जैन आगम को लिपिबद्ध करने की परम्परा परम पूज्य आचार्यश्री धरसेन स्वामी की प्रेरणा से मुनिराज भूतबलीजी एवं मुनिराज पुष्पदंतजी के कर-कमलों से प्रारम्भ हुई थी जो क्रमशः पुष्पित पल्लवित होती रही है। आज यह परम्परा आर्षमार्गरत विद्वतजनों, परम पूज्य मुनिराजों एवं त्यागी-व्रतियों के माध्यम से प्रवाहित है। इसी शृंखला में **अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी साहित्य रत्नाकर क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज** का नाम श्रद्धासहित उल्लेखनीय है। इस युग की चाहत के अनुकूल आचार्यश्री ने जहाँ एक ओर लघुकायिक पुस्तिकाओं के माध्यम से आगम साहित्य का सृजन कर जनमानस को झकोरा है वहीं दूसरी ओर अनेक प्रकार के विधान-पूजन की सरल-सटीक रचनाओं के माध्यम से प्रबुद्ध एवं श्रद्धावान श्रावकों को मुक्ति मार्ग का पाथेय प्रदान किया है। इस कड़ी में सम्प्रति **'तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान'** की रचना आचार्यश्री की एक अद्‌भुत कृति है। प्रस्तुत कृति में आचार्यश्री का चिंतन श्रम और समन्वयात्मक चित्रण स्तुत्य है।

तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थ के मूल रचनाकार **आचार्य उमास्वामी महाराज** हैं। तत्त्वार्थ सूत्र जैन आगम का एक महान् और सुप्रसिद्ध प्रामाणिक शास्त्र है। इस शास्त्र में आगम के मूल तत्त्व बन्धन और मुक्ति के कारणों को सूत्र विधि से निबद्ध किया गया है। ग्रन्थराज रचना की पृष्ठभूमि में मूलतः आसन्नभव्य आत्माभिलाषी द्वयाक नामक एक विद्वान था जिसने **'दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः'** सूत्र बनाकर एक पट्ट पर लिख दिया। आचार्य प्रवर उमास्वामी की दृष्टि पट्ट पर गयी और उन्होंने उस सूत्र में 'सम्यक्' शब्द और जोड़ दिया। बस इसी पृष्ठभूमि से ग्रन्थ का सृजन हुआ। इस अपेक्षा से यह ग्रन्थ प्रत्येक मोक्षार्थी के लिए एक उत्कृष्ट साधन है। इसमें मोक्षमार्ग और तत्सम्बंधित जीवादि तत्त्वों का सूत्र रूप निरूपण 357 सूत्रों से निबद्ध है। इसमें दश अध्याय हैं।

इस ग्रन्थ के गूढ़ रहस्यों को स्पष्ट करने के लिए परम पूज्य आचार्य पूज्यपाद स्वामी, पू.पू. आचार्य अकलंकदेव स्वामी एवं आचार्य विद्यानंदी स्वामी आदि अनेक महान् आचार्यों की टीकायें सुप्रसिद्ध हैं। सम्प्रति परम **पूज्य आचार्य विशदसागरजी महाराज** ने ग्रन्थ की महत्ता को प्रतिपादित करने के लिए एवं जन-सामान्य की श्रद्धा भक्ति के अनुकूल सरल सटीक भाषा में तत्त्वार्थ सूत्र की विधान-पूजा रचकर ग्रन्थराज को पूर्णतः जन-भावनाओं से क्रिया रूप में जोड़ने का श्रमसाध्य पुरुषार्थ किया है। आचार्यश्री कोटिशः वंदनीय हैं।

आचार्य भगवंतों एवं श्रेष्ठ मुनियों ने दश अध्यायों में विभक्त इस तत्त्वार्थ सूत्र के पाठ करने से एक उपवास का फल कहा है तो श्रद्धा भक्ति एवं विधिपूर्वक तत्त्वार्थ सूत्र विधान पूजा का फल अचिन्त्य होगा ही इसमें कहीं शंका नहीं है।

तत्त्वार्थ सूत्र की सारगर्भिता भी दृष्टव्य है-

इसके प्रथम अध्याय में तैंतीस सूत्रों के माध्यम से सम्यग्दर्शन के विषयभूत जीवादि सात तत्त्वों का वर्णन है।

द्वितीय अध्याय में तिरेपन सूत्र हैं। जिनमें जीव तत्त्व का कथन, जीव के भाव, उनके भेद आदि का कथन है। तीसरे अध्याय में उनतालीस सूत्रों के माध्यम से जीव के निवासभूत अधोलोक मध्यलोक का सम्पूर्ण वर्णन है। चौथे अध्याय में बियालीस सूत्र हैं। ज्योतिर्लोक एवं स्वर्ग लोक का वर्णन है। पाँचवाँ अध्याय बियालीस सूत्रों से निबद्ध है। इसमें छह द्रव्यों का परिचय, प्रदेशों की संख्या, उनके द्वारा अवगाहित क्षेत्र और कार्य का निरूपण है। छठवें अध्याय में सत्ताईस सूत्र हैं। जिनमें आश्रव तत्त्व का स्वरूप एवं उसके कारणों का वर्णन है। सातवें अध्याय में उनतालीस सूत्र हैं। जिनमें व्रतादि का सम्पूर्ण वर्णन है। आठवें अध्याय में छब्बीस सूत्रों के द्वारा कर्म-बन्ध के मूल हेतु बतलाकर उनके स्वरूपों की चर्चा है। नवमें अध्याय में सैंतालीस सूत्रों के द्वारा संवर तत्त्व का स्वरूप, उसके हेतू गुप्ति, समिति, धर्म, अनुप्रेक्षा, परिषह जय, चारित्र व तप के अन्तरंग-बहिरंग भेद एवं ध्यान का स्वरूप प्रतिपादित है। दशवें अध्याय में नौ सूत्रों के द्वारा मोक्ष का कथन है।

इस प्रकार सूत्र विधि से आचार्य उमास्वामी ने **'तत्त्वार्थ सूत्र'** को आगम की कुंजी के रूप में प्रस्तुत किया है।

परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागरजी महाराज ने इस ग्रन्थ को सरल-सुगम शब्दावली के माध्यम से विविध प्रकार के लोकप्रिय ज्ञेय छन्दों से अलंकृत कर विधान-पूजन के रूप में रचना करके सर्व हिताय भावों से हमको उपकृत किया है। पर्वराज दशलक्षण में प्रत्येक स्थान पर दस दिनों में दसों अध्यायों का विवेचन करने की परम्परा है। इस विधान के माध्यम से विद्वत जन **एक पंथ दो काज की कहावत** को चरितार्थ कर सकेंगे। आचार्यश्री की लेखनी सभी मोक्षाभिलाषियों के प्रति निरन्तर प्रवाहशील रहेगी।

सादर ! गुरुभक्त

प्रतिष्ठाचार्य : पं. विमलकुमार जैन (बनेठा)

5/216, मालवीय नगर, जयपुर • मो. 9829195197

अनुक्रमणिका

1.	मंगलाष्टक	8
2.	मण्डप प्रतिष्ठा विधि एवं मण्डप शुद्धि की संक्षिप्त विधि	11
3.	जिनेन्द्र-स्नपन-विधि (अभिषेक पूजन विधि)	14
4.	नवदेवता पूजन	26
5.	मंगलाचरण	31
6.	तत्त्वार्थ पीठिका	32
7.	समुच्चय पूजन	34
8.	शास्त्र के पूर्व मंगलाचरण	39
9.	प्रथम अध्याय	40
10.	द्वितीय अध्याय	57
11.	तृतीय अध्याय	83
12.	चतुर्थ अध्याय	105
13.	पंचम अध्याय	126
14.	षष्ठम अध्याय	145
15.	सप्तम अध्याय	161
16.	अष्टम अध्याय	181
17.	नवम अध्याय	197
18.	दशम अध्याय	224
19.	महाअर्घ्य	234
20.	समुच्चय जयमाला	235
21.	लाघव प्रदर्शन	237
22.	समुच्च महार्घ	238
23.	शांतिपाठ भाषा एवं विसर्जन पाठ	239-242
24.	आरती तत्त्वार्थ सूत्र की	243
25.	प्रशस्ति	244
26.	आचार्यश्री विशदसागरजी की पूजा	245

मंगलाष्टक (हिन्दी)

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी।।
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधू रत्नत्रय धारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।1।।

नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय कांती शुभ्र महान्।
प्रवचन सागर की वृद्धी को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान।।
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।2।।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रय धारी।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी।।
जिन आगम जिन चैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।3।।

तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादिक चौबिस जिनदेव।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव।।
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।4।।

जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
श्रीयुत तीर्थंकर की माता-पिता, यक्ष-यक्षी भी एव।।
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी।।5।।

सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार।
वसु विधि महा निमित् के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार।।

पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, बुद्धि सप्त ऋद्धीधारी।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥6॥

आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी।
नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी॥
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी।
सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥7॥

व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार॥
रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनगृह अतिशयकारी।
वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥8॥

तीर्थंकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में॥
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी।
कल्याणक पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥9॥

धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा॥
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी॥10॥

॥ इति मंगलाष्टकम्॥

गुरु भक्ति

धर्म प्रभावक परम पूज्य हे !, तव चरणों में करूँ नमन्।
बुद्धि विकाशक प्रबल आपको, करते हम सादर वन्दन॥
परम शान्ति देने वाले हे !, गुरुवर करते हम अर्चन।
विशद सिन्धु गुण के आर्णव को, करते हम शत्-शत् वन्दन॥

हस्त प्रच्छालन मंत्र-ॐ ह्रीं असुजर सुजर स्वाहा।

जल शुद्धि की विधि-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिंच्छ केशरी महापुण्डरीक पुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधिशुद्धजलं सुवर्णघटं प्रक्षालितं परिपूरित नवरत्नगन्धपुष्पाक्षताभ्यर्चितमामोदकं पवित्रं कुरु झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

शुद्धि मंत्र-ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

रक्षा मंत्र-ॐ नमो अर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

इस मन्त्र से पीले चावलों या पीले सरसों को सात बार मन्त्रित कर सभी पात्रों पर पुष्प प्रक्षेप किया जावे।

रक्षासूत्र बन्धन मंत्र-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु। ॐ नमोऽर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे रक्षाबंधनं करोमि एतस्य समृद्धिरस्तु। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा।

तिलक करण मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतपराक्रमाय ते भवतु।

यह मंत्र पढ़कर गृहस्थाचार्य सभी पात्रों को तिलक लगावें।

दिग्वन्दना मंत्र

ॐ ह्राँ णमो अरिहंताणं ह्राँ पूर्वदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर पूर्व दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर दक्षिण दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ पश्चिमदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर पश्चिम दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर उत्तर दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर सर्वदिशाओं में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

मण्डप प्रतिष्ठा विधि

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन मण्डप शुद्धि करोमि स्वाहा (मण्डप पर जल से शुद्धि करें।)

मण्डप स्थित मंगल कलश में हल्दी सुपारी रखने का मंत्र-

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगल कलशे मंगल कार्य निर्विघ्न परिसमाप्त्यर्थं पुंगी फलानि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः नमोऽर्हते श्रीमते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट स्वाहा। (मंगल कलश में हल्दी, सुपारी, पीली सरसों, नवरत्न, सवा रुपया हाथ में लेकर सावधानीपूर्वक रख दें।)

निम्न मन्त्रपूर्वक पंचवर्ण सूत्र से मण्डप को तीन बार वेष्टित करें।

यत्पंचवर्णाक्तपवित्रसूत्रं, सूत्रोक्ततत्त्वाभमनेकमेकम्।
तेनत्रिवारं परिवेष्टयामः, शिष्टेष्टयागाश्रयमण्डपेन्द्रम्।।

मन्त्र :-ॐ अनादिपरमब्रह्मणे नमो नमः। ॐ ह्रीं जिनाय नमो नमः। ॐ चतुर्मंगलाय नमो नमः। ॐ चतुर्लोकोत्तमाय नमो नमः। ॐ चतुःशरणाय नमो नमः अस्य.................... (विधान का नाम) नामधेय यजमानस्य .... (विधान कर्ता का नाम) नामधेय-याजकस्य च सुरासुरनरनृपयक्ष देवतागण गन्धर्वस्य कुलगोत्रनामदेशादिभागृहाराम-परिचारकस्यपुण्याहमंत्रैः पुण्याहं वाचयेत् (करोमि) प्रीयंतां ते कुलं, प्रीयंतां ते

आयु: प्रीयंतां ते मातृपितृसुहृद् बन्धुवर्गस्य प्रीयंतां। त्वं जीव, त्वं विजयस्व, ते मांगल्यं-मांगल्यं भवतु। सपरिवार वर्धस्व-वर्धस्व विजयस्व-विजयस्व, भवतु भवतु सर्वदा शिवं कुरु॥

श्रीमण्डपाभं मिलितत्रिलोकी-श्रीमंडितंपण्डितपुण्डरीकं।

श्रीमण्डपं खण्डितपापतापं तमेनमर्घ्येण च मण्डयाम:॥

मण्डपायार्घ्यं दद्यात्। (मण्डप के लिये अर्घ्य चढ़ावें।)

मण्डप शुद्धि की संक्षिप्त विधि

नीचे लिखे मंत्र को 5 बार पढ़कर मण्डप पर जल छिड़क देवें।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्ष: प्रतिष्ठा मण्डप वेदी प्रभृति स्थानानां शुद्धिं कुर्म:।

मण्डप की आठों दिशाओं में क्रमश: नीचे लिखे मंत्र पुष्प क्षेपते हुए मण्डप शुद्धि करें।

1. ॐ आं क्रौं ह्रीं नम: चतुर्णिकाय देवा: सर्व विघ्न: निवारणार्थाय... कार्य सिद्ध्यार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
2. ॐ आं क्रौं ह्रीं पूर्व दिशा के प्रतिहारी कुमुदेश्वर देवा:....... विघ्न निवारणार्थाय........ कार्य सिद्ध्यार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
3. ॐ आं क्रौं ह्रीं आग्नेय दिशा के प्रतिहारी यमेन्द्र देवा:....... विघ्न निवारणार्थाय....... कार्य सिद्ध्यार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
4. ॐ आं क्रौं ह्रीं दक्षिण दिशा के प्रतिहारी बामन देवा:....... विघ्न निवारणार्थाय...... कार्य सिद्ध्यार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
5. ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋत्य दिशा के प्रतिहारी नैऋतेन्द्र देवा:...... विघ्न निवारणार्थाय.....कार्य सिद्ध्यार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
6. ॐ आं क्रौं ह्रीं पश्चिम दिशा के प्रतिहारी अंजन देवा:....... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्ध्यार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
7. ॐ आं क्रौं ह्रीं वायव्य दिशा के प्रतिहारी वायुकुमार: देवा:......विघ्न निवारणार्थाय....... कार्य सिद्ध्यार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।

8. ॐ आं क्रौं ह्रीं उत्तर दिशा के प्रतिहारी पुष्पदन्त देवाः...... विघ्न निवारणार्थाय....... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
9. ॐ आं क्रौं ह्रीं ईशान दिशा के प्रतिहारी ऐशानेद्र देवाः...... विघ्न निवारणार्थाय...... कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
10. ॐ आं क्रौं ह्रीं वास्तुकुमारदेवाः..... मेघकुमारदेवाः, नागकुमारदेवाः..... विघ्न निवारणार्थाय ...... कार्य सिद्धयर्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगलकलशे पुंगी फलादि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽस्मिन् विधीयमाने श्री विशद तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान कार्यर्थं। .. श्री वीर निर्वाण निर्वाण संवत्सरे, ...मासे, ...पक्षे, ...तिथौ, ...दिने, ...लग्ने, भूमिशुद्ध्यर्थं, पात्रशुद्ध्यर्थं, शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षत श्रीफलादिशोभितं शुद्धप्रासुकतीर्थजलपूरितं मंगलकलशस्थापनं करोमि श्रीं झ्वीं झ्वीं हं सः स्वाहा।

नोट :- यह पढ़कर मण्डल के उत्तर कोने में जल, अक्षत, पुष्प, हल्दी, सुपारी, सवा रुपया, श्रीफल और पुष्पमाला सहित मंगलकलश श्रावक द्वारा स्थापित कराया जावे। इस कलश को पुण्याहवाचन कलश भी कहते हैं।

दीपक स्थापन मंत्र

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकर-मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

(मुख्य दिशानुसार आग्नेय कोण में दीपक स्थापित करें।)

शास्त्र स्थापन

स्थापनीयं वरं शास्त्रं, कुन्दकुन्दादि निर्मितं।
जैन तत्त्व प्रवोधाय, स्याद्वादेन विभूषितम्॥

ॐ ह्रीं मण्डलोपरि जिनशास्त्रं स्थापयामि।

जिनेन्द्र-स्नपन-विधि (अभिषेक पाठ)

(हाथ में जल लेकर शुद्धि करें)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानऽपि वारिभिः।
समाहितौ यथाम्नाय करोमि सकली क्रियाम्।।

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर जिनेन्द्रदेव के चरणों में पुष्पांजलि क्षेपण करना।)

श्रीमज् जिनेन्द्र- मभि- वन्द्य जगत् त्र्येशं,
स्याद्वाद- नायक- मनन्त- चतुष्टयार्हम्।
श्री- मूलसंघ- सुदृशां सुकृतैक- हेतुर्,
जैनेन्द्र- यज्ञ- विधि- रेष मयाभ्य- धायि।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(निम्न श्लोक पढ़कर यज्ञोपवीत, माला, मुदरी, कंगन और मुकुट धारण करना।)

श्रीमन्मन्दर-सुन्दरे शुचि- जलै- र्धौतैः सदर्भाक्षतैः,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत् पाद- पद्म- स्रजः।
इन्द्रोऽहं निज- भूषणार्थक- मिदं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्रा-कङ्कण-शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे।।2।।

ॐ ह्रीं .... देवाभिषेकोत्सवे/जन्माभिषेकोत्सवे।
श्वेत वर्णे सर्वोपद्रव हारिणि सर्वजन मनोरंजिणि परिधानोत्तरीयं धारिणि हं हं झं झं सं सं तं तं पं पं अहम् इन्द्रोचित परिधानोत्तरीयं आभूषणानि च धारियामि।
ॐ नमो परम शान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय- स्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि। मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा। (स्वयं पर पुष्प क्षेपण करें।)

(अग्रलिखित श्लोक पढ़कर अनामिका अंगुली से नौ स्थानों (मस्तक, ललाट, कर्ण, कण्ठ, हृदय, नाभि, भुजा, कलाई और पीठ) पर तिलक करें।)

सौगन्ध्य- संगत- मधुव्रत- झङ्कृतेन,
संवर्ण्य- मान- मिव गंध- मनिन्द्य- मादौ।
आरोप- यामि विबु- धेश्वर- वृन्द- वन्द्य-
पादारविन्द- मभिवन्द्य जिनोत्- तमानाम्।।3।।

ॐ ह्रीं परम-पवित्राय नमः नवांगेषु चन्दनानुलेपनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखि श्लोक पढ़कर भूमि शुद्धि करें)

ये सन्ति केचि- दिह दिव्य कुल प्रसूता,
नागाः प्रभूत- बल- दर्पयुता विबोधाः।
संरक्ष णार्थ- ममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षाल- यामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम्॥4॥

ॐ ह्रीं जलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठ/सिंहासन का प्रक्षालन करना।)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरैर्-यदनेक- वारम्।
अत्युद्‌ध- मुद्यत- महं जिन- पादपीठं,
प्रक्षाल- यामि भव-सम्भव- तापहारि॥5॥

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ-प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर सिंहासन पर श्री लिखें।)

श्री- शारदा- सुमुख- निर्गत बीजवर्णं,
श्रीमङ्गलीक- वर- सर्व जनस्य नित्यम्।
श्रीमत् स्वयं क्षयति तस्य विनाश्य- विघ्नं,
श्रीकार- वर्ण- लिखितं जिन- भद्रपीठे॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार- लेखनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठिका पर श्रीजी विराजमान करें।)

यं पाण्डुकामल- शिलागत- मादिदेव-
मस्नापयन् सुरवराः सुर- शैल- मूर्ध्नि।
कल्याण- मीप्सु- रह- मक्षत- तोय- पुष्पैः,
सम्भावयामि पुर एव तदीय बिम्बम्॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह पाण्डुक शिला-पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। जगतः सर्वशान्तिं करोतु।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पल्लवों से सुशोभित मुखवाले स्वस्तिक सहित चार सुन्दर कलश सिंहासन के चारों कोनों पर स्थापित करें।)

सत्पल्ल-वार्चित-मुखान् कलधौत-रौप्य-ताम्रार-कूट-घटितान् पयसा सुपूर्णान्।
संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्, संस्थापयामि कलशाज्जिन-वेदिकांते॥8॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये पूर्ण- कलशोद्धरणं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर इन्द्रगण अभिषेक करें।)

दूरावनम्र सुरनाथ किरीट कोटी-संलग्न-रत्न-किरणच्छवि-धूस-राध्रिम्।
प्रस्वेद-ताप-मल मुक्तमपि प्रकृष्टै्-भक्त्या जलै-र्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि- वर्धमानपर्यन्तं- चतुर्विंशति- तीर्थंकर- परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे..... देशे... प्रान्ते.... नाम्नि नगरे श्री 1008 ... जिन चैत्यालयमध्ये वीर निर्वाण सं. ... मासोत्तममासे.... पक्षे... तिथौ.. वासरे.. पौर्वाह्निक / अपराहन्कि समये मुन्यार्यिका- श्रावक-श्राविकानां सकल- कर्म- क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः।

हमने संसार सरोवर में, अब तक प्रभु गोते खाए हैं।
अब कर्म मैल के धोने को, जलधारा करने आए हैं॥

(चारों कलशों से अभिषेक करें।)

इष्टै- र्मनोरथ- शतैरिव भव्य- पुंसां, पूर्णैः सुवर्ण- कलशै- र्निखिला- वसानैः।
संसार- सागर- विलंघन- हेतु- सेतु- माप्लावये त्रिभुवनैक- पतिं जिनेन्द्रम्॥10॥

अभिषेक मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्ष्वीं क्ष्वीं इवीं इवीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा। (यह पढ़कर अभिषेक करें।)

द्रव्यै- रनल्प- घनसार- चतुः समाद्यै- रामोद- वासित- समस्त- दिगन्तरालैः।
मिश्री-कृतेन पयसा जिन-पुङ्गवानां, त्रैलोक्य पावनमहं स्नपनं करोमि॥11॥

उदक चंदन ....महंयजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते अभिषेक अनन्तेर अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लघु शान्ति धारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थङ्कराय द्वादशगणपरिवेष्टिकाय, शुक्ल ध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयं भुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनन्त संसार चक्रपरिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त ज्ञानाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशङ्कराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणामंडल मण्डिताय, ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविका प्रमुख चतुस्संघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय, **अपवायं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **मृत्युं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **अतिकामं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **रतिकामं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **क्रोधं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **अग्निभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वशत्रुं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वोपसर्गं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वविघ्नं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वराजभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वचौरभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वदुष्टभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वमृगभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वात्मचक्रभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वपरमंत्र** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वशूल रोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वक्षय रोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वकुष्ठ रोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वक्रूर रोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वनरमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वगजमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वाश्वमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वगोमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वमहिषमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वधान्यमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्ववृक्षमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वगुल्ममारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वपत्रमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वपुष्पमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वफलमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वराष्ट्र मारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व देशमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व विषमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्ववेताल शाकिनी भयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्ववेदनीयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वमोहनीयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वकर्माष्टकं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद।

ॐ सुदर्शन-महाराज-मम-चक्र विक्रम-तेजो-बल शौर्य-वीर्य शान्तिं कुरु-कुरु। सर्व जनानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व भव्यानंदनं कुरु-कुरु। सर्व

गोकुलानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मटंब पत्तन द्रोणमुख संवाहनन्दनं कुरु-कुरु। सर्व लोकानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व देशानंदनं कुरु-कुरु। सर्व यजमानन्दनं कुरु-कुरु। **सर्व दुःख हन-हन, दह-दह, पच-पच, कुट-कुट, शीघ्रं-शीघ्रं।**

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि-व्यसन-वर्जितं।
अभयं क्षेम-मारोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते।।

श्री शांति-मस्तु! (नाम....) कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि- वर्द्धमान-पुष्पदंत-शीतल-मुनिसुव्रतस्त-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-इत्येभ्यो नमः।

इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गंधोदक धारा-वर्षणम्।

शांति मंत्र- ॐ नमोर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छुद्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय (.....) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्व देशस्य सर्व राष्ट्रस्य सर्व संघस्य तथैव सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

शांतिः शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांति निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।

**संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।।
अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु शांति धारा देते हैं।।
जल गंधाक्षत पुष्प चरु शुभ दीप धूप फल अर्घ्य बनाय।
प्रतिमोपरि शांतीधारा दे, विशद भाव से दिया चढ़ाय।।**

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां अनन्तरे (पश्चात्) अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिषेक समय की आरती

(तर्ज : आनन्द अपार है...)

जिनवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
जिनबम्बों की आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है ।।

(1) दीप जलाकर आरति लाए, जिनवर तुमरे द्वार जी।
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी।।

(2) मिथ्या मोह कषायों के वश, भव सागर भटकाए हैं।
होकर के असहाय प्रभु जी, द्वार आपके आए हैं।।

(3) शांती पाने श्री जिनवर का, हमने न्हवन कराया जी।
तारण तरण जानकर तुमको, आज शरण में आया जी।।

(4) हम भी आज शरण में आकर, भक्ती से गुण गाते हैं।
भव्य जीव जो गुण गाते वह, अजर अमर पद पाते हैं।।

(5) नैया पार लगा दो भगवन्, तव चरणों सिर नाते हैं।
'विशद' मोक्ष पद पाने हेतू, सादर शीश झुकाते हैं।।

जिनवर का...!

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय पाठ

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ॥
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान्॥
दुःखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान॥
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज॥
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश॥
निर्मल भावों से प्रभु, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश॥
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार॥
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश॥
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार॥
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभु ! करते स्वयं समान॥
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव।
जब तक मम जीवन रहें, ध्याऊँ तुम्हें सदैव॥

परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल॥
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ति धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते विशद प्रणाम॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान॥1॥
मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध॥2॥
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय॥3॥
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म॥4॥
मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव॥5॥
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धि सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार॥6॥
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान॥7॥

इत्याशीर्वाद :

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥1॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते॥1॥

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥2॥

अपराजित-मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलम् मतः॥3॥

एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं॥4॥

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं॥5॥

कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं॥6॥

विघ्नौघा: प्रलयम् यान्ति शाकिनी-भूतपन्नगा:।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे॥7॥

(यहां पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

(यदि अवकाश हो तो यहां पर सहस्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिये नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ चढ़ावें।)

पंचकल्याणक अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाम यजामहे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्वार्थसूत्रदशाध्याय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

स्वस्ति मंगल

श्री मज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायक मनंत चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसङ्ग-सुदृशां-सुकृतैकहेतु-जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥
स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुङ्गवाय, स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जितदृङ् मयाय, स्वस्तिप्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय॥
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधाप्लवाय; स्वस्ति स्वभाव-परभावविभासकाय;
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय॥
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं; भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्; भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल-बोधवह्नौ; पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥
ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री वृषभो नः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अरहनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वर्धमानः।

(पुष्पांजलि क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥1॥

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये।)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥2॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादना-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥3॥

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥4॥

जङ्घावलि-श्रेणि -फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥5॥

अणिम्नि दक्षाःकुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥6॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतिघातगुण प्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥7॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥8॥

आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्लमल्लौषधीशाः,स्वस्तिक्रियासुपरमर्षयो नः॥9॥

क्षीरं स्रवन्तोऽत्रघृतं स्रवन्तो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीणसंवास महानसाश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥10॥

(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन् ! ।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् !, हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन् !।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।
शांतये शांति धारा ।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।
दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य–**ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

दोहा- मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा- नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री विशद तत्त्वार्थ सूत्र विधान

मंगलाचरण

मंगलं भगवान अर्हन्, मंगलं सिद्ध परमेष्ठिनः।
मंगलं आचार्योपाध्याय, मंगलं सर्व साधवः ॥1॥
मंगलं अर्हन्त देवाय, मंगलं जैन आगमः।
मंगलं तत्त्वार्थ सूत्राय, मंगलं श्री उमास्वामिनः ॥2॥
मंगलं निर्ग्रन्थ रूपाय, मंगलं ज्ञान धारिणाम्।
मंगलं श्री वीतरागाय, मंगलं श्री जिन गुणागरम्॥3॥
मंगलं गणधर देवाय, मंगलं निर्वाण क्षेत्रकम्।
मंगलं ऋद्धिधर साधु, मंगलं रत्नत्रयं ॥4॥

(छन्द चामर)

श्री जिनेन्द्र वीतराग ज्ञान रूप मंगलम्।
सर्व कर्म से विमुक्त सिद्ध अनन्त मंगलम्॥5॥
पंच आचार प्राप्त जैनाचार्य मंगलम्।
द्वादशांग ज्ञान रूप उपाध्याय मंगलम्॥6॥
ज्ञान ध्यान तपोरत सर्व साधु मंगलम्।
सर्व जीव सौख्यकार जैन धर्म मंगलम्॥7॥
ॐ कार रूप शुभ जैन आगम मंगलम्।
वीतरागता स्वरूप जिन चैत्य मंगलम्॥8॥
सर्व लोक में प्रसिद्ध चैत्यालय मंगलम्।
दर्श ज्ञान चारितमय मोक्ष मार्ग मंगलम्॥9॥
सप्त तत्त्व निरूपकाय, मोक्ष शास्त्र मंगलम्।
ग्रन्थराज के रचयिता, उमा स्वामी मंगलम्॥10॥
आदि सिन्धु महावीर कीर्तिजी मंगलं।
विमल सिंधु भरत सिन्धु, विराग सागर मंगलं॥11॥

तत्त्वार्थ पूजा पीठिका

चार घातिया कर्म नाशकर, बनते हैं साधु अरहन्त।
अष्ट गुणों को पाने वाले, बनते सिद्ध अनन्तानन्त।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु को, मेरा है शत् शत् वंदन।
मोक्षमार्ग के नेता स्वामी, करूँ आपका अभिनन्दन।।
उमास्वामी आचार्य प्रवर की, कृति श्रेष्ठ है सर्वमहान्।
मोक्षशास्त्र तत्त्वार्थ सूत्र शुभ, ग्रन्थ लोक में रहा प्रधान।।
सप्त तत्त्व का वर्णन जिसमें, किया गया आगम अनुसार।
भव्य श्रावकों को यह रचना, कल्याणी बन गई हितकार।।
मुनि प्रवर जी नगर में आए, एक बार लेने आहार।
दर्शन ज्ञान चारित्र मोक्ष का, मार्ग लिखा श्रावक के द्वार।।
आगे सम्यक् शब्द लगाकर, मुनिवर वन में किया विहार।
प्रमुदित हुआ देखकर श्रावक, सूत्र बना तब मंगलकार।।
वन में जाकर खोजा मुनि को, कीन्हा बारम्बार प्रणाम।
भक्ति करके किया निवेदन, मुनि के चरणों में अविराम।।
रचना करके ग्रन्थराज की, कर दो इस जग का कल्याण।
जिसको पाकर मोक्षमार्ग पर, भव्य जीव कर सकें प्रयाण।।
दयासिन्धु ने दयावान हो, भव्यों पर कीन्हा उपकार।
दश अध्यायों में रचना कर, ग्रन्थ बनाया शुभ मनहार।।
प्रथम चार अध्यायों में है, जीव तत्त्व का शुभ वर्णन।
अजीव द्रव्य का पंचम में शुभ, प्रभु कीन्हा है दिग्दर्शन।।
षष्ठम में पापास्रव का अरु, सप्तम में पुण्याश्रव जान।
बन्ध तत्त्व का अष्टम में ही, किया गया सारा व्याख्यान।।
संवर और निर्जरा का शुभ, नवम खण्ड में है आख्यान।
दशम खण्ड में मोक्ष तत्त्व का, किया गया सारा व्याख्यान।।
मोक्षमार्ग को पाकर प्राणी, हो जाते हैं सर्व महान्।
इस संसार वास को तजकर, सिद्ध शिला पर करें प्रयाण।।

रत्नत्रय को पाकर मैं भी, मोक्षमार्ग पर करूँ गमन।
हो आशीष प्राप्त जिन गुरु का, चरणों में शत् शत् वन्दन॥
मोक्षमार्ग का दिग्दर्शक यह, मोक्षशास्त्र जग में पावन।
भवि जीवों को हितकारी शुभ, शांति प्रदायक मन भावन॥

चौपाई- भक्त कई दर्शन को आए, अपने मन की बात सुनाए।
मोक्षशास्त्र यह मंगलकारी, जिसको पढ़ती दुनिया सारी॥
हो विधान की रचना प्यारी, भवि जीवों को संकटहारी।
करने लगे प्रार्थना भारी, लिखने की फिर की तैयारी॥
विघ्न बीच में कई इक आए, गुरु आशीष से रह न पाए।
जिन भक्ति का मिला सहारा, सफल हुआ फिर कार्य हमारा॥

दोहा- मोक्षशास्त्र का यह लिखा, पावन परम विधान।
सूत्रों की है काव्यमय, रचना श्रेष्ठ महान॥
संग्रह पूजन से हुआ, यह प्रारम्भ विधान।
श्रेष्ठ मंगलाचरण से, कीन्हा है व्याख्यान॥
पूजन से अध्याय का, किया गया प्रारम्भ।
फिर सूत्रों का किया है, अनुक्रम से आरम्भ॥
मंत्र जाप के साथ में, अन्तिम है जयमाल।
लघुता अर्पित कर रहे, करके भक्ति त्रिकाल॥

(वीर छन्द)

मैं तत्त्वार्थ सूत्र के लेखक, उमास्वामी को करूँ नमन।
उमा स्वाति भी कहलाते जो, उनको है शत्-शत् वन्दन॥
गिद्धपिच्छ भी कहे गये हैं, उनके चरणों करूँ प्रणाम।
विशद ज्ञान अरु सौख्य अतीन्द्रिय, हम भी पा जाए अविराम॥

दोहा- कृपा होय जिनशास्त्र की, गुरु का हो आशीष।
कार्य सफल हो शीघ्र ही, कहते जैन ऋषीश॥
उमा स्वामि कृत सूत्र का, लिखते विशद विधान।
विशद ज्ञान को प्राप्त कर, पावें हम निर्वाण॥

समुच्चय पूजन

स्थापना

ॐकारमय श्री जिनेन्द्र की, वाणी है जग में पावन।
परम्परा से आचार्यों ने, किया तत्त्व का दिग्दर्शन।।
मोक्ष शास्त्र तत्त्वार्थ सूत्र में, मोक्ष मार्ग का है वर्णन।
उमास्वामी आचार्यवर्य ने, सप्त तत्त्व का किया कथन।।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने हेतु, मोक्ष शास्त्र का आह्वानन्।
विशद भाव से अभिनन्दन कर, करते हैं शत् शत् वंदन।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थसूत्र समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थसूत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थसूत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

अगणित सागर के जल से भी, तृषा शांत न हो पाई।
अनुपम शीतल जल समता का, उसकी याद नहीं आई।।
हृदय कलश में श्रद्धा का जल, मैं भरकर के लाया हूँ।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आया हूँ।।1।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सागर में लहरों की भाँति, ज्वार कषायों का आया।
पश्चात्ताप किया हमने पर, मन से छूट नहीं पाया।।
क्रोधादी के नाश हेतु, यह शीतल चंदन लाया हूँ।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आया हूँ।।2।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अनंत हैं गुण मेरे यह, अब तक जान नहीं पाया।
इसलिए कर्म के चक्कर से, चारो गतियों में भटकाया।।
मैं अक्षय पद पाने हेतू, यह अक्षय अक्षत लाया हूँ।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आया हूँ।।3।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थायऽक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की गंध मनोहर है, उसमें सदियों से भरमाया।
भँवरे की भाँति भ्रमण किया, नहिं आतम ज्ञान जगा पाया।।
मैं काम वासना नाश हेतु, यह पुष्प सुगन्धित लाया हूँ।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आया हूँ।।4।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

न अन्त है इच्छा सागर का, इच्छाएँ पूर्ण न हो पातीं।
जितनी इच्छाएँ पूर्ण करूँ, उतनी-उतनी बढ़ती जातीं।।
चेतन की भूख मिटे स्वामी, नैवेद्य चरण में लाया हूँ।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आया हूँ।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करता है नाश दीप तम का, पर अन्तर तम न मिट पाया।
सदियों से तीनों लोकों में, अज्ञान तिमिर में भटकाया।।
अंतर का तिमिर मिटाने को, यह दीप जलाकर लाया हूँ।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आया हूँ।।6।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्यों तप अग्नि में रहता है, त्यों चेतन में सद्ज्ञान रहे।
कर्मों के घात से लोहे की, अग्नि सम चेतन मार सहे ।।
मैं कर्मेन्धन के दहन हेतु, यह धूप सुगन्धित लाया हूँ।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आया हूँ।।7।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थायऽष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की आँधी तीव्र चली, पुरुषार्थ सफल न हो पाया।
कर्त्तव्य हुआ निष्फल मेरा, यह रही कर्म की ही माया।।
मैं ज्ञान ध्यान का फल पाने, यह श्रीफल लेकर आया हूँ।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आया हूँ।।8।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पथ मिला हमें बाधाओं का, हम लक्ष्य प्राप्त न कर पाए।
जग की झंझट में उलझ गये, भव सागर में गोते खाए।।
अब पद अनर्घ पाने हेतू, मैं अर्घ्य बनाकर लाया हूँ।
अब मोक्ष शास्त्र की पूजा करने, भाव बनाकर आया हूँ।।9।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **मोक्ष शास्त्र में मोक्ष का, वर्णन रहा विशाल।**
पूजा करके भाव से, गाते हम जयमाल।।

(छन्द ताटंक)

तत्त्वार्थ सूत्र में तत्त्वों का, विस्तार पूर्वक कथन किया।
आचार्य उमास्वामी गुरुवर ने, जिनश्रुत का शुभ मथन किया।।

महावीर प्रभु की वाणी को, गौतम गणधर ने झेला था।
उस समय सभा में जिनवर की, भवि जीवों का शुभ मेला था।।
सौधर्म इन्द्र धरणेन्द्र तथा, नर इन्द्र पशु भी आये थे।
तब ऋषि मुनि गणधर चरणों, भक्ति से शीश झुकाए थे।।
जिनवर की दिव्य ध्वनि खिरती, शुभ अर्धमागधी भाषा में।
मागध जाति के देव सभी, समझाते सब परिभाषा में।।
महावीर की दिव्य देशना, तीस वर्ष तक चली महान्।
इन्द्रभूति गौतम ने गणधर, बनकर जिसका किया बखान।।
कार्तिक कृष्ण अमावस्या को, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
इन्द्रभूति गौतम स्वामी ने, पाया सायं केवलज्ञान।।
दिव्य देशना भवि जीवों को, बारह वर्ष सुनाई थी।
अष्ट कर्म का नाश किए फिर, प्रभु ने मुक्ति पाई थी।।
श्री सुधर्माचार्य गुरू ने, पाया केवलज्ञान महान्।
बारह वर्ष जगत् जीवों को, कीन्हा प्रभु ने ज्ञान प्रदान।।
उनके मोक्ष प्राप्त करते ही, जम्बू स्वामी पाए ज्ञान।
अड़तिस वर्ष किया स्वामी ने, दिव्य देशना का व्याख्यान।।
श्रुत केवली पंच हुए फिर, पाए द्रव्य भावश्रुत ज्ञान।
सौ वर्षों तक किए देशना, देकर कीन्हा जग कल्याण।।
परम्परा से दिव्य देशना, आचार्यों ने समझाई।
अनुक्रम से वह दिव्य देशना, उमास्वामी ने भी पाई।।

द्वयाक श्रेष्ठी के निमित्त से, ग्रन्थराज यह लिखा गया।
उमास्वामी आचार्यवर्य से, बना एक इतिहास नया।।
दशाध्याय में मोक्षमार्ग का, विशद भाव से किया कथन।
जीवादिक सातों तत्त्वों का, जिसमें है सुन्दर वर्णन।।
प्रथम चार अध्यायों में है, जीव तत्त्व का श्रेष्ठ कथन।
पंचम में कीन्हा अजीव का, भेद सहित पूरा वर्णन।।
षष्टम सप्तम में आश्रव का, कीन्हा है गुरु ने व्याख्यान।
बन्ध तत्त्व का अष्टम में शुभ, किया गया प्यारा गुणगान।।
संवर और निर्जरा का शुभ नवम् खण्ड में किया कथन।
दशम खण्ड में मोक्ष तत्त्व का, कीन्हा है संक्षेप कथन।।
चारों ही अनुयोग समाहित, करके रचना हुई विशाल।
ऐसे गुरुवर और ग्रन्थ को, वंदन करते हैं नत भाल।।
मोक्ष शास्त्र तत्त्वार्थ सूत्र में, तत्त्वों का है सरल कथन।
उसको पाने हेतु करते, विशद भाव से शत् वंदन।।

दोहा- उमास्वामि कृत ग्रन्थ यह, मोक्ष शास्त्र है नाम।
जयमाला गाकर यहाँ, करते विशद प्रमाण।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मोक्ष शास्त्र में दिया है, जैनागम का सार।
मोक्षमार्ग को प्राप्त कर, पाऊँ भव से पार।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

शास्त्र के पूर्व का मंगलाचरण

मोक्ष मार्ग के नेता करते, कर्मरूप पर्वत भेदन।
लोकवर्ति तत्त्वों के ज्ञाता, के गुण पाने को वंदन।।

लेश्याएँ छह द्रव्य त्रिकालिक, नव पदार्थ छह जीव निकाय।
अस्तिकाय व्रत ज्ञान चरित गति, पञ्च समिति कहे जिनाय।।

तीन लोक में श्रेष्ठ रहे जो, अर्हत् रहे मोक्ष के मूल।
मतिमान श्रद्धा स्पर्शी, सद्दर्शन के हो अनुकूल।।

चउ आराधन के शुभ फल से, बनते जग में सिद्ध प्रसिद्ध।
अर्हन्तों का वंदन करके, करते हैं हम उनको सिद्ध।।

उद्योतन उद्यवन निर्वहन, साधन तथा निस्तरण रूप।
दर्शन ज्ञान चरित तप चारों, आराधन के कहे स्वरूप।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

विशद भाव से इच्छा होती, चरणों में झुक जाने की।
उपकारों के बदले भक्ति, कर कर्त्तव्य निभाने की।
भव्य जीव खुशियाँ पाते हैं, जिनकी कृपा फुहारों से।
ऐसे गुरुवर उमास्वामि को, अपने हृदय बसाने की।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्र रचयिता प.पू. 108 उमास्वामी आचार्य चरणाभ्याम् अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम अध्याय

स्थापना

मोक्ष मार्ग का मूल रहा है, सम्यक् दर्शन सम्यक् ज्ञान।
प्रथमाध्याय में जीव तत्त्व का, किया गया पावन व्याख्यान।।
मिथ्यादर्शन हेय बताया, उपादेय सम्यक् दर्शन।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थसूत्र का, करते हैं हम आह्वानन।।
प्रथमाध्याय में किया गया जो, द्रव्य भाव श्रुत का वर्णन।
उस श्रुत ज्ञान की प्राप्ति को हम, करते हैं शत् शत् वंदन।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित प्रथम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रदर्शक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित प्रथम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सत्-दर्शन-ज्ञान स्वरूप प्ररूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित प्रथम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम मोक्ष शास्त्र के सागर से, पावन जल भर कर लाए हैं।
जन्मादि रोग के क्षय हेतू, हम नीर चढ़ाने आए हैं।।
अध्याय प्रथम में सद्दर्शन, सद्ज्ञान चरण का है वर्णन।
तत्त्वार्थ सूत्र को करते हैं, हम शत् वंदन शत् शत् वंदन।।1।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित प्रथम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्वार्थ सूत्र के उपवन से, शुभ चंदन सरस ले आए हैं।
संसार ताप के नाश हेतु, यह चंदन घिसकर लाए हैं।।
अध्याय प्रथम में सद्दर्शन, सद्ज्ञान चरण का है वर्णन।
तत्त्वार्थ सूत्र को करते हैं, हम शत् वंदन शत् शत् वंदन।।2।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित प्रथम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षयपुर के वासी हैं, वह प्राप्त नहीं कर पाए हैं।
अक्षय अखण्ड पद पाने को, यह अक्षय अक्षत लाए हैं॥
अध्याय प्रथम में सद्दर्शन, सद्ज्ञान चरण का है वर्णन।
तत्त्वार्थ सूत्र को करते हैं, हम शत् वंदन शत् शत् वंदन॥3॥

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित प्रथम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम सप्त तत्त्व की बगिया से, यह पुष्प चुनिन्दा लाए हैं।
हम काम अग्नि के नाश हेतु, शुभ पुष्प चढ़ाने आए हैं॥
अध्याय प्रथम में सद्दर्शन, सद्ज्ञान चरण का है वर्णन।
तत्त्वार्थ सूत्र को करते हैं, हम शत् वंदन शत् शत् वंदन॥4॥

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित प्रथम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने यह षट्रस द्रव्यों के, शुभ व्यंजन सरस बनाए हैं।
अब क्षुधारोग के नाश हेतु, नैवेद्य मनोहर लाए हैं॥
अध्याय प्रथम में सद्दर्शन, सद्ज्ञान चरण का है वर्णन।
तत्त्वार्थ सूत्र को करते हैं, हम शत् वंदन शत् शत् वंदन॥5॥

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित प्रथम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह विशद ज्ञान का दीपक शुभ, हम आज जलाने आए हैं।
हम मोह अंध के नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं॥
अध्याय प्रथम में सद्दर्शन, सद्ज्ञान चरण का है वर्णन।
तत्त्वार्थ सूत्र को करते हैं, हम शत् वंदन शत् शत् वंदन॥6॥

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित प्रथम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम दश धर्मों की परम सुगन्धित, मनहर धूप बनाए हैं।
शुभ द्वादश तप की अग्नी में, यह धूप जलाने आए हैं।।
अध्याय प्रथम में सद्दर्शन, सद्ज्ञानाचरण का है वर्णन।
तत्त्वार्थ सूत्र को करते हैं, हम शत् वंदन शत् शत् वंदन।।7।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित प्रथम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम रत्नत्रय रूपी तरुवर के, सरस-सरस फल लाए हैं।
शुभ मोक्ष महाफल पाने को, फल लेकर के हम आए हैं।।
अध्याय प्रथम में सद्दर्शन, सद्ज्ञान चरण का है वर्णन।
तत्त्वार्थ सूत्र को करते हैं, हम शत् वंदन शत् शत् वंदन।।8।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित प्रथम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अष्ट गुणों को पाने हेतु, पावन यह द्रव्य सजाए हैं।
हम अष्टम वसुधा पाने को, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।।
अध्याय प्रथम में सद्दर्शन, सद्ज्ञान चरण का है वर्णन।
तत्त्वार्थ सूत्र को करते हैं, हम शत् वंदन शत् शत् वंदन।।9।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित प्रथम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम वलयः

दोहा- रहा प्रथम अध्याय में, जीव तत्त्व का ज्ञान।
तत्त्वों का श्रद्धान कर, करना निज कल्याण।।

(अथ प्रथमवलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सूत्र प्रारम्भ

मोक्षमार्ग की व्याख्या

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥1॥

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण की, रही एकता जहाँ महान्।
मोक्षमार्ग कहलाता है वह, कहते हैं यह श्री भगवान्॥
रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्ररूपक रत्नत्रय धर्माय श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन का लक्षण

तत्त्वार्थ-श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्॥2॥

रहे प्रयोजन भूत तत्त्व जो, उनके प्रति हो सद् श्रद्धान।
सम्यक्दर्शन कहलाता वह, कहते हैं यह श्री भगवान॥
रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं शिवसोपान स्वरूप सम्यक्दर्शनाय श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन के उत्पत्ति अपेक्षा भेद

तन्निसर्गादधि-गमाद्वा॥3॥

पर उपदेश बिना सद्दर्शन, हो निसर्ग कहलाता है।
पर उपदेश पूर्वक हो वह, अधिगमज नाम को पाता है॥
रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं द्विभेदात्मक सम्यक्दर्शनाय श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्वों के नाम

जीवाजीवास्रव-बन्ध-संवर-निर्जरा-मोक्षास्तत्त्वम् ।।4।।

जीवाजीव आश्रव संवर, बन्ध निर्जरा मोक्ष विशेष।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा जानो, ऐसा कहते हैं तीर्थेश।।
रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं जीवादि सप्त तत्त्व विवेचक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शनादि के शब्दों के अर्थ समझने की रीति

नाम-स्थापना-द्रव्यभावतस्तन्न्यासः ।।5।।

नामस्थापना द्रव्य भाव, निक्षेप कहे यह चार प्रकार।
लोक व्यवहार चलाने हेतु, होता है इनका व्यापार।।
गुण जाति से रहित नाम है, काष्ठ पुस्त में स्थापन।
द्रव्य भूत भावी को जाने, भाव करे वर्तमान कथन।।
रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं नामादि निक्षेप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शनादि जानने के उपाय

प्रमाण-नयैरधिगमः ।।6।।

नय प्रमाण दो सद्दर्शन के, ज्ञान हेतु पाए आधार।
सम्यक् ज्ञान प्रमाणिक होता, एक देश नय का व्यवहार।।
रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं प्रमाण नय निरूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शनादि जानने के आमुख (अप्रधान) उपाय

निर्देशस्वामित्व-साधनाधिकरण-स्थिति-विधानतः ॥7॥

है निर्देश कथन वस्तु का, स्वामीपन स्वामित्व रहा।
उत्पत्ति का कारण साधन, अधिकरण आधार कहा॥
काल हेतु स्थिति कहते हैं, वस्तु भेद कहलाय विधान।
वस्तु का निर्देश आदि से, हो जाता है समुचित ज्ञान॥
रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं निर्देशादि तत्त्व विज्ञापक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

और भी अन्य अमुख्य उपाय

सत्संख्या-क्षेत्र-स्पर्शन-कालान्तर-भावाल्पबहुत्वैश्च ॥8॥

सत् का होय विनाश कभी न, संख्या गणना कही जिनेश।
वस्तु का स्थान क्षेत्र है, तिय कालिक स्पर्श विशेष॥
विरह काल को अन्तर जानो, काल भेद सामान्य कहा।
उपशम आदि भाव कहे हैं, अल्प-बहुत्व विशेष रहा॥
रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं सत्संख्यादि स्वरूप प्रकाशक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब सम्यक्ज्ञान के भेद कहते है

मति-श्रुतावधि-मनः-पर्ययकेवलानि ज्ञानम्॥9॥

इन्द्रिय मन से मतिज्ञान हो, मतिज्ञान से हो श्रुतज्ञान।
मर्यादा युत रूपी द्रव्य की, अवधिज्ञान करता पहिचान॥
मनःपर्यय से पर के मन की, चेष्टा का हो जावे भान।
केवल ज्ञान में सर्व द्रव्य अरु, पर्यायों का हो सद्ज्ञान॥
रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मतिज्ञानादि पंचभेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कौन से ज्ञान के प्रमाण हैं

तत्प्रमाणे॥10॥

सम्यक् ज्ञान के भेद पाँच हैं, सभी प्रमाणिक कहे जिनेश।
स्वपर प्रकाशी ज्ञान कहा है, ऐसा कहते हैं तीर्थेश॥
रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं स्व-पर प्रकाशक ज्ञान प्रमाण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परोक्ष प्रमाण के भेद

आद्ये परोक्षम्॥11॥

हैं परोक्ष दो ज्ञान आदि के, मतिज्ञान श्रुतज्ञान विशेष।
सम्यक् दृष्टि को होते यह, ऐसा कहते हैं तीर्थेश॥
रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं स्व-पर प्रकाशक परोक्ष ज्ञान प्रमाण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद

प्रत्यक्षमन्यत्॥12॥

अवधि ज्ञान मनःपर्यय दोनों, एक देश प्रत्यक्ष कहे।
केवलज्ञान सकल प्रत्यक्षी, तीनों यह स्वाधीन रहे॥
रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं स्व-पर प्रकाशक प्रत्यक्ष ज्ञान प्रमाण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मतिज्ञान के दूसरे नाम

मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम्॥13॥

मति स्मृति संज्ञा चिंता अरु, अभिनिबोध यह नाम अनेक।
मतिज्ञान के कहे जिनेश्वर, चिंतन मनन मति है नेक॥
स्मरण को स्मृति कहते हैं, संज्ञा प्रत्यभिज्ञान कहा।
चिंता व्याप्ति ज्ञान कहाए, अभिनिबोध अनुमान रहा॥
रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मतिज्ञानस्य अपर नाम प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त

तदिन्द्रियानिन्द्रिय-निमित्तम्॥14॥

इन्द्रिय और अनिन्द्रिय के शुभ, हो निमित्त जिसमें वह ज्ञान।
मतिज्ञान कहलाता है वह, ऐसा कहते हैं भगवान॥

रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं मतिज्ञानोत्पत्ति निमित्त प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मतिज्ञान के क्रम भेद

अवग्रहेहावाय-धारणाः ।।15।।

अवग्रह ईहावाय धारणा, मतिज्ञान के भेद रहे।
अनिर्णीत जो ज्ञान रहा वह, अवग्रह ज्ञान जिनेश कहे।।
विशेष ज्ञान की इच्छा ईहा, अवाय ज्ञान सद्रूप कहा।
कालान्तर में नहीं भूलना, यही धारणा ज्ञान रहा।।
रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं अवग्रहादि मतिज्ञान प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ

बहुबहुविध-क्षिप्रा निःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणाम् ।।16।।

बहु-इक बहु विधि एक विधि, क्षिप्र अक्षिप्र अरु उक्त अनुक्त।
निःश्रित और अनिःश्रित ध्रुव अरु, अध्रुव द्वादश भेद संयुक्त।।
रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं मतिज्ञानस्य बह्वादि विषय भूत पदार्थ प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपरोक्त अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ भेद किसके हैं

अर्थस्य ॥17॥

अवग्रह ईहा अवाय धारणा, मन इन्द्रिय के साथ रहे।
व्यक्त पदार्थों के गुणने से, दो सौ अट्ठासी भेद कहे॥
रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं व्यक्त अवग्रहादि स्वरूप मतिज्ञान प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवग्रह ज्ञान में विशेषता

व्यञ्जनस्यावग्रहः ॥18॥

अर्थावग्रह व्यक्त पदार्थों, का होता यह कहा जिनेश।
हो अव्यक्त का व्यजनावग्रह, कहते हैं यह सब तीर्थेश॥
रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मतिज्ञानस्य व्यंजनावग्रह रूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजनावग्रह किस से नहीं होता

न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ॥19॥

व्यंजनावग्रह में चक्षु अरु, मन का हो जाता विच्छेद।
चउ इन्द्रिय द्वादश पदार्थ के, गुणन से हों अड़तालीस भेद॥
इस प्रकार सब भेद मिलाकर, तीन सौ छत्तिस कहे जिनेश।
इनमें जो श्रद्धा करता है, वह सद्दृष्टि रहा विशेष॥

रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं अव्यक्त व्यंजनावग्रह स्वरूप मतिज्ञान प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञान का वर्णन उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेक-द्वादश-भेदम्।।20।।

मतिज्ञान पूर्वक जो होता, वह कहलाता है श्रुतज्ञान।
अंग बाह्य के भेद अनेकों, अंग प्रविष्टि के द्वादश मान।।
रत्नत्रय को पाकर मुक्ती, हम को मिल जाए अविराम।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, करते बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं मतिज्ञानाधारित श्रुत ज्ञानस्य भेद स्वरूप प्रदर्शक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधि ज्ञान का वर्णन

भव प्रत्ययोऽवधिर्देव नारकाणाम्।।21।।

भव कारण जिसमें भव प्रत्यय, अवधि ज्ञान यह कहे जिनेश।
देव नारकी इसको पाते, ऐसा कहते हैं तीर्थेश।।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण शुभ, धर्म कहा है मंगलकार।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, वंदन मेरा बारम्बार।।

ॐ ह्रीं भव प्रत्ययावधि ज्ञानरूप बोधक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षयोपशम निमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा स्वामी

क्षयोपशमनिमित्तः षड् विकल्पः शेषाणाम्।।22।।

विशद क्षयोपशम के निमित्त से, अवधिज्ञान होता छह रूप।
पुरुष वचन वत् अन अनुगामी, अनुगामी छाया स्वरूप।।

चन्द्रकला वत् वर्द्धमान अरु, हीयमान घट बढ़ता ज्ञान।
जल तरंग वत् अनवस्थित है, और अवस्थित लिंग समान।।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण शुभ, धर्म कहा है मंगलकार।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, वंदन मेरा बारम्बार।।

ॐ ह्रीं षट् विकल्पात्मक क्षयोपशम निमित्तक अवधिज्ञानस्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनःपर्यय ज्ञान के भेद

ऋजु-विपुलमती मनःपर्ययः ।।23।।

पर के मनकी बात जानने, वाला है मनःपर्यय ज्ञान।
ऋजुमति अरु विपुलमति दो, भेद कहे हैं श्री भगवान।।
संख्यातीत भवों का ज्ञाता, विपुलमति कहलाता है।
सात आठ भव की बातों को, जान ऋजुमति पाता है।।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण शुभ, धर्म कहा है मंगलकार।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, वंदन मेरा बारम्बार।।

ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानस्य द्वौ भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋजुमति और विपुलमति में अन्तर

विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ।।24।।

ऋजुमति होकर नश जाए, विपुलमति न होय विनाश।
अधिक विशुद्धी वाला है अरु, पावे केवलज्ञान प्रकाश।।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण शुभ, धर्म कहा है मंगलकार।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, वंदन मेरा बारम्बार।।

ॐ ह्रीं मनःपर्यय विशुद्धि भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान में विशेषता

विशुद्धि-क्षेत्र-स्वामि-विषयेभ्योऽवधि-मनःपर्यययोः ॥25॥

भेद विशुद्धी क्षेत्र स्वामि अरु, विषयों में यह रहे विशेष।
मनःपर्यय हो ऋद्धिधर को, अवधिज्ञान चउ गति में शेष॥
मनःपर्यय हो ढाई द्वीप में, अवधि ज्ञान कई लोक प्रमाण।
महाव्रती पाते मनःपर्यय, अवधिज्ञान अवरति को जान॥
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण शुभ, धर्म कहा है मंगलकार।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, वंदन मेरा बारम्बार॥

ॐ ह्रीं अवधिज्ञान मनःपर्ययज्ञान विशेषता प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मतिश्रुत ज्ञान का विषय

मति-श्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्व-पर्यायेषु॥26॥

मति श्रुत ज्ञान सभी द्रव्यों की, कुछ पर्यायें ही जाने।
रूपी और अरूपी दोनों, को भी ज्ञान से पहिचाने॥
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण शुभ, धर्म कहा है मंगलकार।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, वंदन मेरा बारम्बार॥

ॐ ह्रीं मतिश्रुत ज्ञान विषय प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञान का विषय

रूपिष्ववधेः॥27॥

अवधि ज्ञान रूपी द्रव्यों को, जाने मर्यादा के साथ।
सब पर्यायों की गणना में, हो जाता है शीघ्र अनाथ॥
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण शुभ, धर्म कहा है मंगलकार।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, वंदन मेरा बारम्बार॥

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानस्य विषय प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनःपर्ययज्ञान का विषय

तदनन्तभागे मनः पर्ययस्य ।।28।।

अवधि ज्ञान से मनःपर्यय का, विषय अनन्तक सूक्ष्म रहा।
ऋजुमति से विपुलमति का, और अधिकतम सूक्ष्म कहा।।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण शुभ, धर्म कहा है मंगलकार।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, वंदन मेरा बारम्बार।।

ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञान विषय प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान का विषय

सर्व-द्रव्य-पर्यायेषु केवलस्य ।।29।।

सर्व द्रव्य सब पर्यायों को, एक साथ ही जान रहा।
केवल ज्ञान त्रैकालिक द्रव को, स्वयं आप पहिचान रहा।।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण शुभ, धर्म कहा है मंगलकार।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, वंदन मेरा बारम्बार।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान स्वरूप विषय प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक जीव को एक साथ कितने ज्ञान हो सकते हैं

एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्ना-चतुर्भ्यः ।।30।।

एक जीव को एक साथ में, चार ज्ञान हो जाते हैं।
केवल ज्ञान एक मतिश्रुत द्वय, साथ अवधि तिये पाते हैं।
मतिश्रुत और मनःपर्यय भी, एक साथ हो जाते हैं।
मतिश्रुत अवधि मनःपर्यय यह, चार अधिकतम पाते हैं।।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण शुभ, धर्म कहा है मंगलकार।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, वंदन मेरा बारम्बार।।

ॐ ह्रीं जीवस्य युगपत् ज्ञान प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मतिश्रुत और अवधिज्ञान में मिथ्यात्व

मति-श्रुतावधयो विपर्ययश्च ॥31॥

मतिश्रुत अवधि विपर्यय भी हैं, मिथ्यादृष्टी पाते हैं।
इस प्रकार से आठ ज्ञान सब, आगम में बतलाते हैं॥
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण शुभ, धर्म कहा है मंगलकार।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, वंदन मेरा बारम्बार॥

ॐ ह्रीं मत्यादि विपर्ययज्ञान प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व का लक्षण

सदसतोरविशेषाद्य-दृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत्॥32॥

सत् अरु असत् के ज्ञानहीन हो, रहते हैं उन्मत्त समान।
इच्छित अर्थ विचारक है जो, वस्तु का वह मिथ्याज्ञान॥
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण शुभ, धर्म कहा है मंगलकार।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, वंदन मेरा बारम्बार॥

ॐ ह्रीं उन्मत्त जीववत् सद्-असत् मिथ्याज्ञान प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब नय का स्वरूप कहते हैं

नैगम-संग्रह-व्यवहारर्जुसूत्र-शब्द-समभिरुढैवंभूता नयाः ॥33॥

नैगम संग्रह व्यवहार ऋजुसूत्र, शब्द समभिरूढ एवंभूत।
प्रथम तीन द्रव्यार्थिक नय हैं, पर्यायार्थिक शेष प्रसूत॥
कहे अर्थ नय प्रथम चार जिन, शेष शब्द नय कहे जिनेश।
ज्ञान आत्मक कहे भाव नय, वचनात्मक हैं द्रव्य विशेष॥
ज्ञाता का अभिप्राय कहा नय, एक देश वस्तु का ज्ञान।
श्रुत ज्ञान के हैं विकल्प नय, ऐसा कहते श्री भगवान॥

संकल्प मात्र ग्राही नैगम नय, संग्रह एकपने का ज्ञान।
विधिपूर्वक भेद कराए, वह व्यवहार कहे भगवान।।
ऋजु सूत्र सरलार्थक ग्राही, समभिरूढ़ है रूढी ग्राह्य।
क्रिया ग्राह्य नय वर्तमान की, एवंभूत अन्य सब बाह्य।।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण शुभ, धर्म कहा है मंगलकार।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, वंदन मेरा बारम्बार।।

ॐ ह्रीं नैगमादि द्रव्य पर्यायरूप नयभेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ

ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र में, प्रथम अध्याय का किया कथन।
सम्यक् दर्शन ज्ञानादि का, जिसमें है उत्तम वर्णन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।
विशद ज्ञान को पाने की हम, विशद भावना भाते हैं।।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण शुभ, धर्म कहा है मंगलकार।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, वंदन मेरा बारम्बार।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक श्री उमास्वामी विरचित प्रथमोऽध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य : **– ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत जीव तत्त्व निरूपक श्री उमास्वामी विरचित प्रथमोऽध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

दोहा– पठन श्रवण कर सूत्र का, पाऊँ सम्यक् ज्ञान।
गाऊँ मैं जयमालिका, दृढ़ होवे श्रद्धान।।

चौपाई

मोक्ष शास्त्र पढ़ते जो कोई, उनकी श्रद्धा सुदृढ़ होई।
सम्यक् ज्ञानी बनते प्राणी, ऐसा कहती है जिनवाणी।
प्रथमाध्याय पठन में आया, मोक्षमार्ग का सार बताया।

सम्यक् दर्शन जो पा जावें, सम्यक् ज्ञानी जीव कहावें।
सप्त तत्त्व पर श्रद्धा धारें, भेद ज्ञान को आप सम्हारें।
नय प्रमाण से वस्तु जाने, ज्यों की त्यों उसको पहिचाने।
निश्चय नय से निश्चय जाने, पर्यायार्थिक से पर्यय माने।
सम्यक् ज्ञान प्रमाणिक गाये, पाँच भेद उसके बतलाए।
मनन मति को कहते भाई, इन्द्रिय मन से जो उपजाई।
तीन सौ छत्तीस भेद बताए, वस्तु का जो ज्ञान कराए।
श्रुत ज्ञान मतिपूर्वक होई, अतः परोक्ष कहलाए सोई।
अंग बाह्य के भेद अनेक, अंग प्रविष्टि के द्वादश भेद।
अवधि ज्ञान देशावधि होय, सर्वावधि परमावधि सोय।
मनःपर्यय ऋजुमति है ज्ञान, विपुलमति द्वितीय पहिचान।
पंचम होता केवल ज्ञान, सर्व जहाँ में रहा महान्।
सभी ज्ञान न होते साथ, ऐसा कहे जगत के नाथ।
एकादि दो चार प्रकार, सम्यक् दर्शन के आधार।
मतिश्रुत अवधि ज्ञान ये तीन, मिथ्यादर्शन के आधीन।
तीनों कहे विपर्यय ज्ञान, जगत भ्रमण के कारण मान।
सद् अरु असद् की नहिं पहिचान, स्वच्छन्दी को मिथ्या ज्ञान।
सप्त नयों का जिसमें ज्ञान, दृढ़ होता जिसमें श्रद्धान।
वन्दन श्रुत का करूँ त्रिकाल, हाथ जोड़ करके नत भाल।
पूजा अर्चा करके ध्यान, वीतराग मय पाऊँ ज्ञान।

दोहा- दिया प्रथम अध्याय में, दर्श ज्ञान का सार।
शुभ भावों से धारकर, भवदधि उतरूँ पार॥

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान तत्त्व नय प्रमाणादि प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- श्रुत ज्ञान को पूजकर, हो जाऊँ श्रुत रूप।
विशद ज्ञान को प्राप्त कर, पाऊँ निज स्वरूप॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

द्वितीय अध्याय

स्थापना

भाव असाधारण जीवों के, जैनागम में पञ्च कहे।
तीन लोक के जीव सभी इन, भावों के आधीन रहे।।
अशुभ भाव को छोड़ शुद्ध, भावों का करते आह्वानन।
जैनागम के सूत्रों का हम, करते हैं शत् शत् वंदन।।
विशद भावना भाते हैं हम, शुद्ध भाव मम नित्य रहें।
हो उपसर्ग परीषह कोई, शांत भाव से पूर्ण सहें।।

ॐ ह्रीं जीवस्य भाव प्ररूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित द्वितीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जीवस्य लक्षण भेद प्ररूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित द्वितीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं शरीरस्य भेद प्ररूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित द्वितीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

भावों की निर्मल सरिता से, हम शीतल जल भर लाए हैं।
हो जन्म मृत्यु का नाश शीघ्र, हम नीर चढ़ाने आए हैं।।
अब शुद्ध भाव को पाने की हम, विशद भावना भाते हैं।
जिनवर प्रणीत जिन सूत्रों को, हम सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित द्वितीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शुभ भावों के मधुवन से, यह शीतल चंदन लाए हैं।
संसार ताप के नाश हेतु, बन भक्त शरण में आए हैं।।
अब शुद्ध भाव को पाने की हम, विशद भावना भाते हैं।
जिनवर प्रणीत जिन सूत्रों को, हम सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित द्वितीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जो है अनन्त अविनाशी पद, वह प्राप्त नहीं कर पाए हैं।
उस पद को पाने हेतु परम, यह अक्षत लेकर आए हैं।।
अब शुद्ध भाव को पाने की हम, विशद भावना भाते हैं।
जिनवर प्रणीत जिन सूत्रों को, हम सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित द्वितीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भावों के मनहर उपवन से, हम पुष्प सुगन्धित लाए हैं।
करके विशुद्ध निज भावों को, हम काम नशाने आए हैं।।
अब शुद्ध भाव को पाने की हम, विशद भावना भाते हैं।
जिनवर प्रणीत जिन सूत्रों को, हम सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित द्वितीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम के भाव सरस व्यंजन, हम प्राप्त नहीं कर पाए हैं।
अब आत्म सरस रस पाने को, नैवेद्य सरस ले आए हैं।।
अब शुद्ध भाव को पाने की हम, विशद भावना भाते हैं।
जिनवर प्रणीत जिन सूत्रों को, हम सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित द्वितीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन के भावों का प्रकाश, मंगलमय पाने आये हैं।
हम मोह महातम नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाये हैं।।
अब शुद्ध भाव को पाने की हम, विशद भावना भाते हैं।
जिनवर प्रणीत जिन सूत्रों को, हम सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित द्वितीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म के आर्जव से, यह धूप दशांगी लाए हैं।
सत् संयम तप की अग्नि में, हम उसे जलाने आए हैं।।
अब शुद्ध भाव को पाने की हम, विशद भावना भाते हैं।
जिनवर प्रणीत जिन सूत्रों को, हम सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित द्वितीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च भाव के पञ्च महाफल, पूजा को हम लाए हैं।
मोक्ष महाफल पाने हेतू, भक्ति भाव से आए हैं।।
अब शुद्ध भाव को पाने की, हम विशद भावना भाते हैं।
जिनवर प्रणीत जिन सूत्रों को, हम सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित द्वितीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो महामोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उपशम क्षय आदि भावों का, शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।
हम पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, अब भाव बनाकर आए हैं।।
अब शुद्ध भाव को पाने की हम, विशद भावना भाते हैं।
जिनवर प्रणीत जिन सूत्रों को, हम सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित द्वितीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

सोरठा- **चढ़ा रहे हैं अर्घ्य, यहाँ द्वितीय अध्याय के।**
पाने सुपद अनर्घ्य, पुष्पांजलि क्षेपण करें।।

(अथ द्वितीय वलयोपरिपुष्पांजलि क्षिपेत्)

सूत्र प्रारम्भ

जीव के असाधारण भाव

औपशमिक-क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व-मौदयिक-पारिणामिकौ च ॥1॥

(हरिगीता-छन्द)

औपशमिक क्षायिक क्षयोपशम, भाव औदायिक कहे।
पारिणामिक भाव पंचम, जीव के यह निज रहे॥
औपशमिक कर्मों के उपशम, क्षय से क्षायिक भाव हों।
कर्म के क्षय और उपशम, से क्षयोपशम भाव हों॥
औदयिक हों भाव कर्मों के, उदयगत भाव से।
पारिणामिक भाव होता, जीव के स्वभाव से॥
भाव होते शुभ-अशुभ यह, कर्म का करते सृजन।
शुद्ध भावों से सभी, कर्मों का हो जावे शमन॥

ॐ ह्रीं जीवस्य असाधारण भाव स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भावों के भेद

द्वि नवाष्टा-दशैकविंशति-त्रि-भेदा यथाक्रमम् ॥2॥

औपशमिक आदि के द्वय नव, और अष्टादश रहे।
एक विंशति तीन क्रमशः जैन आगम में कहे॥
भाव होते शुभ-अशुभ यह, कर्म का करते सृजन।
शुद्ध भावों से सभी, कर्मों का हो जावे शमन॥

ॐ ह्रीं जीवस्य औपशमिकादि भाव भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औपशमिक भाव के दो भेद

सम्यक्त्व-चारित्रे ॥3॥

औपशमिक सम्यक्त्व जीवों, के लिए होता सृजन।
मोहनी की सप्त प्रकृति, का जहाँ हो उपशमन॥
औपशमिक चारित्र का, होवे वहाँ पर आगमन।
मोहनी की शेष प्रकृति, का जहाँ हो उपशमन॥
भाव होते शुभ-अशुभ यह, कर्म का करते सृजन।
शुद्ध भावों से सभी, कर्मों का हो जावे शमन॥

ॐ ह्रीं जीवस्य औपशमिक भाव भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक भाव के नव भेद

ज्ञान-दर्शन-दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणि च ॥4॥

सम्यक्त्वक्षायिक का वही, जीवों के होता है सृजन।
मोहनी की सप्त प्रकृति, का जहाँ पर हो दमन॥
चारित्र क्षायिक का वहाँ पर, जीव को होता सृजन।
मोहनी की शेष प्रकृतियों, का जहाँ पर हो दमन॥
ज्ञानदर्शन आवरण के, नाश होते ही जगे।
नष्ट होते विघ्न के शुभ, पञ्च लब्धि जगमगे॥
दान क्षायिक लाभ क्षायिक, भोग क्षायिक भी जगे।
प्राप्त हो उपभोग क्षायिक, वीर्य क्षायिक जगमगे॥
भाव होते शुभ-अशुभ यह, कर्म का करते सृजन।
शुद्ध भावों से सभी, कर्मों का हो जावे शमन॥

ॐ ह्रीं जीवस्य क्षायिक भाव भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायोपशमिक भाव के अठारह भेद

ज्ञानाऽज्ञानदर्शन लब्धयश्चतुस्त्रित्रिपंच भेदाः सम्यक्त्व-चारित्र-संयमा-संयमाश्च ॥5॥

क्षयोपशम के भेद अष्टादश, श्री जिनवर कहे।
मति श्रुतावधि मनःपर्यय, ज्ञान यह चारों रहे॥
कुमति कुश्रुत कुअवधि, तीन यह कुज्ञान हैं।
चक्षु-अचक्षु अवधि दर्शन, की विशद पहिचान है॥
पञ्च लब्धि हैं क्षयोपशम, जैन आगम में कहा।
सम्यक्त्व अरु चारित्र होते, संयमा-संयम भी रहा।
भाव होते शुभ-अशुभ यह, कर्म का करते सृजन।
शुद्ध भावों से सभी, कर्मों का हो जावे शमन॥

ॐ ह्रीं जीवस्य क्षयोपशमिक भाव भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औदयिक भाव के 21 भेद

गति-कषाय-लिङ्ग-मिथ्यादर्शनाज्ञाना-संयतासिद्ध-लेश्याश्चतुश्चतु-स्त्र्यैकैकैकैक-षड्भेदाः ॥6॥

औदयिक के भाव इक्कीस, जैन आगम में कहे।
चार गतियाँ चऊ कषाएँ, लिंग तिय उनमें रहे॥
मिथ्यादर्शन अरु असंयम, असिद्धत्व अरु अज्ञान है।
लेश्याएँ छह कृष्ण आदि, की यही पहिचान है॥
भाव होते शुभ-अशुभ यह, कर्म का करते सृजन।
शुद्ध भावों से सभी, कर्मों का हो जावे शमन॥

ॐ ह्रीं जीवस्य औदयिक भाव भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारिणामिक भाव के 3 भेद

जीव-भव्या-भव्यत्वानि च ।।7।।

पारिणामिक भाव के तिय, भेद आगम में कहे।
जीवत्व अरु भव्यत्व-अभव्यत्व, तीन स्वाभाविक रहे।।
भाव होते शुभ-अशुभ यह, कर्म का करते सृजन।
शुद्ध भावों से सभी, कर्मों का हो जावे शमन।।

ॐ ह्रीं जीवस्य पारिणामिक भाव भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव का लक्षण

उपयोगो लक्षणम् ।।8।।

जीव का उपयोग लक्षण, जैन आगम में कहा।
चेतना के साथ में जो, नित्य स्वाभाविक रहा।।
भाव होते शुभ-अशुभ यह, कर्म का करते सृजन।
शुद्ध भावों से सभी, कर्मों का हो जावे शमन।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व स्वरूप दर्शक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपयोग के 12 भेद

स द्विविधोऽष्ट-चतुर्भेदः ।।9।।

भेद हैं उपयोग के द्वय, ज्ञान दर्शन यह कहे।
ज्ञान के उपयोग वसु हैं, चार दर्शन के रहे।।
मति श्रुतावधि मनःपर्यय, ज्ञान केवल जानिए।
कुमति कुश्रुत कुअवधि, तीन यह भी मानिए।।
चक्षु दर्शन अरु अचक्षु, अवधि अरु केवल रहे।
चार दर्शन सहित बारह, उपयोग यह जिनवर कहे।।

भाव होते शुभ-अशुभ यह, कर्म का करते सृजन।
शुद्ध भावों से सभी, कर्मों का हो जावे शमन।।

ॐ ह्रीं द्वादश विध उपयोग संकेतक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव के 2 भेद

संसारिणो मुक्ताश्च ।।10।।

जीव संसारी जगत् में, कर्म से संयुक्त हैं।
भेद दूजा जीव का जो, कर्म से भी मुक्त हैं।।
भाव होते शुभ-अशुभ यह, कर्म का करते सृजन।
शुद्ध भावों से सभी, कर्मों का हो जावे शमन।।

ॐ ह्रीं जीवस्य द्विभेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसारी जीवों के भेद

समनस्कामनस्काः ।।11।।

(छंद-ताटंक)

संसारी के भेद कहे दो, मन से सहित और मनहीन।
मन वाले संज्ञी कहलाए, और असंज्ञी रहे विहीन।।
एकेन्द्रिय से चउ इन्द्रिय तक, सभी असंज्ञी जीव कहे।
संज्ञी और असंज्ञी पशु में, पंचेन्द्रिय के भेद रहे।।
भाव शुभाशुभ होय जीव के, उसके फल को पाते हैं।
अशुभ भाव से भ्रमण होय जग, मोक्ष शुभम् से जाते हैं।।

ॐ ह्रीं संसारी जीवस्य द्वि-भेद प्रज्ञापक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसारी जीवों के अन्य प्रकार से भेद

संसारिणस्त्रसस्थावराः ॥12॥

(छंद ताटंक)

संसारी के भेद बताए, त्रस स्थावर दो आधार।
दो इंद्री से पंच इंद्री तक, स्थावर हैं पंच प्रकार॥
भाव शुभाशुभ होय जीव के, उसके फल को पाते हैं।
अशुभ भाव से भ्रमण होय जग, मोक्ष शुभम् से जाते हैं॥

ॐ ह्रीं त्रस स्थावरादि जीवस्य द्वि-भेद रूप प्रज्ञापक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थावर जीवों के भेद

पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः ॥13॥

पृथ्वी जल अग्नि वायु अरु, वनस्पति कायिक के भेद।
सूक्ष्म ज्ञान पाते एक इन्द्री, नहीं ज्ञान का हो विच्छेद॥
भाव शुभाशुभ होय जीव के, उसके फल को पाते हैं।
अशुभ भाव से भ्रमण होय जग, मोक्ष शुभम् से जाते हैं॥

ॐ ह्रीं स्थावर जीवस्य भेद प्ररूपकाय श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रस जीवों के भेद

द्वीन्द्रियादय-स्त्रसाः ॥14॥

दो इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक, सभी जीव त्रस कहलाते।
एकेन्द्रिय में चार प्राण अरु, द्वय इन्द्रिय में छह पाते॥
सात आठ तिय चउ इन्द्रिय में, जीव असंज्ञी में नौ प्राण।
सैनी जीव प्राण दश पाकर, करते आतम का कल्याण॥
भाव शुभाशुभ होय जीव के, उसके फल को पाते हैं।
अशुभ भाव से भ्रमण होय जग, मोक्ष शुभम् से जाते हैं॥

ॐ ह्रीं त्रस जीवस्य भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रियों की संख्या

पञ्चेन्द्रियाणि ।।15।।

पाँच इन्द्रियाँ कहीं लोक में, पाते सब क्षमता अनुसार।
निज के विषय जानने में वह, इन्द्रों सम रखतीं अधिकार।।
भाव शुभाशुभ होय जीव के, उसके फल को पाते हैं।
अशुभ भाव से भ्रमण होय जग, मोक्ष शुभम् से जाते हैं।।

ॐ ह्रीं इन्द्रिय-संख्या प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रियों के मूलभेद

द्विविधानि ।।16।।

इन्द्री के दो भेद कहे हैं, द्रव्यभाव आगम अनुसार।
पुद्गल नाम कर्म का होता, जीवों पर पावन उपकार।।
भाव शुभाशुभ होय जीव के, उसके फल को पाते हैं।
अशुभ भाव से भ्रमण होय जग, मोक्ष शुभम् से जाते हैं।।

ॐ ह्रीं इन्द्रिय भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्येन्द्रिय का स्वरूप

निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ।।17।।

अभ्यंतर निवृत्ती में हो, आत्म प्रदेश इन्द्रियाकार।
कहते हैं उपकरण उसे जो, करता रचना में उपकार।।
भाव शुभाशुभ होय जीव के, उसके फल को पाते हैं।
अशुभ भाव से भ्रमण होय जग, मोक्ष शुभम् से जाते हैं।।

ॐ ह्रीं द्रव्य इन्द्रिय स्वरूप प्रदर्शक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भावेन्द्रिय का स्वरूप

लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ।।18।।

लब्धि अरु उपयोग दोय को, मिलता भावेन्द्रिय का योग।
चेतन की शक्ति है लब्धि, ध्येय योग होता उपयोग।।
भाव शुभाशुभ होय जीव के, उसके फल को पाते हैं।
अशुभ भाव से भ्रमण होय जग, मोक्ष शुभम् से जाते हैं।।

ॐ ह्रीं भावेन्द्रिय स्वरूप प्रदर्शक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँचों इन्द्रियों के नाम और उनका क्रम

स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षुः-श्रोत्राणि ।।19।।

स्पर्शन है रसन घ्राण अरु, चक्षु कर्ण इन्द्रिय के नाम।
जीव प्राप्त करते अनुक्रम से, करतीं अपना अपना काम।।
भाव शुभाशुभ होय जीव के, उसके फल को पाते हैं।
अशुभ भाव से भ्रमण होय जग, मोक्ष शुभम् से जाते हैं।।

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रिय नाम प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय के विषय

स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण-शब्दास्तदर्थाः ।।20।।

विषय कहे स्पर्श और रस, गंध वर्ण अरु शब्द महान्।
सर्व मिलाकर हैं सत्ताईस, ऐसा कहते हैं भगवान।।
स्पर्शन के आठ विषय हैं, शीत उष्ण हल्का भारी।
रूखा चिकना अरु कठोर अति, कोमल का भी अधिकारी।।
रस के पंच विषय हैं खट्टा, मीठा कटुक कषायला तिक्त।
हैं सुगन्ध दुर्गन्ध घ्राण के, विषय नहीं होते अतिरिक्त।।

वर्ण कहे हैं पंच श्वेत अरु, काला पीला नीला लाल।
कर्णेन्द्रिय के सप्त विषय हैं, रहते हैं जो सदा त्रिकाल।।
षड्ज ऋषभ गांधार अरु मध्यम, पंचम धैवत और निशात।
इन्द्रिय विषयक ज्ञान प्राप्त हो, जीवों को होवे यह ज्ञात।।
भाव शुभाशुभ होय जीव के, उसके फल को पाते हैं।
अशुभ भाव से भ्रमण होय जग, मोक्ष शुभम् से जाते हैं।।

ॐ ह्रीं इन्द्रिय विषय निरूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन का विषय

श्रुत-मनिन्द्रियस्य।।21।।

विषय अतिन्द्रिय का श्रुत होता, मन का है यह दूजा नाम।
द्रव्य भाव श्रुत को है मेरा, भाव सहित कर जोर प्रणाम।।
भाव शुभाशुभ होय जीव के, उसके फल को पाते हैं।
अशुभ भाव से भ्रमण होय जग, मोक्ष शुभम् से जाते हैं।।

ॐ ह्रीं अनिन्द्रिय विषय निरूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकेन्द्रिय के स्वामी

वनस्पत्यन्तानामेकम्।।22।।

वनस्पति है अन्त में जिसके, होते वह एकेन्द्री जीव।
पृथ्वी जल अग्नि वायु अरु, वनस्पति हैं सभी सजीव।।
भाव शुभाशुभ होय जीव के, उसके फल को पाते हैं।
अशुभ भाव से भ्रमण होय जग, मोक्ष शुभम् से जाते हैं।।

ॐ ह्रीं एकेन्द्रिय जीव स्वामी निरूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्विन्द्रियादि के स्वामी

कृमि-पिपीलिका-भ्रमर-मनुष्या-दीनामेकैक-वृद्धानि ॥23॥

कृमि पिपीलिका भौंरा मानव, आदि जो भी जीव कहे।
एक-एक इन्द्री की वृद्धि, क्रमशः पाते जीव रहे॥
भाव शुभाशुभ होय जीव के, उसके फल को पाते हैं।
अशुभ भाव से भ्रमण होय जग, मोक्ष शुभम् से जाते हैं॥

ॐ ह्रीं त्रस जीव तत्त्व निरूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सैनी किसे कहते हैं

संज्ञिनः समनस्काः ॥24॥

मन से सहित जीव जो होते, वे सब संज्ञी कहलाते।
सकलेन्द्रिय होते हैं ये सब, इनकी महिमा बतलाते॥
चेतन के हित और अहित को, मन के द्वारा ही जानें।
मोक्ष और संसार की महिमा, मन के द्वारा पहिचानें॥
भाव शुभाशुभ होय जीव के, उसके फल को पाते हैं।
अशुभ भाव से भ्रमण होय जग, मोक्ष शुभम् से जाते हैं॥

ॐ ह्रीं संज्ञी जीव तत्त्व परिचायक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विग्रह गति में कर्मयोग

विग्रह-गतौ कर्मयोगः ॥25॥

(हरिगीता - छंद)

विग्रह गति में कर्म का ही, योग पाते जीव सब।
एक तन तज दूसरा तन, प्राप्त करते जीव तब॥
विग्रह गति में जीव जाते, कर्म के अनुसार हैं।
ऋजु पाणिमुक्त लाङ्गल, गोमूत्रिक जो चार हैं॥

धर्म का आधार पाकर, मोह का मैं क्षय करूँ।
ज्ञान ज्योति विशद पाकर, कर्म को मैं जय करूँ।।

ॐ ह्रीं विग्रहगति स्वरूप विवेचक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विग्रह गति में जीव और पुद्गलों का गमन कैसे होता है?

अनुश्रेणि गतिः ।।26।।

श्रेणी के अनुसार होता, जीव का गमनागमन।
सप्त राजू में गमन हो, कर्म का करके शमन।।
धर्म का आधार पाकर, मोह का मैं क्षय करूँ।
ज्ञान ज्योति विशद पाकर, कर्म को मैं जय करूँ।।

ॐ ह्रीं श्रेण्यानुसार गतिदर्शक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्त जीवों की गति कैसे होती है ?

अविग्रहा जीवस्य।।27।।

शुद्ध जीवों की गति शुभ, वक्रता से हीन है।
श्रेणी के अनुसार गतियाँ, कर्म के आधीन हैं।।
धर्म का आधार पाकर, मोह का मैं क्षय करूँ।
ज्ञान ज्योति विशद पाकर, कर्म को मैं जय करूँ।।

ॐ ह्रीं अविग्रह गति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसारी जीवों की गति और उसका समय

विग्रहवती च संसारिणः प्राक्चतुर्भ्यः।।28।।

जीव संसारी गति पाते हैं, वक्र अवक्र द्वय।
वक्र गति में जीव पाते, पूर्व पूरव चउ समय।।

धर्म का आधार पाकर, मोह का मैं क्षय करूँ।
ज्ञान ज्योति विशद पाकर, कर्म को मैं जय करूँ।।

ॐ ह्रीं विग्रहाविग्रह गत्याधिकारी स्वरूप प्रदर्शक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविग्रहगति का समय

एकसमयाऽविग्रहा ।।29।।

वक्रता से हीन होती, एक समय वाली गती।
जैन आगम के कथन को, कह रहे हैं जिनमती ।।
धर्म का आधार पाकर, मोह का मैं क्षय करूँ।
ज्ञान ज्योति विशद पाकर, कर्म को मैं जय करूँ।।

ॐ ह्रीं जीवस्य अविग्रह गति समय प्रदर्शक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विग्रहगति में आहारक-अनाहारक की व्यवस्था

एकं द्वौ त्रीन्वानाहारकः ।।30।।

अनाहारक जीव द्वय तिय, समय तक रह पाएगा।
समय चौथे में आहारक, नियम से हो जाएगा।।
धर्म का आधार पाकर, मोह का मैं क्षय करूँ।
ज्ञान ज्योति विशद पाकर, कर्म को मैं जय करूँ।।

ॐ ह्रीं विग्रह गति स्थित आहारकानाहारक जीवत्व समय प्रदर्शक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म के भेद

संमूर्च्छन-गर्भोपपादा जन्म ।।31।।

(छन्द-ताटंक)

गर्भोपपाद जन्म सम्मूर्च्छन, जन्म कहे है तीन प्रकार।
रजो वीर्य से मात-पिता का, गर्भ जन्म होता आधार।।

रजो वीर्य बिन मात-पिता के, जन्में स्वर्ग-नर्क में जीव।
वह उपपाद जन्म के धारी, सुख-दुख पावें वहाँ अतीव।।
मात-पिता के रजो वीर्य बिन, सम्मूर्च्छन जीवों का जन्म।
जन्म-मरण की तोड़ शृंखला, पाऊँ जैन धर्म का मर्म।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, अष्ट कर्म का करूँ विनाश।
विशद ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का करूँ प्रकाश।।

ॐ ह्रीं जन्म भेद प्रदर्शक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योनियों के भेद

सचित्त-शीत-संवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ।।32।।

योनि के नव भेद कहे हैं, सचित्त शीत संवृत यह तीन।
तीनों के विपरीत मिश्र तिय, बतलाये यह ज्ञान प्रवीण।।
तीन भेद आकार योनि के, जैनागम में कहे विशेष।
संखावर्त योनि कूर्मोन्नत, वंश पत्र यह कहे जिनेश।।
तीन योग के द्वारा, तीनों योनी का मैं करूँ विनाश।
विशद ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का करूँ प्रकाश।।

ॐ ह्रीं योनि भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ जन्म किसे कहते हैं

जरायु-जाण्डज-पोतानां गर्भः ।।33।।

गर्भ जन्म त्रय भाँति जरायुज, अण्डज पोतज कहा जिनेश।
मज्जा मांस के जेर में लिपटा, जन्म-जरायुज कहा विशेष।।
अण्डज जन्म होय अण्डे से, पोतज इससे भिन्न रहा।
बाघ सिंह गजराज का होता, मोक्ष का हेतु पृथक कहा।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, अष्ट कर्म का करूँ विनाश।
विशद ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का करूँ प्रकाश।।

ॐ ह्रीं गर्भज जन्म प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपपाद जन्म किसे कहते हैं

देव-नारकाणा-मुपपादः ।।34।।

पाते हैं उपपाद जन्म को, देव नारकी जीव अशेष।
सुर होते अन्तर्मुहूर्त में, यौवन शोभित पूर्ण विशेष।।
जीव नारकी मधु छत्ते सम, औंधे गिर कर बिल्लाते।
उल्टे-पुल्टे गिर कर औंधे, प्रचुर वेदना वे पाते।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, अष्ट कर्म का करूँ विनाश।
विशद ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का करूँ प्रकाश।।

ॐ ह्रीं उपपादशैय्योत्पन्न जीव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्मूर्च्छन जन्म किसे होता है

शेषाणां संमूर्च्छनम् ।।35।।

शेष जन्म पाते सम्मूर्च्छन, इस जगती के सारे जीव।
लब्ध्यपर्याप्त जीव सम्मूर्च्छन, होकर पावें दुःख अतीव।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, अष्ट कर्म का करूँ विनाश।
विशद ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का करूँ प्रकाश।।

ॐ ह्रीं सम्मूर्च्छन जीव जन्म प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरीर के नाम तथा भेद

औदारिक-वैक्रियिकाहारक-तैजस-कार्मणानि शरीराणि ।।36 ।।

औदारिक वैक्रियकाहारक, तैजस कार्मण पंच महान्।
नर तिर्यंच का तन औदारिक, वैक्रिय सुर नारक का जान।।
मुनि प्रमत्त को आहारक तन, तैजस कार्मण सबके साथ।
नाश करूँ मैं पंच देह का, श्री जिन चरण झुकाऊँ माथ।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, अष्ट कर्म का करूँ विनाश।
विशद ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का करूँ प्रकाश।।

ॐ ह्रीं वपु भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरीरों की सूक्ष्मता का वर्णन

परं परं सूक्ष्मम् ।।37 ।।

आगे-आगे के शरीर सब, सूक्ष्म-सूक्ष्म होते हैं शेष।
औदारिक को आदी करके, सभी सूक्ष्मता पाए विशेष।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, अष्ट कर्म का करूँ विनाश।
विशद ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का करूँ प्रकाश।।

ॐ ह्रीं औदारिकादि शरीर सूक्ष्मता प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पहिले शरीर की अपेक्षा आगे के शरीरों के प्रदेश

प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात् ।।38 ।।

औदारिक तन के प्रदेश सब, होते युक्ता-नन्त प्रमाण।
असंख्यात गुण वैक्रियक के, रहा प्रदेशों का भी मान।।
इससे संख्यातीत गुणे भी, आहारक के रहे प्रदेश।
तीन लोक में श्रेष्ठ रहा है, जैनागम का कथन विशेष।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, अष्ट कर्म का करूँ विनाश।
विशद ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का करूँ प्रकाश।।

ॐ ह्रीं औदारिक शरीरादि त्रि-शरीराणाम् प्रदेश संख्या प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्माण शरीर के अनंत प्रदेश होते हैं

अनन्त-गुणे परे।।39।।

जो प्रदेश आहारक के हैं, उससे गुणे अनन्त प्रमाण।
तैजस तन के होते भाई, ऐसा है आगम का ज्ञान।।
जो प्रदेश तैजस के होते, उससे गुणे अनन्त प्रमाण।
रहे प्रदेश कार्माण तन के, ऐसा कहते हैं भगवान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, अष्ट कर्म का करूँ विनाश।
विशद ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का करूँ प्रकाश।।39।।

ॐ ह्रीं तैजस कार्माण शरीर प्रदेश संख्या प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तैजस और कार्माण शरीर की विशेषता

अप्रतीघाते।।40।।

तैजस और कार्माण दोनों, अप्रतिघाती कहे शरीर।
रोकें नहीं न रुकते पर से, जानो यह इनकी तासीर।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, अष्ट कर्म का करूँ विनाश।
विशद ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का करूँ प्रकाश।।

ॐ ह्रीं तैजस कार्माण शरीरयो अप्रतिघात स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तैजस कार्माण शरीर की अन्य विशेषता

अनादि-संबन्धे च ॥41 ॥

दोनों का सम्बन्ध कहा है, काल अनादि और अनन्त।
शेष शरीर प्राप्त होकर भी, हो जाता है उनका अन्त॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, अष्ट कर्म का करूँ विनाश।
विशद ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का करूँ प्रकाश॥

ॐ ह्रीं तैजस कार्माण शरीर सम्बन्ध सूचक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये शरीर अनादिकाल से सब जीवों के होते हैं

सर्वस्य ॥42 ॥

तैजस और कार्माण दोनों, रहते सब जीवों के साथ।
सिद्ध प्रभु अशरीरी होते, उनके चरण झुकाऊँ माथ॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, अष्ट कर्म का करूँ विनाश।
विशद ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का करूँ प्रकाश॥

ॐ ह्रीं तैजस कार्माण शरीर संयुक्ते सर्व जीव तत्त्व प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक जीव के साथ कितने शरीर का संबंध होता है

तदादीनि भाज्यानि युगपदेक-स्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥43 ॥

दो शरीर को आदि करके, हों विकल्प से चार प्रकार।
एक साथ दो तैजस कार्माण, रहते जीवों के आधार॥
तैजस कार्मण औदारिक या, वैक्रियक तैजस कार्माण।
तैजस कार्माण औदारिक हो, आहारक यह चार प्रमाण॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, अष्ट कर्म का करूँ विनाश।
विशद ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का करूँ प्रकाश॥

ॐ ह्रीं जीवस्य युगपत शरीर सम्बन्ध सूचक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्माण शरीर की विशेषता

निरुपभोगमन्त्यम् ॥44॥

संसारी जीवों के होता, कार्मण तन उपभोग विहीन।
सिद्ध प्रभु कार्मण तन से अरु, सर्व कर्म से होते हीन॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, अष्ट कर्म का करूँ विनाश।
विशद ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का करूँ प्रकाश॥

ॐ ह्रीं कार्माण तन उपभोगहीन देह प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औदारिक शरीर का लक्षण

गर्भ-संमूर्च्छनजमाद्यम् ॥45॥

गर्भ जन्म सम्मूर्छन वाले, औदारिक तन पाते हैं।
त्रस नाली में त्रस स्थावर, तीन लोक तक जाते हैं॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, अष्ट कर्म का करूँ विनाश।
विशद ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का करूँप्रकाश॥

ॐ ह्रीं औदारिक देह लक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैक्रियक शरीर का लक्षण

औपपादिकं वैक्रियिकम् ॥46॥

जिनका जन्म रहा औपपादिक, उनकी हो वैक्रियक देह।
स्वर्ग-नर्क के देव नारकी, जन्म प्राप्त करते हैं येह॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, अष्ट कर्म का करूँ विनाश।
विशद ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का करूँ प्रकाश॥

ॐ ह्रीं वैक्रियक देह-लक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव और नारकियों के अतिरिक्त दूसरों के वैक्रियक शरीर होता या नहीं

लब्धि-प्रत्ययं च ।।47।।

लब्धि प्रत्यय होय विक्रिया, पाते ऋद्धिधारी जीव।
औदारिक तन होता है पर, रही विक्रिया उन्हें अतीव।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, अष्ट कर्म का करूँ विनाश।
विशद ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का करूँ प्रकाश।।

ॐ ह्रीं लब्धि प्रत्ययोऽपि वैक्रियक देह प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैक्रियक के अतिरिक्त किसी अन्य शरीर को भी लब्धिका निमित्त है

तैजसमपि ।।48।।

तैजस तन भी लब्धि प्रत्यय, अरु होता है लब्धि हीन।
अनिःसरण संसारी जीवों, को दे कांति लब्धि विहीन।।
लब्धि प्रत्यय देह निःसरण, होय शुभाशुभ दोय प्रकार।
दांये कन्धे से मुनिवर के, पुतला निकले अपरम्पार।।
शुभ तैजस जीवों के दुखहर, समा जाय अपने स्थान।
क्रोध भाव के कारण निकले, तैजस अशुभ अनर्थ की खान।।
द्वादश योजन की बस्ती का, कर देता है क्षण में नाश।
वापस आकर मुनिवर का भी, कर देता है पूर्ण विनाश।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, अष्ट कर्म का करूँ विनाश।
विशद ज्ञान की ज्योति जलाऊँ, निज आतम का करूँ प्रकाश।।

ॐ ह्रीं अन्य देह तैजस लब्धि निमित्त प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहारक शरीर का लक्षण और उसका स्वामी

शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ।।49।।

आहारक तन के अधिकारी, हैं प्रमत्त संयत मुनिनाथ।
बाधा रहित विशुद्ध होय शुभ, सिर से प्रगटे जो इक हाथ।।
सूक्ष्म पदार्थों के निर्णय हित, जावे श्री जिनवर के पास।
निर्णय कर अन्तर्मुहूर्त में, कर जाए मुनि तन में वास।।
मनन करूँ तत्त्वार्थ सूत्र का, मन में मम् जागे श्रद्धान।
ज्ञान ध्यान में लीन रहूँ नित, प्रकट होय शुभ केवलज्ञान।।

ॐ ह्रीं आहारक शरीर लक्षण स्वामी प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लिंग अथवा वेद के स्वामी

नारक-संमूर्च्छिनो नपुंसकानि।।50।।

रहे नपुंसक सभी नारकी, सम्मूर्च्छन भी होते जीव।
इन्द्रिय विषयों की वांछा गत, पाते हैं जो दुःख अतीव।।
मनन करूँ तत्त्वार्थ सूत्र का, मन में मम् जागे श्रद्धान।
ज्ञान ध्यान में लीन रहूँ नित, प्रकट होय शुभ केवलज्ञान।।

ॐ ह्रीं नपुंसक वेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों के लिंग

न देवाः।।51।।

देव नपुंसक कभी न होते, पुल्लिंग स्त्रीलिंग पाते।
म्लेच्छ खण्ड के मानव में भी, जीव नपुंसक न जाते।।

मनन करूँ तत्त्वार्थ सूत्र का, मन में मम् जागे श्रद्धान।
ज्ञान ध्यान में लीन रहूँ नित, प्रकट होय शुभ केवलज्ञान।।

ॐ ह्रीं नपुंसक वेदरहित देव वेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्य कितने लिंग वाले हैं

शेषास्त्रि-वेदाः ।।52।।

शेष जीव नर पशू लोक में, पाते हैं तीनों ही वेद।
पूर्वोपार्जित कर्म के द्वारा, पाते हर्ष कभी यों खेद।।
मनन करूँ तत्त्वार्थ सूत्र का, मन में मम् जागे श्रद्धान।
ज्ञान ध्यान में लीन रहूँ नित, प्रकट होय शुभ केवलज्ञान।।

ॐ ह्रीं त्रिवेद सहित जीव तत्त्व प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किनकी आयु अपवर्त्तन (अकालमृत्यु) रहित है

औपपादिक-चरमोत्तमदेहासंख्येय-वर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ।।53।।

जो उपपाद जन्म वाले या, चरमोत्तम पाए जो देह।
संख्यातीत वर्ष की आयु, पाने वाले जग में येह।।
उनकी आयु का अपवर्तन, घात नहीं हो कभी कदा।
आयु जितनी बन्ध करें जो, उतनी भोंगे पूर्ण सदा।।
मनन करूँ तत्त्वार्थ सूत्र का, मन में मम् जागे श्रद्धान।
ज्ञान ध्यान में लीन रहूँ नित, प्रकट होय शुभ केवलज्ञान।।53।।

ॐ ह्रीं अपवर्त्यायुरहित जीव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ

पंच पाते भाव जग में, जीव जो रहते सभी।
पारिणामिक भाव का ना, अन्त होता है कभी।।
औपशमिक क्षायिक क्षयोपशम, मोक्ष के साधन कहे।
औदयिक परिणाम जग में, भ्रमण के कारण रहे।।
सूत्र के चिंतन मनन से, भाव मेरा शुभ रहे।
प्राप्त रत्नत्रय करूँ मैं, धैर्य की सरिता बहे।।54।।

ॐ ह्रीं जीवस्य असाधारण भाव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित द्वितीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यः जलादि महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य :- **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत जीव तत्त्व निरूपक श्री उमास्वामी विरचित द्वितीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

दोहा- पञ्च भाव होते विशद, जीवों के तिय काल।
मोक्ष शास्त्र अध्याय द्वय, की गाते जयमाल।।

चौपाई

उपशम भाव प्रथम कहलाया, क्षायिक भाव दूसरा गाया।
तृतीय भाव क्षयोपशम जानो, चौथा औदायिक को मानो।
पारिणामिक पंचम जिन गाते, इसको सभी जीव हैं पाते।
काल अनादि से हम भटके, औदायिक भावों में अटके।
चार गति में रहे भटकते, विषय भोग में रहे अटकते।
योनि लाख चौरासी गाई, हमने बार-बार वह पाई।
चार कषाएँ हमें सतावें, उनके वश हम धोखे खावें।
उपशम भाव न होने देती, सम्यक्दर्शन को हर लेती।

सम्यक्चारित की हैं घाती, तीन लोक में सदा भ्रमातीं।
क्षायिक भाव न हो पाते हैं, कर्म उदय में जब आते हैं।
क्षायोपशमिक भाव नहिं होते, भव सागर में खाए गोते।
स्त्री-पुरुष नपुंसक बनते, बार-बार पुत्रादि जनते।
विषय-वासना में रत रहते, पर को अपना-अपना कहते।
मिथ्यादर्शन ने मति मारी, कार्य किए सब मिथ्याकारी।
मिथ्याज्ञान उदय में आया, सम्यक् ज्ञान न होने पाया।
व्रत के भाव न मन में आए, तीन काल अव्रती कहलाए।
असिद्ध भाव मेरे मन भाए, सिद्ध कभी ने नहिं पाए।
लेश्याओं ने हमें सताया, चतुर्गति में भ्रमण कराया।
कृष्ण नील कापोत अशुभ हैं, पीत पद्म शुक्लादि शुभ हैं।
इन सबसे छुटकारा पाऊँ, निज भावों को शुद्ध बनाऊँ।
परिणामिक स्वभाव हमारा, उसका पाऊँ विशद सहारा।
ग्रन्थराज को हमने ध्याया, पूजाकर सौभाग्य जगाया।
सम्यक् श्रुत पा ज्ञान जगाऊँ, मुक्ति पाकर शिवपुर जाऊँ।

(छन्द घत्तानन्द)

मैं श्रुत पाऊँ ध्यान लगाऊँ, ज्ञान बढ़ाऊँ सिर नाऊँ।
जिनवर को ध्याऊँ, शीष झुकाऊँ, कर्म नशाऊँ शिव जाऊँ।।

ॐ ह्रीं जीवस्य भाव निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित द्वितीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

उमास्वामि गुरु ने लिखा, मोक्ष शास्त्र यह ग्रन्थ।
विशद भाव से पूजकर, हो जाऊँ निर्ग्रन्थ।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

तृतीय अध्याय

स्थापना

जिन तत्त्वार्थ सूत्र अतिपावन, जैनागम का ग्रन्थ महान।
छह द्रव्यों अरु सात तत्त्व का, जिसमें किया गया गुणगान।।
दिया गया तृतीय अध्याय में, अधो मध्य लोकों का ज्ञान।
जागे उर संवेग भाव तब, हो आतम में दृढ़ श्रद्धान।।
उमास्वामी कृत शास्त्र प्राप्त कर, करता हूँ श्रुत की पूजन।
विशद भाव से विशद हृदय में, करता हूँ मैं आह्वानन।।

ॐ ह्रीं अधोलोक स्वरूप प्ररूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित तृतीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मध्यलोक स्वरूप प्ररूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित तृतीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अधो-मध्यलोक सम्बन्धी, वातवलय, नदी सरोवर, जीवाजीव, तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित तृतीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम जन्म-जन्म के प्यासे हैं, अब प्यास बुझाने आये हैं।
अब निर्मल जल को प्रासुक कर, हम नीर चढ़ाने लाये हैं।।
न चित् का चिंतन कर पाए, चिंता से बहु अकुलाए हैं।
हम तीन लोक में भ्रमण किए, अब मुक्ती पाने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित तृतीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव संताप में सदियों से, हम यों ही सताते आए हैं।
यह श्रेष्ठ सुगंधित चंदन ले, चरणों में चढ़ाने लाए हैं।।

न चित् का चिंतन कर पाए, चिंता से बहु अकुलाए हैं।
हम तीन लोक में भ्रमण किए, अब मुक्ती पाने आए हैं॥2॥

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित तृतीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति की चाह रही हमको, वह पाने को तरसाए हैं।
अब अक्षयपुर जाने हेतू, यह अक्षय अक्षत लाए हैं॥
न चित् का चिंतन कर पाए, चिंता से बहु अकुलाए हैं।
हम तीन लोक में भ्रमण किए, अब मुक्ती पाने आए हैं॥3॥

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित तृतीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूलों में गंध सुगंधित है, मानस मधुकर को महकाए।
चेतन की गंध प्राप्त करने, यह पुष्प सुगंधित हम लाए॥
न चित् का चिंतन कर पाए, चिंता से बहु अकुलाए हैं।
हम तीन लोक में भ्रमण किए, अब मुक्ती पाने आए हैं॥4॥

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित तृतीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खाने-पीने की चाह बहुत, हम पूर्ण नहीं कर पाए हैं।
अब क्षुधा वेदना नाश हेतु, नैवेद्य मनोहर लाए हैं॥
न चित् का चिंतन कर पाए, चिंता से बहु अकुलाए हैं।
हम तीन लोक में भ्रमण किए, अब मुक्ती पाने आए हैं॥5॥

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित तृतीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके हम मोह अंधेरे में, न दीप ज्ञान के जल पाए।
अब मोह अंध के नाश हेतु, यह दीप जलाकर हम लाए।।
न चित् का चिंतन कर पाए, चिंता से बहु अकुलाए हैं।
हम तीन लोक में भ्रमण किए, अब मुक्ती पाने आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित तृतीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने जाल बनाया है, हम उसमें ही उलझाए हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, यह धूप जलाने आए हैं।।
न चित् का चिंतन कर पाए, चिंता से बहु अकुलाए हैं।
हम तीन लोक में भ्रमण किए, अब मुक्ती पाने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित तृतीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोक्ष सुखों को पाने का, उद्देश्य बनाकर आए हैं।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, हम सरस सद्य फल लाए हैं।।
न चित् का चिंतन कर पाए, चिंता से बहु अकुलाए हैं।
हम तीन लोक में भ्रमण किए, अब मुक्ती पाने आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित तृतीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ-अशुभ भाव की सरिता में, हम गोते खाते आए हैं।
अब पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
न चित् का चिंतन कर पाए, चिंता से बहु अकुलाए हैं।
हम तीन लोक में भ्रमण किए, अब मुक्ती पाने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित तृतीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा- अब तृतीय अध्याय का, करते हैं प्रारंभ।
भक्ति भाव से पूजते, त्याग कुटिलता दम्भ॥

(अथ तृतीयवलयो परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सूत्र प्रारम्भ

सात पृथ्वियों के नाम

रत्न-शर्करा-बालुका-पङ्क-धूम-तमो-महातमः-प्रभा-भूमयो घनाम्बुवाता-काशप्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः ॥1॥

(नरेन्द्र छंद)

सप्त नरक की सात भूमियाँ, नीचे-नीचे देव कहीं।
रत्न शर्करा प्रभा बालुका, पंक धूम तम साथ रहीं॥
सप्तम भूमि कही महातम, जिनमें बिल चौरासी लाख।
प्रथम भूमि खर पंक भाग अरु, अब्बहुल रूप हैं तीन विभाग॥
घन तनु और घनोदधि होते, वात वलय यह तीन प्रकार।
सर्व लोक अरु सर्व भूमियों, के होते हैं जो आधार॥

धम्मा वंशा मेघा क्रमशः, अंजना और अरिष्टा भ्रात।
मघवा और माघवी यह सब, आगम में वर्णित हैं सात॥
रत्नप्रभा खर पंक भाग अरु, अब्बहुल भाग हैं तीन विभाग।
व्यंतर और भवनवासी के, देव रहें खर पंक अरु भाग॥
अब्बहुल भाग में क्रूर नारकी, घोर दुखों को सहते हैं।
छह राजू में सात नरक सब, अधोलोक में रहते हैं॥
घन तनु और घनोदधि होते, वात वलय यह तीन प्रकार।
सर्व लोक अरु सर्व भूमियों, के होते हैं जो आधार॥

ॐ ह्रीं अधोलोक सम्बन्धी रत्न शर्करादि भूमि निरूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सात पृथ्वियों के बिलों की संख्या

तासु त्रिंशत्पंचविंशति-पंचदश-दश-त्रि-पंचोनैक-नरक-शतसहस्राणि पञ्च चैव यथाक्रमम् ।।2 ।।

तीस लाख बिल प्रथम नरक में, क्रमशः पच्चिस होते बीस।
पन्द्रह दश तिय एक पंच कम, कहे पंच बिल जैन मुनीश।।
लाख चौरासी कहे नरक बिल, बने ढोल की पोल समान।
उल्टे मुख करके गिरते हैं, जीव नारकी उनमें आन।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र के द्वारा, भव की बाधा होय विनाश।
मोक्षमार्ग पर बढ़ूं निरन्तर, होवे केवलज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं अधोलोकस्य सप्त भूमि सम्बन्धी विल संख्या प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नारकियों के दुःखों का वर्णन

नारका नित्याशुभतर-लेश्या-परिणाम-देह-वेदना-विक्रियाः ।।3 ।।

नित्य अशुभतर लेश्या पाते, देह वेदना अरु परिणाम।
अशुभ विक्रिया और वेदना, जीव नारकी आठों याम।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र के द्वारा, भव की बाधा होय विनाश।
मोक्षमार्ग पर बढ़ूं निरन्तर, होवे केवलज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं नरके वेदनादि प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नारकी जीव एक दूसरे को दुःख देते हैं

परस्परोदीरित-दुःखाः ।।4 ।।

दुःख परस्पर इक दूजे को, देते नित्य नारकी जीव।
सभी शीत या उष्ण वेदना, के दुख सहते नित्य अतीव।।

जिन तत्त्वार्थ सूत्र के द्वारा, भव की बाधा होय विनाश।

मोक्षमार्ग पर बढ़ूं निरन्तर, होवे केवलज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं नारक स्वभाव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशेष दुःख वर्णन

संक्लिष्टाऽसुरोदीरित-दुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ।।5।।

अती दुष्ट परिणामों वाले, असुर कुमार जाति के देव।

नरक तीसरे तक लड़वाते, पूर्व बैर बतलाकर एव।।

जिन तत्त्वार्थ सूत्र के द्वारा, भव की बाधा होय विनाश।

मोक्षमार्ग पर बढ़ूं निरन्तर, होवे केवलज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं नारक-क्रूर परिणाम प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नारकों की उत्कृष्ट आयु का प्रमाण

तेष्वेक-त्रि-सप्त-दश-सप्तदश-द्वाविंशति-त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः ।।6।।

प्रथम नरक में आयु अधिकतम, क्रमशः सागर एक रही।

तीन सप्त दश सत्रह बाइस, तैंतीस सागर रूप कही।।

उष्ण वेदना रही पाँचवे, नरक के दो भागों पर्यंत।

एक भाग से शीत वेदना, सप्तम नर्क में मानो अंत।।

जिन तत्त्वार्थ सूत्र के द्वारा, भव की बाधा होय विनाश।

मोक्षमार्ग पर बढ़ूं निरन्तर, होवे केवलज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं नरकायु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ द्वीपों के नाम

जम्बूद्वीप-लवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ॥7॥

लोकालोक के मध्य में भाई, जम्बूद्वीप कहावे।
द्वीप समुद्र उसे घेरे हैं, शुभ संज्ञा को पावे॥
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्ट कर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ॥

ॐ ह्रीं द्वीपाब्धि नाम प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीप और समुद्रों का विस्तार और आकार

द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्व-पूर्व-परिक्षेपिणो वलयाकृतयः ॥8॥

जम्बूद्वीप से दुगने-दुगने, सागर द्वीप कहे हैं।
एक दूसरे को घेरे हैं, गोलाकार रहे हैं॥
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्ट कर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ॥

ॐ ह्रीं द्वीपाब्धि स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमेरू गिरि एवं जम्बू द्वीप का विस्तार तथा आकार

तन्मध्ये मेरु-नाभिर्वृत्तो योजन-शतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ॥9॥

जम्बूद्वीप के मध्य सुमेरु, नाभि रूप रहा है।
एक लाख योजन का भाई, मेरु उच्च कहा है॥
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्ट कर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ॥

ॐ ह्रीं सुमेरु गिरि स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सात क्षेत्रों के नाम

भरत-हैमवत-हरि-विदेह-रम्यक-हैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ॥10॥

जम्बूद्वीप में सात क्षेत्र हैं, भरत हैमवत जानो।
हरि विदेह रम्यक् हैरण्यवत, ऐरावत पहिचानो॥
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्ट कर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्य सप्त क्षेत्र नाम प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेत्रों के सात विभाग करने वाले छह पर्वतों के नाम

तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिम-वन्निषध-नील-रुक्मि-शिखरिणो वर्षधर-पर्वताः ॥11॥

हिमवन और महाहिमवन शुभ, निषध नील रुक्मि शिखरिन।
सप्त क्षेत्र का करें विभाजन, ऐसा कहते हैं श्री जिन॥
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्ट कर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्य षट् कुलाचल नाम प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुलाचलों का रंग

हेमार्जुन-तपनीय-वैडूर्य-रजत-हेममयाः ॥12॥

स्वर्ण रजत अरु तप्त स्वर्ण सम, क्रमशः रंग पहिचानो।
नील मणि अरु रजत स्वर्ण सम, सर्व कुलाचल जानो॥
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्टकर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्य कुलाचल वर्ण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुलाचलों का विशेष रूप

मणिविचित्र-पार्श्वा उपरिमूले च तुल्य-विस्ताराः ॥13॥

चित्र विचित्र मणि से सज्जित, गिरि के तट भी जानो।
ऊपर नीचे मध्य एक से, भाई तुम पहिचानो॥
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्ट कर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ॥

ॐ ह्रीं कुलाचलस्य विशेष रूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुलाचलों के ऊपर स्थित सरोवरों के नाम

पद्म-महापद्म-तिगिञ्छ-केशरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीका ह्रदा-स्तेषामुपरि॥14॥

पद्म सरोवर महापद्म अरु, तिगिंछ केशरी जानो।
महापुण्डरीक पुण्डरीक यह, छह पर्वत पर मानो॥
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्ट कर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्य कुलाचल स्थित सरोवराणां नाम प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम सरोवर की लम्बाई-चौड़ाई

प्रथमो योजन-सहस्रायामस्तदर्द्ध-विष्कम्भो ह्रदः ॥15॥

प्रथम सरोवर की लंबाई, योजन सहस्र की जानो।
चौड़ाई उससे आधी है, पंच शतक की मानो॥
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्ट कर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्य प्रथम ह्रदस्य विस्तार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम सरोवर की गहराई

दशयोजना-वगाहः ॥16॥

प्रथम सरोवर की गहराई, दश योजन कहलाई।
निर्मल जल से भरा हुआ है, पदम सरोवर भाई॥
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्ट कर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्य प्रथम सरोवरस्य अवगाहन स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उसके मध्य में क्या है

तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ॥17॥

पद्म सुहृद के मध्य रहा है, पुष्कर योजन वाला।
सम सामायिक होता है जो, दिखता सुन्दर आला॥
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्ट कर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपे प्रथम सरोवरे पुष्कर स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महापद्म सरोवरों में तथा उनमें रहने वाले कमलों का प्रमाण

तद्द्विगुण-द्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ॥18॥

(छन्द-जोगीरासा)

दूना-दूना प्रथम सरोवर, से विस्तार रहा।
प्रथम से दूजे ह्रद अरु पुष्कर, के अनुसार कहा॥
तीजा-चौथा है समान फिर, आधा-आधा है।
लम्बा-चौड़ा गहरा जानो, कोई न बाधा है॥

हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्टकर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपे महापद्मादि ह्रद-पुष्करादि स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह कमलों में रहने वाली छह देवियाँ

तन्निवासिन्यो देव्यः श्री-ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिक-परिषत्काः ॥19॥

श्री ह्री धृति कीर्ति अरु बुद्धि, लक्ष्मी देवी जानो।
सामानिक परिषद देवों की, आयु पल्य की मानो।।
कमल कर्णिका मध्य भवन में, रहते हैं सब भाई।
एक कोष का भवन है लम्बा, अर्ध कोष चौड़ाई।।
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्टकर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपे सरोवर मध्ये पुष्करेषु स्थित देव देव्यानाम् स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह महा नदियों के नाम

गङ्गा-सिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकान्ता-सुवर्ण-रूप्य-कूला-रक्ता-रक्तोदाः सरित-स्तन्मध्यगाः ॥20॥

सात क्षेत्र में चौदह नदियाँ, नित्य गति से बहतीं।
नदियाँ एक क्षेत्र में दो-दो, पूरब पश्चिम रहतीं।।
गंगा सिन्धु रोहित रोहितास्या, हरित हरिकांता जानो।
सीता सीतोदा नारी नरकांता, सुवर्ण रूप्यकूला मानो।।
रक्ता रक्तोदा मिलकर सब, चौदह नदियाँ रहतीं।
यह सब एक क्षेत्र में दो-दो, पूरब पश्चिम बहतीं।।

गंगा सिन्धु रोहितास्या ये, पद्म सरोवर से बहतीं।
महापद्म से रोहित सरिता, हरित सदा बहती रहतीं।।
महापद्म से रोहितास्या अरु, हरित करे मन मोहित।।
अरु तिगिंछ से हरिकांता शुभ, सीता नदी निकलती।
केसरी से सीतोदा नारी, सागर में जा मिलती।।
महापुण्डरीक से नरकांता, और स्वर्ण कूला जानो।
पुण्डरीक से रूप्य कूला अरु, रक्ता रक्तोदा मानो।।
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्ट कर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपे चतुर्दश महानदीनाम् स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नदियों के बहने का क्रम

द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ।।21।।

सब युगलों की पहली सरिता, पूर्व दिशा में बहती।
लवण समुद्र में हुई समाहित, उसमें मिलकर रहती।।
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्ट कर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपे महानदीनाम् युगलानाम पूर्व पूर्व सरिता गति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेष नदियों का क्रम

शेषास्त्वपरगाः ।।22।।

शेष सभी युगलों की नदियाँ, पश्चिम में जा बहतीं।
लवण समुद्र में जाकर मिलती, उसमें मिलकर रहतीं।।
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्ट कर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपे महानदी युगलानाम् अपर-अपर सरिता गति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन चौदह महानदियों की सहायक नदियाँ

चतुर्दश-नदी-सहस्र-परिवृता गङ्गा-सिन्ध्वादयो नद्यः ॥23॥

चौदह सहस सहायक नदियाँ, प्रथम युगल की जानों।
अट्ठाइस सहस्र सहायक नदियाँ, द्वितीय की पहिचानों॥
तृतीय युगल हरित हरिकान्ता, की छप्पन हैं भाई।
एक लाख बारह हजार शुभ, चौथे की बतलाई॥
पंचम की छप्पन हजार शुभ, नदियाँ कहीं सहायक।
अट्ठाइस हजार सहायक नदियाँ, षष्ठम् में हैं लायक॥
चौदह सहस सहायक नदियाँ, सप्तम युगल में जानो।
जैनागम में कथन किया यह, सत्य यही पहिचानो॥
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्ट कर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपे चतुर्दश महानदीभिः सह सरिता गति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरत क्षेत्र का विस्तार

भरतः षड्विंशति-पञ्चयोजनशत-विस्तारः षट् चैकोनविंशति-भागा योजनस्य ॥24॥

भरत क्षेत्र का पाँच सौ छब्बिस, योजन है विस्तारा।
योजन के उन्नीस भाग से, रहा भाग छह न्यारा॥
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्टकर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रस्य विस्तार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगे के क्षेत्र और पर्वतों का विस्तार

तद्द्विगुण-द्विगुण-विस्तारा वर्षधर-वर्षा विदेहान्ताः ॥25॥

हिमवन सौ योजन ऊँचा है, पच्चिस है गहराई।
महाहिमवन दो सौ योजन का, गहरा पचास है भाई॥
निषध चार सौ योजन ऊँचा, सौ योजन गहराई।
नील चार सौ योजन ऊँचा, गहरा सौ है भाई॥
रुक्मि दो सौ योजन ऊँचा, है पचास गहराई।
शिखरिन सौ योजन ऊँचा है, गहरा पच्चिस भाई॥
यह सब दुगने हैं विदेह तक, फिर आधे हैं भाई।
जैनागम में श्री जिनेन्द्र ने, महिमा ये बतलाई॥
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्ट कर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्य अन्य क्षेत्र गिरि विस्तार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विदेह क्षेत्र के आगे के पर्वत और क्षेत्रों का विस्तार

उत्तरा-दक्षिण-तुल्याः ॥26॥

गिरि क्षेत्रों की दक्षिण में ज्यों, रचना कही है भाई।
उसी तरह उत्तर में बन्धु, सब रचना बतलाई॥
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्ट कर्म का नाश करें फिर, शिव पदवी को पाएँ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपे विदेह क्षेत्रानन्तरे अन्य गिरिक्षेत्र विस्तार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरत और ऐरावत क्षेत्र में काल चक्र का परिवर्तन

भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्या-मुत्सर्पिण्य-वसर्पिणीभ्याम्॥27॥

छंद-ताटंक

भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, होय काल का परिवर्तन।
उत्सर्पिणी में वृद्धि होती, अवसर्पिणी में होय हनन॥
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, का होता है भाई कल्प।
छह भेदों में बटे हैं दोनों, इससे जरा न होते अल्प॥
प्रथम काल चउ कोटा-कोटी, सागर का सुषमा-सुषमा।
तिय कोटी का द्वितीय सुषमा, दो का है सुषमा दुषमा॥
कोटा-कोटी में ब्यालिस कम, सहस रहा दुषमा सुषमा।
इक्कीस-इक्कीस सहस के दोनों, दुषमा अरु दुषमा-दुषमा॥
अवसर्पिणी के काल कहे यह, उत्सर्पिणी के हैं विपरीत।
ज्ञान अवगाह उम्र बल बुद्धि, पूर्वक होते काल व्यतीत॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, अपने हृदय सजाते हैं।
भक्तिभाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं भरतैरावत क्षेत्रे कालचक्र परिवर्तन प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्य भूमियों की व्यवस्था

ताभ्यामपरा भूमयोऽव-स्थिताः॥28॥

परिवर्तन न होय काल का, भरतैरावत को छोड़ कहीं।
एक अवस्था रहती हरदम, कोई अन्तर होय नहीं॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, अपने हृदय सजाते हैं।
भक्तिभाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं भरतैरावत रहित अन्य क्षेत्रे कालचक्र प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैमवतक इत्यादि क्षेत्रों में आयु

एक-द्वि-त्रि-पल्योपम-स्थितयो हैमवतक-हारि-वर्षक दैवकुरवका: ॥29॥

एक पल्य द्वय तीन पल्य की, आयु होती कई प्रकार।
हैमवतक हरिवर्षक में अरु, देव कुरु में क्रम अनुसार॥
मानव की ऊँचाई उनमें, एक दोय त्रय कोष प्रमाण।
नीले श्वेत अरु पीत रंग में, मानव होते शोभावान॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, अपने हृदय सजाते हैं।
भक्तिभाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपे हेमवतादि क्षेत्रेषु/क्षेत्राणाम् आयु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैरण्यवतकादि क्षेत्रों में आयु

तथोत्तरा: ॥30॥

उत्तर में उत्तर कुरु रम्यक्, हैरण्यवत इनके विपरीत।
उनमें आयु रंग ऊँचाई, नर पशु करते हैं व्यतीत॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, अपने हृदय सजाते हैं।
भक्तिभाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपे हैरण्यवतादि क्षेत्राणाम् आयु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विदेह क्षेत्रों में आयु की व्यवस्था

विदेहेषु संख्येय-काला: ॥31॥

पर विदेह में आयु भाई, नर पशु की संख्यातों वर्ष।
धनुष पाँच सौ है ऊँचाई, जीते कोटी वर्ष सहर्ष॥

होता है पूर्वांग चौरासी, लाख वर्ष का जग में सिद्ध।
लख चौरासी पूर्वांगों का, पूर्व लोक में रहा प्रसिद्ध।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, अपने हृदय सजाते हैं।
भक्तिभाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रेषु आयु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरत क्षेत्र का दूसरी तरह विस्तार

भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवति-शत-भागः ।।32।।

जम्बूद्वीप के एक सौ नब्बे, भाग भरत का है विस्तार।
एक लाख योजन का जम्बू, द्वीप कहा है मंगलकार।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, अपने हृदय सजाते हैं।
भक्तिभाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रस्य विस्तार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातकी खण्ड का वर्णन

द्विर्धातकीखण्डे।।33।।

भरत क्षेत्र से दूनी रचना, उससे दूना है विस्तार।
क्षेत्र धातकी खण्ड द्वीप में, मनमोहक है अपरम्पार।।
पूर्व क्षेत्र में विजय मेरु है, अचल रहा पश्चिम की ओर।
वन उपवन अरु सरिताओं की, रचना करती भाव विभोर।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, अपने हृदय सजाते हैं।
भक्तिभाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड द्वीप स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध द्वीप का वर्णन

पुष्करार्द्धे च ।।34।।

दूनी रचना पुष्करार्ध में, रही धातकी खण्ड समान।
पूर्व दिशा में मंदरमेरू विद्युन्माली इतर महान्।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, अपने हृदय सजाते हैं।
भक्तिभाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीपस्य स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनुष्य क्षेत्र

प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः ।।35।।

मानुषोत्तर गिरि पुष्करवर के, मध्य में फैला चारों ओर।
पार नहीं कर सकते मानव, कितना कोई लगावे जोर।
ऋद्धिधारी विद्याधर भी, पार नहीं कर सके कभी।
जैनागम के श्रेष्ठ कथन पर, श्रद्धा धारो जीव सभी।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, अपने हृदय सजाते हैं।
भक्तिभाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं मनुजानाम् गति स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनुष्यों के भेद

आर्या म्लेच्छाश्च ।।36।।

दो हैं भेद मनुष्यों के शुभ, आर्य म्लेच्छ लोक विख्यात।
ऋद्धि प्राप्त अरु इतर भेद दो, आर्यों में होते हैं ज्ञात।।
हम तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, सम्यक्ज्ञान जगाएँ।
अष्ट कर्म का नाश करें, अरु शिव पदवी को पाएँ।।36।।

ॐ ह्रीं मानव जाति भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मभूमि का वर्णन

भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तर-कुरुभ्यः ।।37।।

देव कुरु उत्तर कुरु वर्जित, कर्म भूमियाँ कहीं महान्।
पंच भरत ऐरावत में अरु, पंच विदेहों के स्थान।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, अपने हृदय सजाते हैं।
भक्तिभाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं कर्मभूमि स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनुष्यों की उत्कृष्ट तथा जघन्य आयु

नृस्थिती पराऽवरे त्रिपल्यो-पमान्तर्मुहूर्ते ।।38।।

पंच भरत ऐरावत में अरु, पंच विदेहों के स्थान।
सर्व परापर आयु नर की, बतलाते हैं जिन भगवान।।
तीन पल्य आयु मनुष्य की, जैनागम में कही जिनेश।
है जघन्य अन्तर्मुहूर्त की, मध्यम जानो सर्व अशेष।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, अपने हृदय सजाते हैं।
भक्तिभाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं मनुजानाम् उत्कृष्ट जघन्य आयु स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिर्यंचों की आयु स्थिति

तिर्यग्योनिजानां च ।।39।।

पशुओं में भी जानो भाई, मानव सम आयु उत्कृष्ट।
अरु जघन्य आयु भी इतनी, जैनागम में कही विशिष्ट।।

जिन तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, अपने हृदय सजाते हैं।
भक्तिभाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं तिर्यञ्चाणाम् उत्कृष्ट जघन्य आयु स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ

अधो मध्य दोनों लोकों की, रचना जानी सर्व प्रकार।
जीवों के उत्पाद भ्रमण को, जाना आगम के अनुसार।।
महिमा अगम है जिन शासन की, कहने को हैं शब्द नहीं।
करके सत् श्रद्धान आचरण, भटको न हे जीव ! कहीं।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, अपने हृदय सजाते हैं।
भक्तिभाव से महिमा गाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं अधोमध्य लोकस्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तृतीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य : **– ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत जीव तत्त्व निरूपक श्री उमास्वामी विरचित तृतीय अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

दोहा– ऊर्ध्व अधः द्वय लोक का, जाना हमने हाल।
अब तृतीय अध्याय की, गाते हैं जयमाल।।

(तर्ज – हे दीन बन्धु...)

चारों गति में घूमकर, बहु दुःख हम सहे।
संसार सुख की चाह में, हम घूमते रहे।।
नरकों की सात भूमियों, में नारकी रहे।
शाश्वत निगोद जीव, अधः उससे भी कहे।।1।।

शाश्वत निगोद होता, दुःखों की खान है।
कर्मों का भारी बंध किया, हो अंजान है।।

आतम स्वरूप को कभी, हम जान न पाए।
अति राग-द्वेष-मोह के हम, गीत बहु गाए॥2॥

संसार यह असार है, बहु दुःख रूप है।
जीवन का अन्त पाते, जो रंक भूप है॥
पापों को करने वाले, नरकों में जाएँगे।
वहाँ छेद भेद बंध के, कई दुःख पाएँगे॥3॥

लड़ते हैं क्रोध करके, संताप से भरे।
अम्बावरीश देव, लड़ाते वहाँ अरे !॥
आयु को पूर्ण करके, मानव पशु बने।
पाते हैं छेद भेदन, बंधन के दुख घने॥4॥

रहते हैं भूखे-प्यासे, ढोते जो भार हैं।
चाबुक औ डंडे आदि, से खाते मार हैं॥
मानव गति में गर्भ के, नौ माह दुख सहे।
माँ के उदर में उल्टे, लटके सदा रहे॥5॥

बहु कष्ट सहे जन्म के, उनकी कथा कहाँ।
भव-भव में जन्म हमने, पाए हैं कई महाँ॥
बालक अवस्था सारी, अज्ञान में गई।
पाकर के दीन हीनता, सहते हैं दुख कई॥6॥

यौवन अवस्था पाके, मद होश हो गये।
सद्धर्म ज्ञान चारित, सारे ही खो गये॥
संतान की फिकर में, संतोष न रहा।
चिंता में सारा जीवन, बीता सदा अहा॥7॥

वृद्धावस्था पाके, लाचार हो गये।
जितने सजाए थे सब, अरमान खो गये॥

आया बुलावा काल का, सब छोड़ चल दिए।
हँसते कोई रोते हैं, सब स्वार्थ के लिए॥8॥

मानव पशु का वास रहा, ढाई द्वीप में।
पशुओं का वास होता, अन्तिम सुदीप में॥
पाकर के देव दुर्गति, भवनों में जा गिरे।
बनकर के देव व्यंतर, तिय लोक में फिरे॥9॥

मानव तिर्यंच दोनों, इस लोक में रहे।
भोगों को पाने वाले, भोग भूमियाँ कहे॥
इस मध्य लोक में कई, सागर सुदीप हैं।
क्षेत्रों में नदी पर्वत, उनके समीप हैं॥10॥

संवेग भाव पाने, वर्णन किया गया।
संदेश प्राणियों ने, पाया है कुछ नया॥
अब जान हाल जग की, होना विरक्त है।
श्रीदेव शास्त्र गुरु का, बनना जो भक्त है॥11॥

वैराग्य प्राप्त करके संयम को पाएँगे।
संसार वास तजकर, शिवपुर को जाएँगे॥
सिद्धों को सौख्य अनुपम, जिसका ना पार है।
चरणों में उनके वन्दन, मम बार-बार है॥12॥

दोहा- पूजा करके भाव से, करूँ कर्म का नाश।
जन्म-मरण को नाश कर, छूटे यह भव वास॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्र प्रणीत श्री उमास्वामी विरचित अधो मध्यलोक स्वरूप जयमाला प्ररूपक तृतीय अध्यायस्य सूत्र समूहेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भक्ति भाव से पूजते, जैनागम का सार।
प्राप्त करूँ जिन धर्म को, जग में अपरम्पार॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

चतुर्थ अध्याय

स्थापना

जग में दुखकर रहे स्वर्ग सुख, भोगों में मद होश करें।
पाकर उनको जीव जगत् के, पर पद पा निज शक्ति हरें।।
वैभव लख ऊँचे देवों का, मन में क्लेश करें संताप।
नरकादि चउ गतियाँ पाकर, करते जीव अनेकों पाप।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र के द्वारा, हमको मिलता है सद्ज्ञान।
मोक्ष महल की राह प्राप्त हो, अतः करूँ उर में आह्वान।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित चतुर्थ अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्णिकाय देव स्थिति स्वरूप निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित चतुर्थ अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं चतुर्णिकाय देवानाम् वैभव निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित चतुर्थ अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

छंद-ताटंक

श्री जिनेन्द्र की वाणी पावन, श्रवण नहीं कर पाई है।
चतुर्गती के दुख मैटन की, मन में आज समाई है।।
निर्मल जल प्रासुक करके हम, आज चढ़ाने लाए हैं।
जन्म-जरादी दुख मैटन के, मन में भाव जगाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित चतुर्थ अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से शीतलता हमको, जरा नहीं मिल पाई है।
भव संताप मिटाने की सुधि, मन में आज समाई है।।

भक्ति भाव से चंदन लेकर, आज चढ़ाने आए हैं।
भव आताप नशाने के शुभ, मन में भाव जगाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित चतुर्थ अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अखण्ड अनुपम अक्षय पद, प्राप्त नहीं कर पाए हैं।
प्राप्त किए पद तीन लोक के, पर पद में अटकाएँ हैं।।
शालिधान्य के अक्षय अक्षत, आज चढ़ाने आए हैं।
परम अखण्डित अक्षय पद के, मन में भाव जगाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित चतुर्थ अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव के फेरे में पड़ करके, फेरे बहुत लगाए हैं।
काम वासना के द्वारा हम, भव-भव में भटकाए हैं।।
फूले-फूले फूल मनोहर, आज चढ़ाने आए हैं।
कामबाण के नाश हेतु शुभ, मन में भाव जगाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित चतुर्थ अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा नाश करने को हमने, षट्रस व्यंजन खाए हैं।
व्यंजन खाकर के रसना को, शांत नहीं कर पाए हैं।।
ले नैवेद्य थाल में भरकर, आज चढ़ाने लाए हैं।
क्षुधा वेदना नाश होय यह, मन में भाव जगाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित चतुर्थ अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर के कारण सारे, जग में हम भटकाए हैं।
सम्यक् ज्ञानदीप की ज्योति, नहीं जलाने पाए हैं।।
दिव्य देशना के दीपों को, आज जलाने आए हैं।
मोह अंध का दुख मैटन के, मन में भाव जगाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित चतुर्थ अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टकर्म आठों अंगों में, अपना बंधन डाले हैं।
भूल स्वयं की शक्ति चेतना, कीन्हें कर्म हवाले हैं।।
अष्ट गंध मय धूप मनोहर, आज जलाने लाए हैं।
अष्ट कर्म का दहन करूँ मैं, मन में भाव जगाये हैं।।7।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित चतुर्थ अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में जितने फल हैं, सारे हमने खाए हैं।
सफल हुआ न जीवन मेरा, खा-खाकर पछताए हैं।।
मोक्ष महाफल पाने को फल, आज चढ़ाने लाए हैं।
महामोक्ष फल पाने के शुभ, मन में भाव जगाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित चतुर्थ अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र कुबेर चक्रवर्ति सम, पद हमने सब पाए हैं।
नश्वर पद की लालच में कई, धोखे हमने खाए हैं।।
पद अनर्घ को पाने हेतु, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
हो अनर्घ पद प्राप्त हमें यह, मन में भाव जगाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं जीव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित चतुर्थ अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा- तीन लोक के पाए हैं, सारे ही सुख भोग।
भोगों से मिलता सदा, दुःखों का संयोग॥
अब चतुर्थ अध्याय का, करते हैं व्याख्यान।
पुष्पांजलि करते विशद, पाने सम्यक् ज्ञान॥

(अथ चतुर्थवलयो परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सूत्र प्रारम्भ

देवों के भेद

देवाश्चतुर्णिकायाः ॥1॥

(रोला-छंद)

चतुर्निकाय के देव कहे हैं, आगम से जानो।
भावन व्यंतर ज्योतिषवासी, वैमानिक मानो॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा कौन कहे।
जैनागम को जानो भाई, दृढ़ श्रद्धान रहे॥

ॐ ह्रीं देवानाम् भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवनत्रिक देवों में लेश्या का विभाग

आदितस्त्रिषु पीतान्त-लेश्याः ॥2॥

भावन व्यंतरवासी ज्योतिष, तिय निकाय जानो।
कृष्ण नील कापोत लेश्या, इनमें पहिचानो॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा कौन कहे।
जैनागम को जानो भाई, दृढ़ श्रद्धान रहे॥

ॐ ह्रीं भवनत्रिक देवानाम् लेश्या विभाग प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार निकाय के देवों के भेद

दशाष्ट-पञ्च द्वादश विकल्पाः कल्पोपपन्न-पर्यन्ताः ॥3॥

भवन वासियों के दश व्यंतर, के भी आठ कहे।
ज्योतिष के हैं पंच भेद अरु, द्वादश कल्प रहे॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा कौन कहे।
जैनागम को जानो भाई, दृढ़ श्रद्धान रहे॥

ॐ ह्रीं चतुर्णिकाय देवानाम् भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों के सामान्य भेद

इन्द्र-सामानिक-त्रायस्त्रिंशपारिषदात्मरक्ष-लोकपालानीक-प्रकीर्णकाभियोग्य-किल्विषिका-श्चैकशः ॥4॥

सब देवों में इन्द्र सामानिक, त्रायस्त्रिंश जानो।
पारिषद अरु आत्मरक्ष शुभ, लोकपाल मानो॥
कहे अनीक प्रकीर्णक भाई, आभियोग्य रहे।
किल्विष सहित भेद होते दश, यह सामान्य कहे॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा कौन कहे।
जैनागम को जानो भाई, दृढ़ श्रद्धान रहे॥

ॐ ह्रीं देवानाम् दश सामान्य भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंतर और ज्योतिषी देवों में इन्द्र आदि भेदों की विशेषता

त्रायस्त्रिंशलोकपाल-वर्ज्या व्यन्तर-ज्योतिष्काः ॥5॥

त्रायस्त्रिंश अरु लोकपाल को, आगम से जानो।
व्यंतर ज्योतिष में न होते, भाई पहिचानो॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा कौन कहे।
जैनागम को जानो भाई, दृढ़ श्रद्धान रहे॥

ॐ ह्रीं व्यंतर-ज्योतिष्क देवयो भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवो में इन्द्रों की व्यवस्था

पूर्वयोद्वीन्द्राः ॥6॥

दो-दो इन्द्र भवनवासी अरु, व्यंतर में जानो।
इन्द्र कहे जितने प्रतीन्द्र भी, उतने पहिचानो॥
बीस भवनवासी के सोलह, व्यंतर के जानो।
बारह इन्द्र रहे कल्पों के, अड़तालिस मानो॥
इतने होते हैं प्रतीन्द्र भी, इन्द्र चन्द्र गाया।
शेर और चक्री प्रतीन्द्र शुभ, सूरज कहलाया॥
श्री जिनेन्द्र के चरण शरण में, यह शतेन्द्र आवें।
जिन भक्ति अरु चैत्य वंदना, करके हर्षावें॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा कौन कहे।
जैनागम को जानो भाई, दृढ़ श्रद्धान रहे॥

ॐ ह्रीं पूर्व द्वयनिकाय देवयो इन्द्र व्यवस्था प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों का काम सेवन सम्बन्धी वर्णन

काय-प्रवीचारा आ ऐशानात्॥7॥

तीन निकाय प्रथम के भाई, प्रथम युगल जानो।
सौधर्म स्वर्ग ईशान स्वर्ग को, भाई पहिचानो॥
इनके हो प्रविचार काय से, मानव सम भाई।
जैनागम में प्रवीचार को, माना दुखदाई॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा कौन कहे।
जैनागम को जानो भाई, दृढ़ श्रद्धान रहे॥

ॐ ह्रीं ईशान स्वर्गपर्यन्त देवानाम् काय-प्रवीचार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेष का काम सेवन

शेषाः स्पर्श-रूप-शब्द-मनः-प्रवीचाराः ॥8॥

सनत कुमार माहेन्द्र स्वर्ग में, प्रवीचार जानो।
हो स्पर्श के द्वारा भाई, सत्य यही मानो॥
इसके आगे चार स्वर्ग में, रूप से हो भाई।
नौ से बारह स्वर्ग में बंधु, शब्दों से पाई॥
अन्तिम चार स्वर्ग में भाई, मन से बतलाया।
प्रवीचार सोलह स्वर्गों में, इसी तरह गाया॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा कौन कहे।
जैनागम को जानो भाई, दृढ़ श्रद्धान रहे॥

ॐ ह्रीं सनतकुमारात् अच्युत स्वर्गपर्यन्त सर्व कल्पवासी देवानाम् प्रवीचार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगे के देवों में काम सेवन नहीं है

परेऽप्रवीचाराः ॥9॥

ग्रैवेयक अरु अनुदिश में न, प्रवीचार होवें।
पंच अनुत्तर वासी भाई, प्रवीचार खोवें॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा कौन कहे।
जैनागम को जानो भाई, दृढ़ श्रद्धान रहे॥

ॐ ह्रीं कल्पातीत देवानाम् अप्रवीचार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवनवासी देवों के दस भेद

भवनवासिनोऽसुर-नाग-विद्युत्सुपर्णाग्नि-वातस्त-नितोदधि-द्वीप-दिक्कुमाराः ॥10॥

असुर कुमार नाग विद्युत अरु, सुपर्णाग्नि जानो।
वात स्तनित उदधि द्वीप दिक्, भाई पहिचानो॥

यह दश भेद भवनवासी के, होते हैं भाई।
जो कुमार सम दिखते सुंदर, यह प्रभुता पाई।।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा कौन कहे।
जैनागम को जानो भाई, दृढ़ श्रद्धान रहे।।

ॐ ह्रीं भवनवासी देवानाम् दश भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंतर देवों के आठ भेद

व्यन्तराः किन्नर-किंपुरुष-महोरग-गन्धर्व-यक्ष-राक्षस-भूत-पिशाचाः।।11।।

किन्नर किंपुरुष और महोरग, गंधर्व यक्ष जानो।
राक्षस भूत पिशाच आठ यह, व्यंतर पहिचानो।।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा कौन कहे।
जैनागम को जानो भाई, दृढ़ श्रद्धान रहे।।

ॐ ह्रीं व्यंतर देवानाम् अष्ट भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिषी देवों के पाँच भेद

ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्र-प्रकीर्णक-तारकाश्च।।12।।

पञ्च भेद ज्योतिष देवों के, सूर्य चन्द्र जानो।
ग्रह नक्षत्र प्रकीर्णक तारे, भाई पहिचानो।।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा कौन कहे।
जैनागम को जानो भाई, दृढ़ श्रद्धान रहे।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्क देवानाम् पंचभेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिषी देवों का विशेष वर्णन

मेरु-प्रदक्षिणा नित्य-गतयो नृलोके।।13।।

नित्य प्रदक्षिणा मेरु गिरि की, सुर ज्योतिष वासी।
मध्य लोक के ढाई द्वीप में, देते हैं खासी।।

ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा कौन कहे।
जैनागम को जानो भाई, दृढ़ श्रद्धान रहे।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्क देवानाम् कर्त्तव्य प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उनसे होने वाला कालविभाग

तत्कृतः काल-विभागः ।।14।।

गतिशील ज्योतिष वासी के, द्वारा तुम जानो।
काल विभाग घड़ी घंटा पल, आदी पहिचानो।।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा कौन कहे।
जैनागम को जानो भाई, दृढ़ श्रद्धान रहे।।

ॐ ह्रीं काल विभाग प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढाई द्वीप के आगे ज्योतिषी देव स्थिर हैं

बहिरवस्थिताः ।।15।।

इसके बाहर स्थिर होते, ज्योतिष के वासी।
संख्यातीत द्वीप सागर सब, होते अविनाशी।।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा कौन कहे।
जैनागम को जानो भाई, दृढ़ श्रद्धान रहे।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध परेस्थित ज्योतिष्क देवानाम् स्थिरता प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैमानिक देवों का वर्णन

वैमानिकाः ।।16।।

वीर-छंद

वैमानिक देवों का वर्णन, करते आगम के अनुसार।
ऊर्ध्व लोक में अकृत्रिम शुभ, है विमान सुंदर मनहार।।

ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा जग में अपरंपार।
मोक्षमार्ग दर्शाने वाला, दिनकर जग में मंगलकार।।

ॐ ह्रीं वैमानिक देव विमान स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैमानिक देवों के भेद

कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ।।17।।

वैमानिक के भेद कहे दो, कल्पोपपन्न अरु कल्पातीत।
पुण्ययोग से पाते प्राणी, भोग भोगते उपमातीत।।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा जग में अपरंपार।
मोक्षमार्ग दर्शाने वाला, दिनकर जग में मंगलकार।।

ॐ ह्रीं वैमानिक देवानाम् भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पों की स्थिति का क्रम

उपर्युपरि ।।18।।

अष्ट युगल में ऊपर-ऊपर, स्वर्ग बने हैं मंगलकार।
तीन-तीन के तीन ग्रैवेयक, बने हुए हैं अपरंपार।।
नव अनुदिश उनके ऊपर हैं, पाँच अनुत्तर रहे महान्।
तीर्थंकर जिन समवशरण में, ऐसा करते हैं व्याख्यान।।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा जग में अपरंपार।
मोक्षमार्ग दर्शाने वाला, दिनकर जग में मंगलकार।।

ॐ ह्रीं कल्प-स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैमानिक देवों के रहने के स्थान

सौधर्मै-शान-सानत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर-लान्तव-कापिष्ठ-शुक्र-महाशुक्र-शतार-सहस्रारेष्वानत-प्राण-तयो-रारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्त-जयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥19॥

सोलह स्वर्ग कहे आगम में, क्रमशः हैं सौधर्मैशान।
सनत कुमार माहेन्द्र ब्रह्म अरु, ब्रह्मोत्तर लांतव पहिचान॥
है कापिष्ठ शुक्र अरु भाई, महाशुक्र सतार सहस्रार।
आनत प्राणत आरण अच्युत, ग्रैवेयक नव हैं मनहार॥
प्रथम सुदर्शन सुप्रबुद्ध शुभ, सुविशाल है अमोघ महान्।
सुमन सोमनश और यशोधर, है सुभद्र प्रीतिंकर जान॥
अनुदिश अर्चि अर्चिमाली, वैरोचन अदित्य प्रभास।
अर्चिविशिष्ट अर्चिरावर्त अरु, अर्चिमाध्य अर्चिप्रभ खास॥
विजय वैजयन्त अरु जयन्त शुभ, अपराजित सर्वार्थसिद्धी।
अनुदिश और अनुत्तर में है, इन सब नामों की सिद्धी॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा जग में अपरंपार।
मोक्षमार्ग दर्शाने वाला, दिनकर जग में मंगलकार॥

ॐ ह्रीं वैमानिक देवानाम् निवास स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैमानिक देवों में उत्तरोत्तर अधिकता

स्थिति-प्रभाव-सुख-द्युति-लेश्या-विशुद्धीन्द्रियावधि-विषय-तोऽधिकाः ॥20॥

स्थिति प्रभाव सुख द्युति लेश्या, श्रेष्ठ विशुद्ध बढ़ती जाय।
इन्द्रिय अवधिज्ञान विषयों में, आगे वृद्धि कही जिनाय॥
ऊपर-ऊपर के विमान में, अधिक-अधिक होते हैं भ्रात।
पुण्य उदय से पाते प्राणी, आगम से यह होता ज्ञात॥

ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा जग में अपरंपार।
मोक्षमार्ग दर्शाने वाला, दिनकर जग में मंगलकार॥

ॐ ह्रीं वैमानिक देवानाम् स्थिति प्रभाव सुखादि आधिक्य प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैमानिक देवों में उत्तरोत्तर हीनता

गतिशरीर-परिग्रहाऽभिमानतो हीनाः ॥21॥

गति शरीर अभिमान परिग्रह, ऊपर-ऊपर होवे हीन।
सुख कल्पों में देवों के सब, होते हैं यह पुण्याधीन॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा जग में अपरंपार।
मोक्षमार्ग दर्शाने वाला, दिनकर जग में मंगलकार॥

ॐ ह्रीं वैमानिक देवानाम् गति शरीर परिग्रहादि हीनता प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैमानिक देवों में लेश्या का वर्णन

पीत-पद्म-शुक्ल-लेश्या द्वि-त्रि-शेषेषु॥22॥

द्वय युगलों में पीत लेश्या, त्रय युगलों में पद्म कही।
आगे शेष विमानों में शुभ, शुक्ल लेश्या मुख्य रही॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा जग में अपरंपार।
मोक्षमार्ग दर्शाने वाला, दिनकर जग में मंगलकार॥

ॐ ह्रीं वैमानिक देवानाम् लेश्या प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्प संज्ञा कहाँ तक है

प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ॥23॥

ग्रैवेयक के पहले-पहले, कल्प संज्ञा रही महान्।
सोलह स्वर्ग कल्प कहलाए, ऐसा कहते श्री भगवान॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा जग में अपरंपार।
मोक्षमार्ग दर्शाने वाला, दिनकर जग में मंगलकार॥

ॐ ह्रीं कल्प संज्ञा प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकान्तिक देव

ब्रह्म-लोकालया लौकान्तिकाः ॥24॥

ऊपर ब्रह्म स्वर्ग में रहते, वह लौकांतिक देव कहे।
धारी द्वादशांग पूरव के, ज्ञानी सब विद्वान रहे॥
तप कल्याणक में आते हैं, एक भवातारी जानो।
देव ऋषि कहलाते हैं जो, आठ भेद उनके मानो॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा जग में अपरंपार।
मोक्षमार्ग दर्शाने वाला, दिनकर जग में मंगलकार॥

ॐ ह्रीं लौकान्तिक देव निवास स्थान प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकान्तिक देवों के नाम

सारस्वतादित्यवह्न्य-रुण-गर्दतोय-तुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ॥25॥

सारस्वत आदित्य बह्नि अरु, अरुण गर्दतोय तुषित महान्।
अव्याबाध अरिष्ट भेद वसु, लौकांतिक के रहे प्रधान।
ईशानादि आठ दिशाओं में, आठों का रहा निवास।
चार लाख अरु सप्त सहस वसु, शतक बीस संख्या है खास॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा जग में अपरंपार।
मोक्षमार्ग दर्शाने वाला, दिनकर जग में मंगलकार॥

ॐ ह्रीं लौकान्तिक देवानाम् नाम प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुदिश और अनुत्तरवासी देवों के अवतार का नियम

विजयादिषु द्वि-चरमाः ॥26॥

विजय आदि के द्विचरमा हो, मोक्ष प्राप्त करते हैं देव।
सर्वार्थ सिद्धि के देव हमेशा, एक भवावतारी हों एव॥

ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा जग में अपरंपार।
मोक्षमार्ग दर्शाने वाला, दिनकर जग में मंगलकार॥

ॐ ह्रीं अनुदिश अनुत्तरवासी देवानाम् भव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिर्यञ्च कौन हैं?

औपपादिक-मनुष्येभ्यः शेषास्तिर्य-ग्योनयः॥27॥

औपपादिक हैं देव नारकी, अरु मानव को जानो भ्रात।
इन सबके अतिरिक्त लोक में, हों तिर्यंच योनि के ज्ञात॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा जग में अपरंपार।
मोक्षमार्ग दर्शाने वाला, दिनकर जग में मंगलकार॥

ॐ ह्रीं तिर्यञ्च जीव योनि प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवनवासी देवों की उत्कृष्ट आयु का वर्णन

स्थितिरसुर-नाग-सुपर्ण-द्वीपशेषाणां सागरोपम-त्रि-पल्योपमार्द्ध-हीन-मिताः॥28॥

भवन वासियों में असुरों की, आयु सागर एक प्रमाण।
नाग कुमार की तीन पल्य है, ढाई पल्य सुपर्ण की जान॥
द्वीप कुमार की रही पल्य दो, शेष सभी की डेढ़ प्रमाण।
यह उत्कृष्ट आयु बतलाते, जैनागम में श्री भगवान॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा को हम गाते हैं।
जैनागम को भाव सहित हम, सादर शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं भवनवासी देवानाम् उत्कृष्ट आयु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैमानिक देवों की उत्कृष्ट आयु

सौधर्मै-शानयोः सागरोपमे अधिके ।।29 ।।

दो सागर की आयु पाते, वैमानिक सौधर्मैशान।
घातायुष्क अधिक पाते कुछ, ऐसा कहते हैं भगवान।।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा को हम गाते हैं।
जैनागम को भाव सहित हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं सौधर्म ऐशान स्वर्गयोः देवानाम् उत्कृष्ट आयु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों की आयु

सानत्कुमार-माहेन्द्रयोः सप्त ।।30 ।।

सानत कुमार माहेन्द्र स्वर्ग में, आयु सागर सात प्रमाण।
घातायुष्क अधिक पाते कुछ, ऐसा कहते श्री भगवान।।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा को हम गाते हैं।
जैनागम को भाव सहित हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं सानतकुमार माहेन्द्र स्वर्गयोः देवानाम् उत्कृष्ट आयु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्य देवों की आयु

त्रि-सप्त-नवैकादश-त्रयोदश-पञ्चदश-भिरधिकानि तु ।।31 ।।

ब्रह्म युगल में दस सागर की, लान्तव युगल में चौदह जान।
शुक्र युगल में सोलह सागर, अष्टादश शतार पहिचान।।
घातायुष्क अधिक पाते कुछ, आगम से यह होता ज्ञात।
आनत युगल बीस सागर की, आरण में बाइस है भ्रात।।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा को हम गाते हैं।
जैनागम को भाव सहित हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं ब्रह्म स्वर्गात् अच्युत स्वर्ग पर्यन्त देवानाम् उत्कृष्ट आयु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पातीत देवों की आयु

आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥32॥

आरण अच्युत के ऊपर शुभ, ग्रैवेयक के रहे विमान।
एक-एक सागर वृद्धि कर, अंतिम हैं इकतीस प्रमाण॥
नव अनुदिश में बत्तिस सागर, तथा अनुत्तर में तैंतीस।
यह उत्कृष्ट उम्र देवों की, कथन करें यह जैन मुनीश॥
सर्वार्थ सिद्धि में निश्चित होती, तैंतिस सागर रही महान्।
हीनाधिक का भेद नहीं है, ऐसा कहते हैं भगवान॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा को हम गाते हैं।
जैनागम को भाव सहित हम, सादर शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं कल्पातीत देवानाम् उत्कृष्ट आयु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौधर्मैशान स्वर्गों की जघन्य आयु

अपरा पल्योपममधिकम् ॥33॥

एक पल्य की आयु पाते, स्वर्गों में सौधर्मैशान।
यह जघन्य आयु ज्यादा कुछ, घातायुष्क में रही प्रधान॥
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा को हम गाते हैं।
जैनागम को भाव सहित हम, सादर शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं सौधर्मेशान स्वर्गयोः देवानाम् जघन्य आयु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जघन्य आयु

परतःपरतः पूर्वा पूर्वाऽनन्तरा ॥34॥

पहले की उत्कृष्ट आयु जो, अंतिम की वह रही जघन्य।
आगे-आगे क्रमशः जानो, स्वर्गादि में रही जघन्य॥

ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा को हम गाते हैं।
जैनागम को भाव सहित हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमार स्वर्गात् अनुत्तर पर्यन्त जघन्य आयु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नारकियों की जघन्य आयु

नारकाणां च द्वितीयादिषु ।।35।।

द्वितियादि नरकों में आयु, देवों जैसी रही जघन्य।
नीचे-नीचे के नरकों में, आयु पाते प्राणी अन्य।।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा को हम गाते हैं।
जैनागम को भाव सहित हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं शर्करा भूम्या महातम प्रभा भूमि स्थित नारकाणाम् जघन्य आयु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पहिले नरक की जघन्य आयु

दश-वर्ष-सहस्राणि प्रथमायाम् ।।36।।

दस हजार वर्षों की आयु, प्रथम नरक में रही जघन्य।
है उत्कृष्ट प्रथम की आगे, वह जघन्य कहलाई अन्य।।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा को हम गाते हैं।
जैनागम को भाव सहित हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं रत्नप्रभा नरक भूम्यां जघन्य आयु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवनवासी देवों की जघन्य आयु

भवनेषु च ।।37।।

दस हजार वर्षों की आयु, भवनवासियों में हो ज्ञात।
यह जघन्य आगे विकल्प कई, उसके होते हैं विख्यात।।

ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा को हम गाते हैं।
जैनागम को भाव सहित हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं भवनवासी देवानाम् जघन्य आयु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंतर देवों की जघन्य आयु

व्यन्तराणां च ।।38।।

दस हजार वर्षों की आयु, व्यंतर देवों में विख्यात।
यह जघन्य आगे विकल्प कई, आगम से होते हैं ज्ञात।।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा को हम गाते हैं।
जैनागम को भाव सहित हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं व्यंतर देवानाम् जघन्य आयु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंतर देवों की उत्कृष्ट आयु

परा पल्योपममधिकम् ।।39।।

व्यंतर देव प्राप्त करते हैं, एक पल्य आयु उत्कृष्ट।
घातायुष्क अधिक पाते कुछ, ऐसा है आगम को इष्ट।।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा को हम गाते हैं।
जैनागम को भाव सहित हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं व्यंतर देवानाम् उत्कृष्ट आयु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिषी देवों की उत्कृष्ट आयु

ज्योतिष्काणां च ।।40।।

ज्योतिष देवों में भी जानो, एक पल्य आयु उत्कृष्ट।
घातायुष्क अधिक पाते कुछ, यह आगम का कथन विशिष्ट।।

ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र के, गुण गाने में कौन समर्थ।
जैनागम को जानो भाई, शेष कथन करना है व्यर्थ।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्क देवानाम् उत्कृष्ट आयु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिषी देवों की जघन्य आयु

तदष्टभागोऽपरा ।।41 ।।

ज्योतिष की उत्कृष्ट रही जो, आयु उसका अष्टम भाग।
यह जघन्य आयु कहलाई, रखना क्यों आयु में राग।।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा को हम गाते हैं।
जैनागम को भाव सहित हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्क देवनाम् जघन्य आयु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकान्तिक देवों की आयु

लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ।।42 ।।

लौकान्तिक देवों में आयु, सागर आठ हुई है ज्ञात।
हीनाधिक न होती उनमें, एक भवावतारी हैं भ्रात।।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा को हम गाते हैं।
जैनागम को भाव सहित हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं लौकांतिक देवानाम् आयु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ

चउ निकाय के देवों का यह, लघुरूप में किया कथन।
उमास्वामी आचार्य प्रवर ने, कीन्हा मंगलमय वर्णन।।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा को हम गाते हैं।
जैनागम को भाव सहित हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं चतुर्णिकाय देव स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित चतुर्थ अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

_जाप्य :_ – ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत जीव तत्त्व निरूपक श्री उमास्वामी विरचित चतुर्थ अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **बियालिस सूत्रों में किया, देवों का व्याख्यान।**
जयमाला गाते विशद, पाने सम्यक् ज्ञान।।
सूत्रों का व्याख्यान कर, गाते हैं जयमाल।
जैनागम को भाव से, वंदन करूँ त्रिकाल।।

तर्ज– हे दीनबन्धु.... (दिग्पाल छन्द)

करते हैं भ्रमण जग में, कर्मों के सब सताए।
बहु पुण्य के उदय से, स्वर्गों में जन्म पाए।।
व्यंतर बने फिरे हम, औरों को दुख दिया है।
बनकर के ज्योतिषी फिर, जग में भ्रमण किया है।।
बनकर के भवनवासी, भवनों में हम रहे हैं।
पाई जो वेदना है, अपनी सभी सहे हैं।।
संसार के विषय सुख, पाते सदा रहे हैं।
वह भोग प्राप्त करने, में दुख कई सहे हैं।।
पाकर के पुण्य कोई, स्वर्गों में जन्म पाया।
फिर भूलकर स्वयं को, भोगों में मन लगाया।।
भोगों को भोगने में, आयु जो क्षीण होवे।
इंसान भोग में ही, शक्ति को पूर्ण खोवे।।

संसार के विषय सुख, भोगों की चाह ना है।
श्रद्धान विशद जागे, बस एक चाहना है।।

कल्याण के लिए अब, श्रद्धान विशद जागे।
सद्ज्ञान दीप अपना, हम भी जगाने आए।।

अज्ञान का तिमिर अब, सम्पूर्ण मेरा खोवे।
जीवन हमारा पावन, चारित्र पूर्ण होवे।।

तत्त्वार्थ सूत्र पढ़कर, स्वपर का भेद जाना।
पर को पराया भाई, अपने को अपना माना।।

चेतन स्वरूप अपना, पाने का भाव आया।
सद्धर्म देव आगम, गुरुवर को हमने ध्याया।।

इस लोक में सभी को, देते यही सहारा।
सबको जिनेन्द्र भक्ती, देती है भव किनारा।।

दोहा

देव शास्त्र गुरु चरण की, महिमा अपरंपार।
विशद भाव से भक्ति कर, हो जाऊँ भवपार।।

ॐ ह्रीं चतुर्णिकाय देव स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित चतुर्थ अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्य छंद)

इस अध्याय में वर्णन, देवों का किया।
सम्यक् दर्शन ज्ञान में, अपना चित् दिया।।
हमने चित्त शुद्धि के, भाव बनाए हैं।
विशद भाव से भक्ति, करने आए हैं।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

पंचम अध्याय पूजन

स्थापना

जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, सारे जग में अपरंपार।
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाला, सर्व लोक में मंगलकार।।
जीवादि द्रव्यों का वर्णन, करते हैं गुरुवर आचार्य।
अब पंचम अध्याय की पूजा, करना है हमको हे आर्य।।
विशद हृदय में जिन सूत्रों का, करते हैं हम आह्वानन्।
पुष्पाञ्जलि अर्पित करके हम, करते हैं शत् शत् वंदन।।

ॐ ह्रीं पुद्गल तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित पंचम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जीवोपकारक अजीव तत्त्व प्ररूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित पंचम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पुद्गलादि द्रव्यानाम् बन्धाबन्ध स्वरूप निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित पंचम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

गीता छंद

नीर हम गंगा नदी सम, कूप से भर लाए हैं।
जन्म-मृत्यु अरु जरा का, नाश करने आए हैं।।
चित्त चिंतन-चेतना के, में लगाना है अहा।
अन्य द्रव्यों से हमारा, कोई नाता न रहा।।1।।

ॐ ह्रीं पुद्गल तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित पंचम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ चंदन मलयागिरि का, परम घिसकर लाए हैं।
बढ़ रहे संसार का हम, नाश करने आए हैं।।

चित्त चिंतन-चेतना के, में लगाना है अहा।
अन्य द्रव्यों से हमारा, कोई नाता न रहा।।2।।

ॐ ह्रीं पुद्गल तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित पंचम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमयी शुभ श्रेष्ठ अक्षत, शुद्ध धोकर लाए हैं।
पद सुअक्षय प्राप्त करने, सूत्र जिन अपनाए हैं।।
चित्त चिंतन-चेतना के, में लगाना है अहा।
अन्य द्रव्यों से हमारा, कोई नाता न रहा।।3।।

ॐ ह्रीं पुद्गल तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित पंचम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुन्दर अरु सुगन्धित, हम चढ़ाने लाए हैं।
काम बाधा नाश करने, हम शरण में आए हैं।।
चित्त चिंतन-चेतना के, में लगाना है अहा।
अन्य द्रव्यों से हमारा, कोई नाता न रहा।।4।।

ॐ ह्रीं पुद्गल तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित पंचम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसमयी नैवेद्य पावन, शुद्ध प्रासुक लाए हैं।
क्षुधा व्याधी शांत करने, भाव से सिर नाए हैं।।
चित्त चिंतन-चेतना के, में लगाना है अहा।
अन्य द्रव्यों से हमारा, कोई नाता न रहा।।5।।

ॐ ह्रीं पुद्गल तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित पंचम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ज्योती सम सुदीपक, प्रज्ज्वलित कर लाए हैं।
मोह ज्वाला शांत करने, आरती को आए हैं।।

चित्त चिंतन-चेतना के, में लगाना है अहा।
अन्य द्रव्यों से हमारा, कोई नाता न रहा।।6।।

ॐ ह्रीं पुद्गल तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित पंचम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध के गुण सम सुगंधित, धूप मनहर लाए हैं।
कर्म बाधा को जलाने, अग्नि में दहनाए हैं।।
चित्त चिंतन-चेतना के, में लगाना है अहा।
अन्य द्रव्यों से हमारा, कोई नाता न रहा।।7।।

ॐ ह्रीं पुद्गल तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित पंचम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पक्व अनुपम श्रेष्ठ श्रीफल, थाल में भर लाए हैं।
मोक्ष फल हो प्राप्त हमको, फल चढ़ाने आए हैं।।
चित्त चिंतन-चेतना के, में लगाना है अहा।
अन्य द्रव्यों से हमारा, कोई नाता न रहा।।8।।

ॐ ह्रीं पुद्गल तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित पंचम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य यह वसु द्रव्य का हम, थाल में भर लाए हैं।
नहीं जिसका अर्घ कोई, प्राप्त करने आए हैं।।
चित्त चिंतन-चेतना के, में लगाना है अहा।
अन्य द्रव्यों से हमारा, कोई नाता न रहा।।9।।

ॐ ह्रीं पुद्गल तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित पंचम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चम वलयः

(दोहा)

अब पंचम अध्याय के, सूत्र करूँ आरम्भ।
अजीव तत्त्व का कर रहे, वर्णन हम प्रारम्भ ।।

(अथ पंचमवलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सूत्र प्रारम्भ

अजीव तत्त्व का वर्णन

अजीव - कायाधर्माधर्माकाश - पुद्गलाः ।।1 ।।

(दोहा)

धर्माधर्माकाश अरु, पुद्गल द्रव्य अजीव।
बहु प्रदेश हैं काय सम, चेतन द्रव्य है जीव।।
मोक्ष प्रकाशक ग्रन्थ यह, जग में रहा महान्।
द्रव्य अजीवों का किया, यहाँ शुभम् गुणगान।।

ॐ ह्रीं जीव द्रव्य रहित धर्मादि अजीव तत्त्व प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये अजीव काया क्या है

द्रव्याणि ।।2 ।।

द्रव्य त्रिकाली लोक में, मिलकर रहें सदैव।
है स्वभाव से भिन्न वह, कहते हैं जिनदेव।।
मोक्ष प्रकाशक ग्रन्थ है, तत्त्वार्थ सूत्र महान्।
अजीव द्रव्य का किया है, यहाँ शुभम् गुणगान।।

ॐ ह्रीं द्रव्य स्वभाव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य में जीवों की गिनती

जीवाश्च ॥3॥

जीव द्रव्य को भी कहा, ज्ञाता दृष्टा रूप।
सब द्रव्यों से भिन्न शुभ, जो है चित् स्वरूप॥
मोक्ष प्रकाशक ग्रन्थ है, तत्त्वार्थ सूत्र महान्।
अजीव द्रव्य का किया है, यहाँ शुभम् गुणगान॥

ॐ ह्रीं द्रव्य भेद रूप जीव तत्त्व प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्यों की विशेषता

नित्यावस्थितान्यरूपाणि ॥4॥

नित्य अवस्थित और अरूपी, द्रव्यों को जानो हे भ्रात !।
परिवर्तन होता है नित प्रति, द्रव्य का कभी न होवे घात॥
द्रव्य नित्य स्वभाव रहा है, सीमा में स्थिर रहते।
मूर्त्तरूप न होती है जो, उसे अरूपी जिन कहते॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं पुद्गल रहित अन्य द्रव्यावस्था प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुद्गल द्रव्य को ही रूपित्व बताते हैं

रूपिणः पुद्गलाः ॥5॥

पुद्गल द्रव्य कही है रूपी, होती है जो कई प्रकार।
द्रव्यें अन्य अरूपी जानो, रूपी है इसका आकार॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं पुद्गल द्रव्यस्य मूर्तत्त्व रूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब धर्मादि द्रव्यों की संख्या बतलाते हैं

आ आकाशादेक-द्रव्याणि ॥6॥

धर्माधर्म आकाश द्रव्य यह, तीनों होती हैं एक-एक।
और द्रव्य जो शेष रही हैं, उनके होते भेद अनेक॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं धर्मादि आकाशपर्यन्त द्रव्य संख्या सूचक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मादि निष्क्रिय द्रव्य का वर्णन

निष्क्रियाणि च ॥7॥

धर्माधर्म आकाश द्रव्य को, निष्क्रिय कहते हैं तीर्थेश।
जीव और पुद्गल द्रव्यों के, यह सहयोगी कहे विशेष॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं धर्माकाश द्रव्ययो निष्क्रियता द्योतक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्माधर्मैक जीव के प्रदेश

असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैक-जीवानाम् ॥8॥

धर्माधर्म प्रत्येक जीव के, प्रदेश कहे हैं संख्यातीत।
श्रद्धा धारो सदा इसी पर, रही प्रदेशों की यह रीत॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं धर्माधर्मैक जीव प्रदेश प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकाश के प्रदेश बतलाते हैं

आकाशस्यानन्ताः ॥9॥

होते हैं आकाश द्रव्य के, सर्व प्रदेश अनन्तानन्त।
हैं संख्यात प्रदेश लोक के, नहिं आकाश का कोई अन्त॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं आकाश द्रव्य प्रदेश संख्या प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब पुद्गल के प्रदेशों की संख्या बतलाते हैं

संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानाम्॥10॥

असंख्यात संख्यात तथा हैं, अरु अनंत हैं सर्व प्रदेश।
पुद्गल मूर्तिमान द्रव्य है, हर प्रदेश में शक्ति विशेष॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं पुद्गल द्रव्यस्य प्रदेश संख्या प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब अणु को एक प्रदेशी बतलाते हैं

नाणोः॥11॥

परमाणु के बहु प्रदेश न, उसका होता एक प्रदेश।
सभी वर्गणाओं में मिलकर, हो जाए बलवान विशेष॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं अणु प्रदेश संख्या प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब समस्त द्रव्यों के रहने का स्थान बतलाते हैं

लोकाकाशेऽवगाहः ॥12॥

लोकाकाश सभी द्रव्यों को, देता है भाई अवकाश।
इसका है स्वाभाविक यह गुण, इसकी यह शक्ति है खास॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं जीवादि द्रव्यावगाह स्थान प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब धर्म-अधर्म द्रव्य का अवगाहन बतलाते हैं

धर्माऽधर्मयोः कृत्स्ने ॥13॥

धर्माधर्म द्रव्य दोनों ही, लोकाकाश में रहते व्याप्त।
ज्यों घृत रहता क्षीर नीर में, इस प्रकार कहते हैं आप्त॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं धर्माधर्म द्रव्ययो अवगाहन स्थान प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब पुद्गल का अवगाहन बतलाते हैं

एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम् ॥14॥

एक प्रदेश को आदि करके, पूर्ण लोक में करता वास।
पुद्गल का होता अवगाहन, जिसमें हो उत्पाद विनाश॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं पुद्गलस्य एक प्रदेशात् क्रमेण पूर्ण लोकावगाहन प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब जीवों का अवगाहन बतलाते हैं

असंख्येय-भागादिषु जीवानाम्॥15॥

असंख्यात को आदि करके, पूर्ण लोक में अवगाहन।
गुण अनंत के धारी जीवों, का होता है मनभावन॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं जीवानाम् असंख्यात अनन्तावगाहन स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव का अवगाहन लोक के असंख्यात भाग में कैसे हैं?

प्रदेश-संहार-विसर्पाभ्यां प्रदीपवत्॥16॥

होता है संकोच जीव के, सर्व प्रदेशों में विस्तार।
दीपक में प्रकाशवत् भाई, हीनाधिक हो कई प्रकार॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं संकोच विस्तार रूप जीवानाम् अवगाहन स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब धर्म और अधर्मद्रव्य का जीव और पुद्गल के साथ का विशेष सम्बन्ध बतलाते हैं

गति-स्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकारः॥17॥

जीव और पुद्गल द्रव्यों को, गती स्थिति करें प्रदान।
क्रमशः धर्म-अधर्म द्रव्य द्वय, करते हैं उपकार महान्॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं जीव पुद्गलाभ्याम् धर्माधर्मयो उपकार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब आकाश और दूसरे द्रव्यों के साथ का निमित्त सम्बन्ध बताते हैं

आकाशस्यावगाहः ॥18॥

सर्व लोकवर्ती द्रव्यों को, अवगाहन देता आकाश।
सब द्रव्यों से भिन्न गगन का, लक्षण होता है यह खास॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं गगनावगाहन स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब पुद्गल द्रव्य का जीव के साथ उपकार बतलाते हैं

शरीर-वाङ्मनः प्राणापानाःपुद्गलानाम्॥19॥

श्वासोच्छवास वचन तन मन ये, पुद्गल के होते उपकार।
पुद्गल के द्वारा तन की हो, रचना कर्मों के अनुसार॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं जीव पुद्गल उपकार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब पुद्गल का जीव के साथ निमित्त नैमित्तिक सम्बन्ध बतलाते हैं

सुख-दुख-जीवित-मरणोपग्रहाश्च॥20॥

इन्द्रिय के सुख भोग जन्म अरु, मरण भी पुद्गल के आधार।
पुद्गल का उपकार जीव को, मिलते हैं जो कई प्रकार॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं जीव पुद्गल निमित्त नैमित्तिक सम्बन्ध प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव का उपकार

परस्परोपग्रहो जीवानाम् ॥21॥

जीव परस्पर इक दूजे का, करते रहते हैं उपकार।
चेतन शक्ती धारण करता, महिमा जिसकी अपरंपार॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं जीवानाम् परस्परोग्रह प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब काल द्रव्य का उपकार बताते हैं

वर्तना-परिणाम-क्रियाः परत्वाऽपरत्वे च कालस्य ॥22॥

काल द्रव्य का कहा वर्तना, अरु परिणाम क्रिया उपकार।
परत्व और अपरत्व जानिए, काल रहा निश्चय व्यवहार॥
नित्य है जीवादि का लक्षण, जैनागम में कहे जिनेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन, उमास्वामी यह किए विशेष॥

ॐ ह्रीं काल द्रव्योपग्रह प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब पुद्गल द्रव्य का लक्षण कहते हैं

स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णवन्तः पुद्गलाः ॥23॥

(गीता छंद)

स्पर्श गंध रस वर्ण शुभ, गुण ये पुद्गल में कहे।
परिणमन अरु गलन पूरण, गुण अनेकों भी रहे॥
यहाँ अजीवादि सभी, द्रव्यों का कीन्हा है कथन।
अर्घ्य यह करके समर्पित, कर रहे शत्-शत् नमन्॥

ॐ ह्रीं पुद्गल द्रव्य स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब पुद्‌गल की पर्याय बतलाते हैं

शब्दबन्धसौक्ष्म्य-स्थौल्य-संस्थान-भेद-तमश्छायाऽऽतपोद्योत-वन्तश्च॥24॥

शब्द बंध स्थूल सूक्षम, भेद तम छाया रही।
आतप उद्योत संस्थान यह, पर्यायें पुद्‌गल की कहीं॥
यहाँ अजीवादि सभी, द्रव्यों का कीन्हा है कथन।
अर्घ्य यह करके समर्पित, कर रहे शत्-शत् नमन्॥

ॐ ह्रीं पुद्‌गल पर्याय प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब पुद्‌गल के भेद बतलाते हैं

अणवः स्कन्धाश्च॥25॥

अणु और स्कंध यह दो, भेद पुद्‌गल के रहे।
स्थूल आदि अपर छह शुभ, भेद आगम में कहे॥
यहाँ अजीवादि सभी, द्रव्यों का कीन्हा है कथन।
अर्घ्य यह करके समर्पित, कर रहे शत्-शत् नमन्॥

ॐ ह्रीं पुद्‌गल भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब स्कन्धों की उत्पत्ति का कारण बतलाते हैं

भेद-संघातेभ्य उत्पद्यन्ते॥26॥

भेद अरु संघात से, स्कंध का उत्पाद हो।
यह अनादि रहा लक्षण, जो सभी को याद हो॥
यहाँ अजीवादि सभी, द्रव्यों का कीन्हा है कथन।
अर्घ्य यह करके समर्पित, कर रहे शत्-शत् नमन्॥

ॐ ह्रीं पुद्‌गल स्कन्धोत्पत्ति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब अणु की उत्पत्ति के कारण बतलाते हैं

भेदादणुः ॥27॥

भेद के द्वारा अणु का, ही सदा उत्पाद हो।
बहु प्रदेशी नहीं होता, जानकर आह्लाद हो॥
यहाँ अजीवादि सभी, द्रव्यों का कीन्हा है कथन।
अर्घ्य यह करके समर्पित, कर रहे शत्-शत् नमन्॥

ॐ ह्रीं अणूत्पत्ति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब दिखाई देने योग्य स्कंध की उत्पत्ति का कारण बताते हैं

भेद-संघाताभ्यां चाक्षुषः ॥28॥

भेद अरु संघात से, स्कंध चाक्षुष बन सके।
जीव जग के नेत्र से, अपने स्वयं ही लख सके॥
यहाँ अजीवादि सभी, द्रव्यों का कीन्हा है कथन।
अर्घ्य यह करके समर्पित, कर रहे शत्-शत् नमन्॥

ॐ ह्रीं चाक्षुष स्कन्ध उत्पत्ति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य का लक्षण

सद् द्रव्य-लक्षणम्॥29॥

द्रव्य का लक्षण कहा सत्, यही मम् लक्षण रहा।
नाश हो न कभी इसका, जैन आगम में कहा॥
यहाँ अजीवादि सभी, द्रव्यों का कीन्हा है कथन।
अर्घ्य यह करके समर्पित, कर रहे शत्-शत् नमन्॥

ॐ ह्रीं द्रव्य लक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब सत् का लक्षण बताते हैं

उत्पाद-व्ययध्रौव्य-युक्तं सत् ॥30॥

शंभु छंद

व्यय उत्पाद ध्रौव्य युत भाई, सत् का तुम लक्षण जानो।
क्षण-क्षण में परिवर्तन होता, द्रव्य में भाई यह मानो॥
द्रव्य अजीवादि का वर्णन, किए यहाँ पर जिन तीर्थेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र का वर्णन, किया प्रभु ने यहाँ विशेष॥

ॐ ह्रीं सत् स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब नित्य का लक्षण कहते हैं

तद्भावाऽव्ययं नित्यम् ॥31॥

तद्भावों से अव्यय हो जो, अविनाशी वह होता नित्य।
द्रव्य नित्य होता स्वभाव से, पर्यायों से रहा अनित्य॥
द्रव्य अजीवादि का वर्णन, किए यहाँ पर जिन तीर्थेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र का वर्णन, किया प्रभु ने यहाँ विशेष॥

ॐ ह्रीं नित्य लक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक वस्तु में दो विरुद्ध धर्म सिद्ध करने की रीति बतलाते हैं

अर्पिताऽनर्पितसिद्धेः ॥32॥

अर्पित और अनर्पित दोनों, धर्म वस्तु में रहे प्रसिद्ध।
नित्य मुख्यता और गौणता, को पदार्थ में करते सिद्ध॥
द्रव्य अजीवादि का वर्णन, किए यहाँ पर जिन तीर्थेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र का वर्णन, किया प्रभु ने यहाँ विशेष॥

ॐ ह्रीं वस्तु मध्य अर्पिताऽनर्पित स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब परमाणुओं में बंध होने का कारण बतलाते हैं

स्निग्ध-रूक्ष-त्वाद् बन्धः ॥33॥

रुक्ष और स्निग्ध गुणों से, युक्त अणु का होता बंध।
रुक्ष तथा स्निग्ध एक गुण, वाला होता पूर्ण अबंध॥
द्रव्य अजीवादि का वर्णन, किए यहाँ पर जिन तीर्थेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र का वर्णन, किया प्रभु ने यहाँ विशेष॥

ॐ ह्रीं बन्ध हेतु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बंध नहीं होता

न जघन्य-गुणानाम् ॥34॥

यदि जघन्य गुण वाला हो तो, परमाणु का न हो बंध।
यह पुद्गल का अटल नियम है, ऐसी दशा रही निर्बंध॥
द्रव्य अजीवादि का वर्णन, किए यहाँ पर जिन तीर्थेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र का वर्णन, किया प्रभु ने यहाँ विशेष॥

ॐ ह्रीं अबन्ध कारण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बंध नहीं होता इसका वर्णन करते हैं

गुण-साम्ये सदृशानाम् ॥35॥

जो समान गुण हों यदि अणु में, तो भी बंध नहीं होवे।
ऐसा पुद्गल भी हे भाई ! बंध की शक्ति को खोवे॥
द्रव्य अजीवादि का वर्णन, किए यहाँ पर जिन तीर्थेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र का वर्णन, किया प्रभु ने यहाँ विशेष॥

ॐ ह्रीं गुणसाम्ये अबन्ध कारण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बंध कब होता है?

द्वयधिकादि-गुणानां तु ।।36।।

दो से अधिक यदि गुण हों तो, पुद्गल में हो जाए बंध।
उससे हीन अधिक हों यदि तो, परमाणु फिर रहे अबंध।।
द्रव्य अजीवादि का वर्णन, किए यहाँ पर जिन तीर्थेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र का वर्णन, किया प्रभु ने यहाँ विशेष।।

ॐ ह्रीं बन्धोत्पत्ति हेतु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो गुण अधिक के साथ मिलने पर नई व्यवस्था कैसे होती है?

बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च ।।37।।

अधिक गुणों से युक्त द्रव्य का, होय परिणमन भी उस रूप।
परिवर्तन की रही व्यवस्था, द्रव्य का रहा यही स्वरूप।।
द्रव्य अजीवादि का वर्णन, किए यहाँ पर जिन तीर्थेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र का वर्णन, किया प्रभु ने यहाँ विशेष।।

ॐ ह्रीं बन्धादिक परिणाम प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य का दूसरा लक्षण

गुण-पर्ययवद् द्रव्यम् ।।38।।

गुण पर्याय सहित होता जो, उसको द्रव्य कहा जाता।
काल अनादी है अनन्त जो, अव्यय संज्ञा को पाता।।
द्रव्य अजीवादि का वर्णन, किए यहाँ पर जिन तीर्थेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र का वर्णन, किया प्रभु ने यहाँ विशेष।।

ॐ ह्रीं अन्य प्रकारेण द्रव्यस्य लक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काल भी द्रव्य है

कालश्च ॥39॥

कालद्रव्य को जैनागम में, भाई द्रव्य कहा जाता।
अस्तिरूप होने से यह भी, द्रव्य की संज्ञा को पाता॥
द्रव्य अजीवादि का वर्णन, किए यहाँ पर जिन तीर्थेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र का वर्णन, किया प्रभु ने यहाँ विशेष॥

ॐ ह्रीं कालद्रव्य प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यवहार काल का प्रमाण बताते हैं

सोऽनन्तसमयः ॥40॥

कालद्रव्य होता अनंत यह, जैनागम में किया कथन।
निश्चय अरु व्यवहार काल का, जिनवर ने कीन्हा वर्णन॥
द्रव्य अजीवादि का वर्णन, किए यहाँ पर जिन तीर्थेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र का वर्णन, किया प्रभु ने यहाँ विशेष॥

ॐ ह्रीं कालद्रव्य भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण का लक्षण

द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ॥41॥

द्रव्य के आश्रय जो रहता है, अन्य गुणों से रहा विहीन।
कहा गया गुण है वह बंधु, निज गुण में रहता जो लीन॥
द्रव्य अजीवादि का वर्णन, किए यहाँ पर जिन तीर्थेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र का वर्णन, किया प्रभु ने यहाँ विशेष॥

ॐ ह्रीं गुणलक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्याय का लक्षण

तद्भावः परिणामः ।।42।।

द्रव्यों का जो है स्वभाव वश, वह परिणाम कहाता है।
कोई भी परिणाम द्रव्य के, बिना न होने पाता है।।
द्रव्य सदा रहता स्वभाव में, सहज स्वभावी है परिणाम।
द्रव्य लीन रहता है निज में, निज में रहता आतमराम।।
द्रव्य अजीवादि का वर्णन, किए यहाँ पर जिन तीर्थेश।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र का वर्णन, किया प्रभु ने यहाँ विशेष।।

ॐ ह्रीं पर्याय लक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

अडिल्य छंद

यहाँ अजीवादि द्रव्यें हमनें कहीं, द्रव्य सुगुण पर्याय सभी उसमें रहीं।
बंधाबंध का वर्णन भी जिसमें किया, मैं अजीव से भिन्न जान हमने लिया।।

ॐ ह्रीं पुद्गल द्रव्यस्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित पञ्चम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य **:- ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत पुद्गल द्रव्य निरूपक श्री उमास्वामी विरचित पंचम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

दोहा - **द्रव्यों का लक्षण तथा, गुण का किया बखान।**
धर्माधर्म आकाश अरु, पुद्गल काल महान्।।

केसरी छंद

प्रथमाध्याय प्रथम में गाया, चौथे तक वर्णन बतलाया।
जीवद्रव्य की महिमा गाई, जैनागम की है प्रभुताई।
पंचम अध्याय अब आगे आया, अजीव द्रव्य का कथन बताया।

जीव के सब उपकारक भाई, जैनागम की है प्रभुताई।
धर्मादि को आदि जानो, इनको पूर्ण अचेतन मानो।
जीवद्रव्य के रहे सहाई, जैनागम की है प्रभुताई।
उनका लक्षण यहाँ बताया, कार्य द्रव्य का भी बतलाया।
व्यय उत्पाद ध्रौव्य बतलाई, जैनागम की है प्रभुताई।
द्रव्य गुणों को हमने जाना, अरु संबंधों को पहिचाना।
अरु प्रदेश की संख्या गाई, जैनागम की है प्रभुताई।
मूर्तामूर्त का भेद बताया, उनकी संख्या को बतलाया।
बंधाबंध की विधि बताई, जैनागम की है प्रभुताई।
व्यय उत्पाद कहे हैं भाई, नित्यानित्य की कथनी गाई।
उनके लक्षण कहे हैं भाई, जैनागम की है प्रभुताई।
काल द्रव्य को हमने जाना, भेद सहित हमने पहिचाना।
उसकी महिमा यहाँ बताई, जैनागम की है प्रभुताई।
द्रव्याश्रय गुण पाया जाए, अन्य कोई गुण न बतलाए।
गुण की महिमा अलग बताई, जैनागम की है प्रभुताई।
वस्तु में जो भाव रहा है, उसका वह परिणाम कहा है।
गुण विकार से होती भाई, जैनागम की है प्रभुताई।
जीवाजीव द्रव्य को जाना, भेद स्व पर का भी पहिचाना।
'विशद' भाव से महिमा गाई, जैनागम की है प्रभुताई।

दोहा- द्रव्य अजीवों का यहाँ, किया गया व्याख्यान।
सब द्रव्यों में जीव का, रहा श्रेष्ठ स्थान॥

ॐ ह्रीं अजीव तत्त्वस्य पुद्गल द्रव्य निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित पंचम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्यों को पहिचान कर, जगे हृदय श्रद्धान।
चित् चेतन को जानकर, पाऊँ सम्यक् ज्ञान॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

षष्टम् अध्याय की पूजन

स्थापना

कर्मों का आस्रव हो भाई, जिससे बढ़ता है संसार।
जन्म-मरण करते हैं प्राणी, मन-वच-तन से कई प्रकार।।
यह छटवाँ अध्याय यहाँ पर, लक्षण हेतु का विस्तार।
श्री जिनेन्द्र की दिव्य देशना, ले तत्त्वार्थ सूत्र आधार।।
आत्म शुद्धि के लक्षण हेतु अब, आस्रव का करना है रोध।
जैनागम को हृदय बसाकर, पाना है अब सम्यक् बोध।।

ॐ ह्रीं आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित षष्टम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं कर्माश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित षष्टम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं कर्माश्रव निरोध प्ररूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित षष्टम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

जोगीराशा छंद

प्रासुक यह अविकारी निर्मल, जल लाया मैं ताजा।
जन्म-जरा-मत्यु की व्याधि, मिट जाए जिनराजा।।
काल अनादि से आस्रव कर, बाँधे कर्म घनेरे।
कर्मास्रव का रोध होय मम्, मिटें कर्म के फेरे।।1।।

ॐ ह्रीं अशुभ आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित षष्टम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन परम सुगंधित, मैं घिसकर के लाया।
भव आताप विनाशन हेतु, जैनागम को ध्याया।।

काल अनादि से आस्रव कर, बाँधे कर्म घनेरे।
कर्मास्रव का रोध होय मम्, मिटें कर्म के फेरे।।2।।

ॐ ह्रीं अशुभ आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित षष्टम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल अखण्ड सुअक्षय अक्षत, धोकर के मैं लाया।
अक्षय पद का भाव बनाकर, आज चढ़ाने आया।।
काल अनादि से आस्रव कर, बाँधे कर्म घनेरे।
कर्मास्रव का रोध होय मम्, मिटें कर्म के फेरे।।3।।

ॐ ह्रीं अशुभ आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित षष्टम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगंधित लिए मैं आया, ताजे शुभ मनहारी।
कामबाण की महावेदना, होवे नाश हमारी।।
काल अनादि से आस्रव कर, बाँधे कर्म घनेरे।
कर्मास्रव का रोध होय मम्, मिटें कर्म के फेरे।।4।।

ॐ ह्रीं अशुभ आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित षष्टम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध सरस नैवेद्य बनाकर, पूजन को मैं लाया।
क्षुधा रोग का मूल नशाने, आज चढ़ाने आया।।
काल अनादि से आस्रव कर, बाँधे कर्म घनेरे।
कर्मास्रव का रोध होय मम्, मिटें कर्म के फेरे।।5।।

ॐ ह्रीं अशुभ आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित षष्टम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का बंध पड़ा जो, उससे मैं घबड़ाया।
मोह अंध के नाश हेतु मैं, दीप जलाकर लाया।।
काल अनादि से आस्रव कर, बाँधे कर्म घनेरे।
कर्मास्रव का रोध होय मम्, मिटें कर्म के फेरे।।6।।

ॐ ह्रीं अशुभ आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित षष्टम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अजर अमर अविनाशी होकर, भव वन में भटकाया।
अष्ट कर्म के नाश हेतु शुभ, गंध जलाने आया।।
काल अनादि से आस्रव कर, बाँधे कर्म घनेरे।
कर्मास्रव का रोध होय मम्, मिटें कर्म के फेरे।।7।।

ॐ ह्रीं अशुभ आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित षष्टम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुवन के उपवन से पावन, पक्व सरस फल लाया।
मोक्ष महा फल है अविनाशी, वह पद पाने आया।।
काल अनादि से आस्रव कर, बाँधे कर्म घनेरे।
कर्मास्रव का रोध होय मम्, मिटें कर्म के फेरे।।8।।

ॐ ह्रीं अशुभ आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित षष्टम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं अर्घ जिसका अनर्घ वह, पद पाने मैं आया।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, आज चढ़ाने लाया।।
काल अनादि से आस्रव कर, बाँधे कर्म घनेरे।
कर्मास्रव का रोध होय मम्, मिटें कर्म के फेरे।।9।।

ॐ ह्रीं अशुभ आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित षष्टम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्टम् वलयः

दोहा- आगम से जाना यहाँ, द्रव्यों का स्वरूप।
पाना है हमको विशद, भिन्न आत्मा रूप।।
करुणाकर करुणा किए, उमास्वामी गुरुदेव।
अजर-अमर हों लोक में, चिरकालीन सदैव।।

(अथ षष्टम् वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सूत्र प्रारम्भ

आस्रव के भेद और उसका स्वरूप कहते हैं

काय-वाङ्-मनः कर्मयोगः ।।1 ।।

काय वचन अरु मन के द्वारा, आस्रव होता है दुखकार।
कर्म बन्ध का मूल कहा है, जिससे बढ़ता है संसार।।
द्रव्य तत्त्व में श्रद्धा करके, प्राप्त होय सम्यक् श्रद्धान।
दर्शन ज्ञान आचरण द्वारा, पा जाऊँ मैं सम्यक्ज्ञान।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा जागे, ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध, तप सम्यक् रीति आराधन।।

ॐ ह्रीं कर्मबन्धोत्पत्तिमूलक योगभेद स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब आस्रव का स्वरूप कहते हैं

स आस्रवः ।।2 ।।

यही योग आश्रव कहलाए, भाव योग दुख का कारण।
आत्म प्रदेशों में चंचलता, द्रव्य योग दे दुख दारुण।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा जागे, ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध, तप सम्यक् रीति आराधन।।

ॐ ह्रीं आश्रव स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब योग के निमित्त से आस्रव के भेद बतलाते हैं

शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य ॥3॥

आस्रव के दो भेद बताए, योग निमित्तक जैनागम।
पुण्यास्रव शुभ से होता है, अशुभ से पापों का आगम॥
सप्त तत्त्व में श्रद्धा जागे, ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध, तप सम्यक् रीति आराधन॥

ॐ ह्रीं योग निमित्त आश्रव भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्रव में क्या विशेषता है ?

सकषायाऽकषाययोः साम्परायिकेर्यापथयोः ॥4॥

साम्परायिक आस्रव करते हैं, जग में सब संसारी जीव।
तीन लोक में भ्रमण करें वह, पाते हैं जो दुःख अतीव॥
साम्परायिक आस्रव करते वह, जो कषाय से सहित कहे।
ईर्यापथ आस्रव उनके हो, जो कषाय से रहित कहे॥
सप्त तत्त्व में श्रद्धा जागे, ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध, तप सम्यक् रीति आराधन॥

ॐ ह्रीं कषाय जन्य आश्रव स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साम्परायिक आस्रव के उन्तालीस भेद

इन्द्रिय-कषायाऽव्रतक्रियाः पञ्च-चतुःपञ्च-पञ्चविंशतिसंख्याः पूर्वस्य भेदाः ॥5॥

साम्परायिक आस्रव की संख्या, उन्तालिस है कही मुनीश।
इन्द्रिय पंच कषाय चार हैं, अविरत पंच क्रिया पच्चीस॥
सम्यक्त्वी मिथ्यात्व प्रयोगी, समादान ईर्यापथ जान।
प्रादोषिक कायिक अधिकरणी, प्राणातिपात परितापी मान॥

अनाभोग दर्शन स्पर्शन, प्रत्ययकी समन्तानुपात।
अनाकांक्ष स्वहस्त विदारण, अरु निसर्ग आज्ञा व्यापात्।।
है आरम्भ परिग्रह माया, मिथ्यादर्शनाप्रत्याख्यान।
यह पच्चीस क्रियाएँ भाई, आश्रवकारी रहीं महान्।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा जागे, ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध, तप सम्यक् रीति आराधन।।

ॐ ह्रीं साम्परायिक आश्रवस्य भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आस्रव में विशेषता (हीनाधिकता) का कारण

तीव्र-मन्दज्ञाता-ऽज्ञात-भावाऽधिकरण-वीर्य-विशेषेभ्य-स्तद्विशेषः ।।6।।

तीव्र मंद अरु ज्ञात भाव से, या अज्ञात भाव के साथ।
हीनाधिक अधिकरण वीर्य के, कई विशेषताएँ हों भ्रात।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा जागे, ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध, तप सम्यक् रीति आराधन।।

ॐ ह्रीं न्यूनाधिक आश्रव स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अधिकरण के भेद

अधिकरणं जीवाजीवाः ।।7।।

भेद कहे दो अधीकरण के, जिसमें पहला होता जीव।
जिसमें आश्रव हो अजीव से, वह आश्रव कहलाए अजीव।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा जागे, ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध, तप सम्यक् रीति आराधन।।

ॐ ह्रीं अधिकरण भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवअधिकरण के भेद

आद्यं संरम्भ-समारम्भारम्भ योगकृतकारिताऽनुमतकषायविशेषै-स्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ॥8॥

प्रथम जीव आस्रव के भाई, एक सौ आठ भेद जानो।
संरम्भ समारम्भारम्भ योग तिय, कृतकारितानुमोदन मानो॥
क्रोधादि के क्रमशः भाई, त्रय त्रय त्रय हैं चार प्रभेद।
आपस में सब गुणा किए पर, एक सौ आठ हो जाते भेद॥
सप्त तत्त्व में श्रद्धा जागे, ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध तप, सम्यक् रीति आराधन॥

ॐ ह्रीं जीवाधिकरण भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजीवाधिकरण के भेद

निर्वर्तना-निक्षेप-संयोग-निसर्गा- द्वि-चतुर्द्वि-त्रि-भेदाः परम्॥9॥

निर्वतना निक्षेप संयोग अरु, निसर्ग हैं आस्रव के आधार।
यह अजीव अधिकरण के जानो, मुख्य भेद भाई तुम चार॥
क्रमशः भेद दोय चउ द्वय तिय, होते आगम के अनुसार।
व्यर्थ ही आश्रव हो जीवों को, इनसे होता कई प्रकार॥
सप्त तत्त्व में श्रद्धा जागे, ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध तप, सम्यक् रीति आराधन॥

ॐ ह्रीं अजीवाधिकरण आश्रव भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण और दर्शनावरण के आस्रव के कारण

तत्प्रदोषनि-ह्नव-मात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञान-दर्शनावरणयोः॥10॥

अब विशेष आस्रव के कारण, आठों कर्मों के जानो।
ज्ञान दर्शनावरणी दोनों, कर्मों के हेतू मानो॥

हैं प्रदोष निह्नव मात्सर्य अरु, अंतराय अरु आसादन।
उपघातादि भेद अनेकों, कर्मास्रव के हैं कारण।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा जागे, ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध तप, सम्यक् रीति आराधन।।

ॐ ह्रीं ज्ञान-दर्शनावरण आश्रव कारण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असातावेदनीय के आस्रव के कारण

दुःखशोकतापाऽऽक्रन्दनवधपरिदेवना-न्यात्मपरोभय-स्थान्यसद्वेद्यस्य।।11।।

दुःख शोक संताप आक्रंदन, बध परिदेवन भेद कहे।
सभी असाता वेदनीय के, कर्मास्रव में हेतु रहे।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा जागे, ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध तप, सम्यक् रीति आराधन।।

ॐ ह्रीं असातावेदनीय आश्रव कारण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साता वेदनीय के आस्रव के कारण

भूतव्रत्यनुकम्पा-दान-सराग-संयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य।।12।।

सभी प्राणियों व्रती जनों में, अनुकंपा धारण करना।
दया दान संयम योगों रत, क्षमा शौच उर में धरना।।
करुणा हृदय में जागे जिनके, उर में समता भाव रहे।
उनके साता वेदनीय के, आस्रव की शुभ धार वहे।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा जागे, ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध तप, सम्यक् रीति आराधन।।

ॐ ह्रीं सातावेदनीय आश्रव कारण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन मोहनीय कर्म के आस्रव के कारण कहते हैं

केवलि-श्रुत-संघ-धर्म-देवाऽवर्णवादो दर्शनमोहस्य ॥13॥

केवल ज्ञानी जिन श्रुत का अरु, संघ धर्म देवों का साथ।
अवर्णवाद करने वाले को, दर्शन मोहास्रव हो भ्रात॥
सप्त तत्त्व में श्रद्धा जागे, ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध तप, सम्यक् रीति आराधन॥

ॐ ह्रीं दर्शनमोहनीय जनित आश्रव कारण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब चारित्र मोहनीय के आस्रव के कारण बतलाते हैं

कषायो-दयात्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ॥14॥

कर्म के तीव्र कषायोदय में, हो परिणाम तीव्रतावान।
चारित्र मोहकर्म का आस्रव, करते हैं वह जीव महान्॥
सप्त तत्त्व में श्रद्धा जागे, ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध तप, सम्यक् रीति आराधन॥

ॐ ह्रीं चारित्रमोहनीय जनित आश्रव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरकायु के आस्रव के कारण

बह्वा-रम्भ-परिग्रहत्वं नारकस्याऽऽयुषः ॥15॥

वीर छंद

आयु कर्म के आस्रव का अब, क्रमशः करते हैं व्याख्यान।
बहु आरम्भ परिग्रह कारण, नरकायु का रहा प्रधान॥
भवसागर से मुक्ति पाने, जिनश्रुत का है आराधन।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, भाव सहित करता पूजन॥

ॐ ह्रीं नरक आयु बंधक आश्रव हेतू प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब तिर्यंच आयु के आस्रव का कारण बतलाते हैं

माया तैर्यग्योनस्य ॥16॥

छल छद्रम मायाचारी से, आयु कर्म का हो आस्रव।
तीन लोक में जग के प्राणी, दुःख प्राप्त करते भव-भव॥
भवसागर से मुक्ति पाने, जिनश्रुत का है आराधन।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, भाव सहित करता पूजन॥

ॐ ह्रीं तिर्यक् आयु बंधक आश्रव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब मनुष्य आयु के आस्रव के कारण बतलाते हैं

अल्पारम्भपरिग्रहत्वं मानुषस्य ॥17॥

अल्पारम्भ परिग्रहधारी, मनुष्य आयु को पाते हैं।
रत्नत्रय को पाने वाले, भवसागर तिर जाते हैं॥
भवसागर से मुक्ति पाने, जिनश्रुत का है आराधन।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, भाव सहित करता पूजन॥

ॐ ह्रीं मनुज आयु बंधक आश्रव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनुष्यायु के आस्रव के कारण

स्वभाव-मार्दवं च ॥18॥

मार्दव भाव धारने वाले, आयु मानव की पाते।
रत्नत्रय को पाने वाले, अनुक्रम से शिवपुर जाते॥
भवसागर से मुक्ति पाने, जिनश्रुत का है आराधन।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, भाव सहित करता पूजन॥

ॐ ह्रीं मनुष्यायु बंधक विशेष आश्रव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब सभी आयुओं के आस्रव के कारण बतलाते हैं

निःशीलव्रतत्त्वं च सर्वेषाम् ॥19॥

शील और व्रत के अभाव में, जीव सभी आयु पावें।
सब कर्मों का आस्रव करके, तीन लोक में भटकावें॥
भवसागर से मुक्ति पाने, जिनश्रुत का है आराधन।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, भाव सहित करता पूजन॥

ॐ ह्रीं सर्वायु आश्रव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब देवायु के आस्रव के कारण बतलाते हैं

सरागसंयमसंयमा-संयमाकामनिर्जराबालतपांसि दैवस्य ॥20॥

सार-छंद

सराग संयम संयमासंयम, अकाम निर्जरा जानो।
और बाल तप देवायु में, यह सब कारण मानो।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र के द्वारा, हमने यह सब जाना।
सम्यक् ज्ञान के द्वारा, पावन जीव तत्त्व पहिचाना॥

ॐ ह्रीं देवायु बन्धक आश्रव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवायु के आस्रव के कारण

सम्यक्त्वं च ॥21॥

सम्यक्दर्शन देव आयु के, आस्रव का है कारण।
तीन लोक में भव्य जीव का, बंधु रहा अकारण॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र के द्वारा, हमने यह सब जाना।
सम्यक् ज्ञान के द्वारा पावन, जीव तत्त्व पहिचाना॥

ॐ ह्रीं देवायु बन्धक विशेष आश्रव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभनाम कर्म के आस्रव के कारण

योगवक्रता विसंवादनं चाऽशुभस्य नाम्नः ॥22॥

योग वक्रता विसंवाद यह, नाम कर्म के कारण।
नाम कर्म का आस्रव इससे, होवे व्यर्थ अकारण॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र के द्वारा, हमने यह सब जाना।
सम्यक् ज्ञान के द्वारा पावन, जीव तत्त्व पहिचाना॥

ॐ ह्रीं अशुभ नामकर्म आश्रव कारण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभनाम कर्म के आस्रव का कारण

तद्विपरीतं शुभस्य ॥23॥

साधर्मी से विसंवाद न, करते हैं जो प्राणी।
नाम कर्म का आस्रव हो शुभ, कहती है जिनवाणी॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र के द्वारा, हमने यह सब जाना।
सम्यक् ज्ञान के द्वारा पावन, जीव तत्त्व पहिचाना॥

ॐ ह्रीं शुभ नाम कर्म आश्रव कारण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब तीर्थंकर नाम कर्म के आस्रव के कारण बतलाते हैं

दर्शनविशुद्धि-र्विनयसंपन्नता शील-व्रतेष्वनतीचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोग-संवेगौ शक्तितस्त्यागतपसीसाधुसमाधिर्वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्यबहुश्रुत-प्रवचनभक्तिराऽऽवश्यकाऽपरिहाणि-र्मार्गप्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकरत्वस्य ॥24॥

छंद-ताटंक

तीर्थंकर पद के आस्रव में, सोलह कारण भाव कहे।
दरश विशुद्धि विनय संपन्नता, अनतिचार व्रत शील रहे॥

ज्ञानोपयोग अभीक्ष्ण भावना, हो संवेग भावना पूर्ण।
हो शक्तितस्त्याग और तप, साधु समाधि से परिपूर्ण।।
वैयावृत्ति श्रेष्ठ भावना, अर्हदाचार्यों की भक्ति।
बहुश्रुत प्रवचन भक्ति भावना, आवश्यकापरिहार्य यथा शक्ति।।
मार्ग प्रभावना प्रवचन वत्सल, सोलह कारण भाव रहे।
सम्यक् दृष्टि को ही इनको, भाने के अधिकार कहे।।
तीर्थंकर प्रकृति का जो भी, पूर्व भवों में करते बन्ध।
पाँचों कल्याणक पाकर वह, कर्मों से हो जायें अबन्ध।।
प्रकृति तीर्थंकर जो प्राणी, वर्तमान में बंध करें।
तीन या दो कल्याणक पाकर, अपने सारे कर्म हरें।।
तीन या दो कल्याणक प्राणी, वश विदेह में ही पाते।
केवलज्ञानी बनने वाले, मोक्ष महल में वह जाते।।
महापुरुष कल्याणक पाके, अनंत चतुष्ट करते प्राप्त।
कर्म नाशकर अपने सारे, बन जाते हैं प्राणी आप्त।।
सोलह कारण भव्य भावना, भा तीर्थंकर पद पाऊँ।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, जिन चरणों में सिर नाऊँ।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा जागे, ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध तप, सम्यक् रीति आराधन।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि तीर्थंकर नामकर्म आश्रव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीच गोत्र के आस्रव के कारण

परात्म-निन्दा-प्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य।।25।।

पर निन्दा अरु आत्म प्रशंसा, औरों के गुण ढाकें भ्रात।
नीच गोत्र का आस्रव करके, करते जीव स्वयं का घात।।

इस प्रकार कर्मों का आस्रव, करके प्राणी दुख पाते।
भव-भव में दुख पाकर के वह, अंतिम दुर्गति में जाते।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा जागे, ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध तप, सम्यक् रीति आराधन।।

ॐ ह्रीं नीच गोत्र कर्म आश्रव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्च गोत्र कर्म के आस्रव के कारण

तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य।।26।।

अपनी निन्दा और प्रशंसा, औरों के गुण उद्भावन।
उच्च गोत्र का आस्रव पाते, जग के प्राणी मनभावन।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा, जागे ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध तप, सम्यक् रीति आराधन।।

ॐ ह्रीं उच्च गोत्र कर्म आश्रव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय कर्म के आस्रव के कारण

विघ्नकरणमन्तरायस्य।।27।।

अन्य प्राणियों के कार्यों में, विघ्न डालते जो प्राणी।
अन्तराय कर्मों का आस्रव, करते कहती जिनवाणी।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा जागे, ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध तप, सम्यक् रीति आराधन।।

ॐ ह्रीं अंतराय कर्म आश्रव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ

काय वचन अरु मन की चेष्टा, से हो कर्मों का आस्रव।
अनायास कई दुख पाते हैं, जीव अनेकों ही भव-भव।।

सप्त तत्त्व में श्रद्धा जागे, ज्ञानाचार का हो पालन।
कर्मास्रव का हो निरोध तप, सम्यक् रीति आराधन।।

ॐ ह्रीं अशुभाश्रव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित षष्ठम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य :- **ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत आश्रवस्वरूप निरूपक श्री उमास्वामी विरचित षष्ठम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

दोहा- **कर्मास्रव से जीव ने, बाँधे कर्म त्रिकाल।**
आस्रव से बचने यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

केसरी छंद

हमने काय के द्वारा भाई, आस्रव कीन्हा है दुखदायी।
वाणी पर संयम नहिं धारा, जो आया सो ही उच्चारा।
एकेन्द्रिय प्राणी बन भाई, वचनों की शक्ती नहिं पाई।
भव-भव में हम हुए दुखारी, भटके चतुर्गति में भारी।
मन को वश में न कर पाए, इच्छित वस्तु पा हर्षाए।
इच्छा पूर्ण नहीं हो पाई, तो हम दुखी हुए अति भाई।
इससे कीन्हा आस्रव भारी, यह सब गल्ती रही हमारी।
बचना है अब अशुभ से भाई, वह होता भव-भव दुखदाई।
पुण्यास्रव शुभ भाव से होवे, जीवों के सब ही दुख खोवे।
कभी तीव्र आस्रव हो भाई, कभी मंद होता है भाई।
कभी जानकर आस्रव होवे, मानव अपनी सुध बुध खोवे।
बिन जाने आस्रव हो भाई, जिसमें कर्म मुख्य हैं भाई।
भाव कई होते हैं भाई, आस्रव के कारण अधिकाई।

कई अचेतन आस्रव जानो, चेतन भी कई इक पहिचानो।
ज्ञान-दर्शनावरण के भाई, कारण तुल्य कहे जिनराई।
साता और असाता जानो, वेदनीय दो रूप बखानो।
इससे सुख-दुख पाते प्राणी, शिक्षा देती है जिनवाणी।
दर्शन अरु चारित्र कहे हैं, मोहनीय के भेद रहे हैं।
आयु के चउ भेद बखाने, उनके आस्रव हमने जाने।
अशुभ और शुभ भेद कहे हैं, नामकर्म के भेद रहे हैं।
तीर्थंकर प्रकृति भी जानो, इससे मुक्ति निश्चय मानो।
उच्च नीच दो गोत्र कहे हैं, आस्रव के आधार रहे हैं।
अशुभ और शुभ आस्रव भाई, करे जीव क्षण-क्षण में भाई।
हमने आस्रव से दुख पाए, फिर भी चेत नहीं हम पाए।
बंध सभी कर्मों का पाया, इससे चेतन चेत न पाया।
जैनागम की शरण में आए, भक्तिभाव से शीश झुकाए।
आगम से यह ज्ञान जगाया, आस्रव हमने रोक न पाया।
कर्मों का आस्रव रुक जाए, तप से कर्म निर्जरा पाए।
कर्म नाश कर शिवपुर जाना, विशद ज्ञान से सिद्धि पाना।

दोहा- जैनागम के ज्ञान से, हृदय जगे श्रद्धान।
स्व-पर हित को जानकर, करूँ आत्मकल्याण॥

ॐ ह्रीं आस्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित षष्टम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- निज आतमकल्याण की, जगी है मन में चाह।
अतः आज आया शरण, पाने सम्यक् राह॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

सप्तम् अध्याय पूजन

स्थापना

पुण्य उदय से सद्दर्शन, सद्ज्ञान चरण को पाते हैं।
कर पुरुषार्थ विशद अनुपम वह, सिद्ध शिला को जाते हैं।।
हो पुरुषार्थहीन अज्ञानी, भवसागर में गोते खाते।
पाते हैं जन्म-मरण भव-भव, अरु तीन लोक में भटकाते।
अब शरण प्राप्तकर जिनश्रुत की, सद्ज्ञान आचरण पाना है।
आह्वानन कर तत्त्वार्थ सूत्र का, अपने हृदय सजाना है।।

ॐ ह्रीं आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित सप्तम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं विरति स्वरूप प्ररूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित सप्तम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं व्रत भावना अतिचारादि प्ररूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित सप्तम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।।

मंगलमय प्रासुक जल लेकर, आज चढ़ाने लाए हैं।
जन्म-जरा-मृत्यु रोगों से, मुक्ती पाने आए हैं।।
तत्त्वार्थ सूत्र के सूत्रों की, हम मंगल महिमा गाते हैं।
मंगलमय तत्त्वार्थ सूत्र को, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित सप्तम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय मंगल करने को, मंगल केसर लाए हैं।
मंगलमय श्रुत पूजा करके, भव ताप नशाने आए हैं।।
तत्त्वार्थ सूत्र के सूत्रों की, हम मंगल महिमा गाते हैं।
मंगलमय तत्त्वार्थ सूत्र को, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित सप्तम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय मंगल करने को, मंगल अक्षत लाए हैं।
मंगल अक्षय पद पाने हम, जिनश्रुत मंगल पाए हैं।।
तत्त्वार्थ सूत्र के सूत्रों की, हम मंगल महिमा गाते हैं।
मंगलमय तत्त्वार्थ सूत्र को, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित सप्तम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय यह पुष्प सुमंगल, मंगलता को पाए हैं।
विध्वंश काम की ज्वाला हो, हम मंगल करने आए हैं।।
तत्त्वार्थ सूत्र के सूत्रों की, हम मंगल महिमा गाते हैं।
मंगलमय तत्त्वार्थ सूत्र को, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित सप्तम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय षट्रस से निर्मित, चरुवर मंगल लाए हैं।
मंगलमय जीवन हेतु हम, क्षुधा नशाने आए हैं।।
तत्त्वार्थ सूत्र के सूत्रों की, हम मंगल महिमा गाते हैं।
मंगलमय तत्त्वार्थ सूत्र को, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित सप्तम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय घृत का दीपक यह, आज जलाकर लाए हैं।
विशद ज्ञान का मंगल दीपक, शीघ्र जलाने आए हैं।।
तत्त्वार्थ सूत्र के सूत्रों की, हम मंगल महिमा गाते हैं।
मंगलमय तत्त्वार्थ सूत्र को, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित सप्तम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय यह धूप दशांगी, मंगल हेतू लाए हैं।
मंगलमय अग्नि में खेकर, अब धूम उड़ाने आए हैं।।
तत्त्वार्थ सूत्र के सूत्रों की, हम मंगल महिमा गाते हैं।
मंगलमय तत्त्वार्थ सूत्र को, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित सप्तम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय फल सरस सुमंगल, यह अचित्त हम लाए हैं।
मोक्ष महाफल जग में मंगल, उसको पाने आए हैं।।
तत्त्वार्थ सूत्र के सूत्रों की, हम मंगल महिमा गाते हैं।
मंगलमय तत्त्वार्थ सूत्र को, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित सप्तम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य जग में मंगलमय, उनसे अर्घ्य बनाए हैं।
मंगलमय है पद अनर्घ वह, पाने अर्घ्य चढ़ाए हैं।।
तत्त्वार्थ सूत्र के सूत्रों की, हम मंगल महिमा गाते हैं।
मंगलमय तत्त्वार्थ सूत्र को, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं आश्रव तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित सप्तम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम वलयः

दोहा- जैनागम के ज्ञान से पाया सद् श्रद्धान।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से हो आतम कल्याण।।

(अथ सप्तमवलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

सूत्र प्रारम्भ

व्रत का लक्षण

हिंसाऽनृत-स्तेयाब्रह्म-परिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ॥1॥

गीता-छंद

हिंसा असत्य अरु झूठ चोरी, अब्रह्म परिग्रह जानिए।
इन पाँच पापों से विरक्ति, को विरत पहिचानिए॥
पुण्य आस्रव का कथन, करते हैं सम्यक्ज्ञान से।
हम अर्घ्य करते हैं समर्पित, सूत्र को सम्मान से॥

ॐ ह्रीं व्रत स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत के भेद

देशसर्वतोऽणु-महती ॥2॥

देशव्रत को अणुव्रत शुभ, जैन आगम कह रहा।
सर्व व्रत को महाव्रत भी, वीर जिनवर ने कहा॥
पुण्य आस्रव का कथन, करते हैं सम्यक्ज्ञान से।
हम अर्घ्य करते हैं समर्पित, सूत्र को सम्मान से॥

ॐ ह्रीं व्रत भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब व्रतों में स्थिरता के कारण बतलाते हैं

तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च ॥3॥

वीर-छंद

स्थिर रहने हेतु व्रतों में, कहीं भावनायें भाई।
पाँच-पाँच संख्या आगम में, श्री जिनेन्द्र ने बतलाई॥
इस अध्याय में पुण्यास्रव का, कथन किए आचार्य प्रवर।
भक्ति भाव से जैनागम के, चिंतन से हो बुद्धि प्रखर॥

ॐ ह्रीं व्रत भावना प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहिंसाव्रत की पाँच भावनाएँ

वाङ्मनोगुप्तीर्याऽऽदाननिक्षेपण-समित्यालोकितपान-भोजनानि पञ्च ।।4।।

ईर्या समिति आदान निक्षेपण, वचन-मनोगुप्ति पहिचान।
भोजन पान कहा आलोकित, पञ्च भावनाएँ यह जान।।
प्रथम अहिंसा व्रत में स्थिर, होने को आते जो लोग।
कर्म निर्जरा करते हैं वह, पाते मुक्ति वधु का योग।।
इस अध्याय में पुण्याश्रव का, कथन किए आचार्य प्रवर।
भक्ति भाव से जैनागम के, चिंतन से हो बुद्धि प्रखर।।

ॐ ह्रीं अहिंसा व्रतस्य पंच भावना प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्यव्रत की पाँच भावनाएँ

क्रोध-लोभ-भीरुत्व-हास्य-प्रत्याख्याना-न्यनुवीचि-भाषणं च पञ्च ।।5।।

क्रोध लोभ भीरुत्व हास्य का, करके भाई प्रत्याख्यान।
अनुवीचि भाषण करना शुभ, पञ्च भावनाएँ पहिचान।।
द्वितीय सत्य सुव्रत में स्थिर, होने को भाते जो लोग।
कर्म निर्जरा करते हैं वह, पाते मुक्ति वधु का योग।।
इस अध्याय में पुण्याश्रव का, कथन किए आचार्य प्रवर।
भक्ति भाव से जैनागम के, चिंतन से हो बुद्धि प्रखर।।

ॐ ह्रीं सत्य व्रतस्य पंच भावना प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचौर्यव्रत की पाँच भावनाएँ

शून्यागार विमोचितावास-परोपरोधाकरण भैक्ष्यशुद्धिसधर्मा-विसंवादाः पञ्च ।।6 ।।

शून्यागार विमोचित गृह अरु, भैक्ष्य शुद्धि रखना हरदम।
परोपरोध करना लोगों में, सधर्मा विसम्वादी पंचम।।
तृतीय अचौर्य सुव्रत में स्थिर, भव्य भावना भाते हैं।
कर्म निर्जरा करने वाले, मुक्ति वधू को पाते हैं।।
इस अध्याय में पुण्यास्रव का, कथन किए आचार्य प्रवर।
भक्ति भाव से जैनागम के, चिंतन से हो बुद्धि प्रखर।।

ॐ ह्रीं अचौर्य व्रतस्य पंच भावना प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य व्रत की पाँच भावनाएँ

स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहराङ्गनिरीक्षणपूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्टरस-स्वशरीर-संस्कार-त्यागाः पञ्च ।।7 ।।

स्त्री राग कथा सुनने का, आंगोपांग निरीक्षण त्याग।
भोगे गये पूर्व विषयों अरु, स्व शरीर संस्कार विराग।।
वृष अरु इष्ट रसों को तजना, पञ्च भावनाएँ हैं श्रेष्ठ।
कर्मनिर्जरा करने हेतु, इनको भाओ भाई यथेष्ठ।।
इस अध्याय में पुण्यास्रव का, कथन किए आचार्य प्रवर।
भक्ति भाव से जैनागम के, चिंतन से हो बुद्धि प्रखर।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य व्रतस्य पंच भावना प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रहत्याग व्रत की पाँच भावनाएँ

मनोज्ञा-ऽमनोज्ञेन्द्रिय-विषय-राग-द्वेष-वर्जनानि पञ्च ।।8।।

मनोज्ञामनोज्ञ विषय इन्द्रिय के, उनमें राग-द्वेष वर्जन।
अपरिग्रह व्रत की भव्य भावना, भाने से हो पुण्यार्जन।।
इस अध्याय में पुण्यास्रव का, कथन किए आचार्य प्रवर।
भक्ति भाव से जैनागम के, चिंतन से हो बुद्धि प्रखर।।

ॐ ह्रीं परिग्रह त्याग व्रतस्य पंच भावना प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसा आदि से विरक्त होने की भावना

हिंसादि-ष्विहामुत्राऽपायाऽवद्यदर्शनम् ।।9।।

हिंसादि के द्वारा इस भव, में अपाय का हो दर्शन।
अरु अमुत्र में हिंसादि से, हो अबंध का दिग्दर्शन।।
इस अध्याय में पुण्यास्रव का, कथन किए आचार्य प्रवर।
भक्ति भाव से जैनागम के, चिंतन से हो बुद्धि प्रखर।।

ॐ ह्रीं हिंसादि पाप उन्मुक्त हेतु भावना प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसादिक पाप दुःख रूप हैं

दुःखमेव वा ।।10।।

हिंसादि इन पंच पाप को, दुख कहते हैं वीर जिनेश।
पापों के कारण होते यह, ऐसा दिया गया निर्देश।।
इस अध्याय में पुण्यास्रव का, कथन किए आचार्य प्रवर।
भक्ति भाव से जैनागम के, चिंतन से हो बुद्धि प्रखर।।

ॐ ह्रीं हिंसादि पाप परिणाम प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रतधारी सम्यग्दृष्टि की भावना

मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थ्यानि च सत्त्वगुणाधिकक्लिश्यमानाऽविनयेषु॥11॥

मैत्री भाव सभी जीवों में, गुणाधिक्य में रहे प्रमोद।
करुणा भाव रहे दुखियों में, ऐसा मन में जागे बोध॥
हो माध्यस्थ भाव उनके प्रति, जिनकी वृत्ति है विपरीत।
जैनधर्म की वृत्ती मेरे, जीवन में हो जावे मीत॥
इस अध्याय में पुण्यास्रव का, कथन किए आचार्य प्रवर।
भक्ति भाव से जैनागम के, चिंतन से हो बुद्धि प्रखर॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वस्य भावना प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रतों की रक्षा के लिए सम्यग्दृष्टि की विशेष भावना

जगत्कायस्वभावौ वा संवेग-वैराग्यार्थम्॥12॥

जग स्वभाव के चिंतन द्वारा, मन में हो संवेग विशेष।
हो वैराग्य भाव अंतर में, काय का चिंतन करें अशेष॥
इस अध्याय में पुण्यास्रव का, कथन किए आचार्य प्रवर।
भक्ति भाव से जैनागम के, चिंतन से हो बुद्धि प्रखर॥

ॐ ह्रीं जगत् काय स्वभावात् संवेग वैराग्य चिंतन प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसा-पाप का कारण

प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा॥13॥

सरसी-छंद

प्राणों का व्यपरोपण हिंसा, हो प्रमाद द्वारा।
श्री जिनेन्द्र ने कथन किया यह, सारा का सारा॥
जैनागम के सूत्र रहे हैं, जग में उपकारी।
अर्घ्य चढ़ाकर वंदन करते, जग मंगलकारी॥

ॐ ह्रीं हिंसा-पाप लक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असत्य का स्वरूप

असदभिधानमनृतम्॥14॥

असद् वचन अनृत कहलाए, हो प्रमाद द्वारा।
श्री जिनेन्द्र ने कथन किया यह, सारा का सारा॥
जैनागम के सूत्र रहे हैं, जग में उपकारी।
अर्घ्य चढ़ाकर वंदन करते, जग मंगलकारी॥

ॐ ह्रीं असत्य लक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तेय (चोरी) का स्वरूप

अदत्तादानं स्तेयम्॥15॥

जो अदत्त को ग्रहण करे वह, चोरी कहलाए।
हो प्रमाद के द्वारा कोई, उसका फल पाए॥
जैनागम के सूत्र रहे हैं, जग में उपकारी।
अर्घ्य चढ़ाकर वंदन करते, जग मंगलकारी॥

ॐ ह्रीं स्तेय लक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुशील (अब्रह्मचर्य) का स्वरूप

मैथुनमब्रह्म॥16॥

मैथुन को अब्रह्म कहा है, आगम के द्वारा।
श्री जिनेन्द्र ने कथन किया यह, सारा का सारा॥
जैनागम के सूत्र रहे हैं, जग में उपकारी।
अर्घ्य चढ़ाकर वंदन करते, जग मंगलकारी॥

ॐ ह्रीं कुशील लक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह का स्वरूप

मूर्छा परिग्रहः ॥17॥

मूर्छा कही परिग्रह भाई, हो प्रमाद द्वारा।
श्री जिनेन्द्र ने कथन किया यह, सारा का सारा॥
जैनागम के सूत्र रहे हैं, जग में उपकारी।
अर्घ्य चढ़ाकर वंदन करते, जग मंगलकारी॥

ॐ ह्रीं परिग्रह लक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रती की विशेषता

निःशल्यो व्रती॥18॥

व्रती शल्य से रहित कहे हैं, आगम के द्वारा।
श्री जिनेन्द्र ने कथन किया यह, सारा का सारा॥
जैनागम के सूत्र रहे हैं, जग में उपकारी।
अर्घ्य चढ़ाकर वंदन करते, जग मंगलकारी॥

ॐ ह्रीं शल्य रहित व्रती लक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रती के भेद

अगार्यनगारश्च॥19॥

भेद व्रती के दो बतलाए, आगम के द्वारा।
आगारी अनगारी का है, कथन बड़ा प्यारा॥
जैनागम के सूत्र रहे हैं, जग में उपकारी।
अर्घ्य चढ़ाकर वंदन करते, जग मंगलकारी॥

ॐ ह्रीं व्रती भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागार का लक्षण

अणुव्रतोऽगारी ॥20॥

अणुव्रती को कहा आगारी, आगम के द्वारा।
श्री जिनेन्द्र ने कथन किया यह, सारा का सारा॥
जैनागम के सूत्र रहे हैं, जग में उपकारी।
अर्घ्य चढ़ाकर वंदन करते, जग मंगलकारी॥

ॐ ह्रीं सागार लक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब अणुव्रत के सहायक सात शीलव्रत कहते हैं

दिग्देशाऽनर्थदण्डविरतिसामायिकप्रोषधोपवासोपभोग-परिभोग-परिमाणाऽतिथि-संविभाग व्रत-सम्पन्नश्च ॥21॥

(वीर छंद)

दिग्व्रत देश अनर्थदण्ड व्रत, सामायिक प्रोषध उपवास।
भोगोपभोग परिमाण अतिथि का, संविभागव्रत होवे खास॥
गुणव्रत तीन चार शिक्षाव्रत, सात शील व्रत कहलाते।
पञ्च व्रतों की रक्षा के यह, हेतु अनुपम हम पाते॥
इस अध्याय में पुण्यास्रव का, कथन किए आचार्य प्रवर।
भक्ति भाव से जैनागम के, चिंतन से हो बुद्धि प्रखर॥

ॐ ह्रीं सप्तशील व्रत प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रती को सल्लेखनाधारण करने का उपदेश

मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ।।22।।

सल्लेखना हो प्रीतिपूर्वक, मरणान्तिक के समय विशेष।
अणुव्रतों को धारण करके, करते जीवन पूर्ण अशेष।।
इस अध्याय में पुण्यास्रव का, कथन किए आचार्य प्रवर।
भक्ति भाव से जैनागम के, चिंतन से हो बुद्धि प्रखर।।

ॐ ह्रीं सल्लेखनायाः अनिवार्यता प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन के पाँच अतिचार

शङ्काकांक्षाविचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः ।।23।।

शंकाकांक्षा विचिकित्सा अरु, अन्य दृष्टि प्रशंसा संस्तव।
अतिचार सम्यक्दर्शन के, दुखकर होते हैं भव-भव।।
इस अध्याय में पुण्यास्रव का, कथन किए आचार्य प्रवर।
भक्ति भाव से जैनागम के, चिंतन से हो बुद्धि प्रखर।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनस्य अतिचार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब पाँच व्रत और सात शीलों के अतिचार कहते हैं

व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम् ।।24।।

पंच व्रतों अरु सप्तशील के, पञ्च-पञ्च अतिचार कहे।
क्रमशः सभी व्रतों में दूषण, करने वाले सभी रहे।।
इस अध्याय में पुण्यास्रव का, कथन किए आचार्य प्रवर।
भक्ति भाव से जैनागम के, चिंतन से हो बुद्धि प्रखर।।

ॐ ह्रीं व्रतातिचार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहिंसाणुव्रत के पाँच अतिचार

बन्धवधच्छेदातिभारारोपणाऽन्नपाननिरोधाः॥25॥

वध बंधन छेदन अतिभारारोपण अन्न-पान का रोध।
परम अहिंसा व्रत के पाँचों, अतिचारों का होय निरोध॥
इस अध्याय में पुण्यास्रव का, कथन किए आचार्य प्रवर।
भक्ति भाव से जैनागम के, चिंतन से हो बुद्धि प्रखर॥

ॐ ह्रीं अहिंसाणुव्रतस्य अतिचार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्याणुव्रत के पाँच अतिचार

मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकूटलेखक्रियान्यासापहारसाकारमन्त्रभेदाः॥26॥

मिथ्योपदेश न्यासापहार अरु, कूट लेख की क्रिया सुजान।
साकार मंत्र भेद करना अरु, रहोभ्याख्यान करना यह जान॥
सत्य सुव्रत के अतिचार यह, जैनागम में कहे जिनेश।
अतिचार से रहित व्रतों का, पालन मैं कर सकूँ विशेष॥
इस अध्याय में पुण्यास्रव का, कथन किए आचार्य प्रवर।
भक्ति भाव से जैनागम के, चिंतन से हो बुद्धि प्रखर॥

ॐ ह्रीं सत्याणुव्रतस्य अतिचार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचौर्याणुव्रत के पाँच अतिचार

स्तेनप्रयोगतदाहृताऽऽदानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूपक-व्यवहाराः॥27॥

चौर्य प्रयोगादान चौर्य का, हीनाधिक हो मानोन्मान।
राज्य विरुद्ध क्रय-विक्रय करना, प्रतिरूप व्यवहार सुजान॥

व्रत अचौर्य के अतिचार यह, जैनागम में कहे जिनेश।
अतिचार से रहित व्रतों का, पालन मैं कर सकूँ विशेष।
पुण्याश्रव के द्वारा पाऊँ, मोक्ष मार्ग अनुपम अक्षय।
मोक्ष सुखों को पा जाएँ हम, कभी नहीं हो जिनका क्षय।।

ॐ ह्रीं अचौर्याणुव्रतस्य अतिचार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्याणुव्रत के पाँच अतिचार

परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीताऽपरिगृहीतागमनाऽनङ्गक्रीडाकामतीव्राभिनिवेशाः ।।28।।

पर विवाह पर-अपर कोई भी, स्त्री से रखना व्यवहार।
काम तीव्र क्रीड़ा अनंग यह, पंच बताए हैं अतिचार।।
ब्रह्मचर्य के अतिचार यह, जैनागम में कहे जिनेश।
अतिचार से रहित व्रतों का, पालन मैं कर सकूँ विशेष।।
पुण्याश्रव के द्वारा पाऊँ, मोक्ष मार्ग अनुपम अक्षय।
मोक्ष सुखों को पा जाएँ हम, कभी नहीं हो जिनका क्षय।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्याणुव्रतस्य अतिचार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह परिमाणुव्रत के पाँच अतिचार

क्षेत्रवास्तु-हिरण्यसुवर्ण-धनधान्य-दासीदास-कुप्य-प्रमाणातिक्रमाः ।।29।।

क्षेत्र वास्तु सोना-चाँदी धन, धान्य दास-दासी अरु वस्त्र।
हीनाधिक करना प्रमाण से, व्रती को कर देते हैं त्रस्त।।
अतिचार परिग्रह प्रमाण के, जैनागम में कहे जिनेश।
अतिचार से रहित व्रतों का, पालन मैं कर सकूँ विशेष।।
पुण्याश्रव के द्वारा पाऊँ, मोक्ष मार्ग अनुपम अक्षय।
मोक्ष सुखों को पा जाएँ हम, कभी नहीं हो जिनका क्षय।।

ॐ ह्रीं परिग्रह परिमाणाणुव्रतस्य अतिचार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिग्व्रत के पाँच अतिचार

ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्य-तिक्रमक्षेत्र-वृद्धि-स्मृत्यन्तराधानानि ।।30।।

ऊर्ध्व अधः अरु तिर्यग्लोक की, मर्यादा का व्यतिक्रम जान।
स्मृति का अंतराधन करना, अतिचार यह पञ्च सुजान।।
दिग्व्रत के यह अतिचार हैं, जैनागम में कहे जिनेश।
अतिचार से रहित व्रतों का, पालन मैं कर सकूँ विशेष।।
पुण्याश्रव के द्वारा पाऊँ, मोक्ष मार्ग अनुपम अक्षय।
मोक्ष सुखों को पा जाएँ हम, कभी नहीं हो जिनका क्षय।।

ॐ ह्रीं गुणव्रतस्य दिग्व्रतातिचार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशव्रत के पाँच अतिचार

आनयनप्रेष्य-प्रयोग-शब्दरूपानुपात-पुद्गलक्षेपाः ।।31।।

मर्यादा के बाहर से कोई, वस्तु लावे ले जावे।
शब्द रूप पुद्गल क्षेपण की, कोई भी विधि अपनावे।।
अतिचार यह देशव्रतों के, जैनागम में कहे जिनेश।
अतिचार से रहित व्रतों का, पालन मैं कर सकूँ विशेष।।
पुण्याश्रव के द्वारा पाऊँ, मोक्ष मार्ग अनुपम अक्षय।
मोक्ष सुखों को पा जाएँ हम, कभी नहीं हो जिनका क्षय।।

ॐ ह्रीं गुणव्रतस्य देशव्रतातिचार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनर्थदण्डव्रत के पाँच अतिचार

कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोग परिभोगाऽऽनर्थक्यानि।।32।।

वचन अशिष्ट कुचेष्टा करना, बिना प्रयोजन की बकवास।
योगों की हो व्यर्थ चेष्टा, भोगोपभोग कुसंग्रह खास।।
अनर्थदण्ड के अतिचार यह, जैनागम में कहे जिनेश।
अतिचार से रहित व्रतों का, पालन मैं कर सकूँ विशेष।।
पुण्याश्रव के द्वारा पाऊँ, मोक्ष मार्ग अनुपम अक्षय।
मोक्ष सुखों को पा जाएँ हम, कभी नहीं हो जिनका क्षय।।

ॐ ह्रीं गुणव्रतस्य अनर्थदण्ड व्रतातिचार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सामयिक शिक्षाव्रत के पाँच अतिचार

योगदु:प्रणिधानाऽनादरस्मृत्यनुपस्थानानि।।33।।

दुष्प्रणिधान काय वच तन का, स्मृति का हो अनुप्रस्थान।
और अनादर सामायिक का, अतिचार पाँचों पहिचान।।
सामायिक के अतीचार यह, जैनागम में कहे जिनेश।
अतिचार से रहित व्रतों का, पालन मैं कर सकूँ विशेष।।
पुण्याश्रव के द्वारा पाऊँ, मोक्ष मार्ग अनुपम अक्षय।
मोक्ष सुखों को पा जाएँ हम, कभी नहीं हो जिनका क्षय।।

ॐ ह्रीं शिक्षाव्रतस्य सामायिक अतिचार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रोषधोपवास शिक्षाव्रत के पाँच अतिचार

अप्रत्यवेक्षिताऽप्रमार्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमणाऽनादरस्मृत्यनुप-स्थानानि।।34।।

बिन देखे बिन शोधे वस्तु, रखना अरु करना आदान।
संस्तरोपक्रमण अनादर करना, अरु स्मृति का अनुप्रस्थान।।

प्रोषधोपवास के अतिचार यह, जैनागम में कहे जिनेश।
अतिचार से रहित व्रतों का, पालन मैं कर सकूँ विशेष॥
पुण्याश्रव के द्वारा पाऊँ, मोक्ष मार्ग अनुपम अक्षय।
मोक्ष सुखों को पा जाएँ हम, कभी नहीं हो जिनका क्षय॥

ॐ ह्रीं शिक्षाव्रतस्य प्रोषधोपवास अतिचार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपभोग-परिभोग-परिमाण-शिक्षाव्रत के पाँच अतिचार

सचित्तसम्बन्धसंमिश्राभिषवदुःपक्वाहाराः॥35॥

सचित्ताहार संबंध मिश्र अरु, हो गरिष्ठ भोजन अरु पान।
अर्ध पक्व या अतिपक्व को, तू अनिष्टकारी पहिचान॥
अतिचार भोगोपभोग के, जैनागम में कहे जिनेश।
अतिचार से रहित व्रतों का, पालन मैं कर सकूँ विशेष॥
पुण्याश्रव के द्वारा पाऊँ, मोक्ष मार्ग अनुपम अक्षय।
मोक्ष सुखों को पा जाएँ हम, कभी नहीं हो जिनका क्षय॥

ॐ ह्रीं शिक्षाव्रतस्य भोगोपभोग परिमाण अतिचार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिथि संविभाग व्रत के पाँच अतिचार

सचित्तनिक्षेपापिधानपरव्यपदेशमात्सर्य्यकालाऽतिक्रमाः॥36॥

सचित्त पत्र पर भोजन रखना, ढकना होवे पर व्यपदेश।
मात्सर्य हो काल अतिक्रम, अतिचार यह कहे जिनेश।
अतिचार अतिथि सेवा के, जैनागम में कहे जिनेश।
अतिचार से रहित व्रतों का, पालन मैं कर सकूँ विशेष॥
पुण्याश्रव के द्वारा पाऊँ, मोक्ष मार्ग अनुपम अक्षय।
मोक्ष सुखों को पा जाएँ हम, कभी नहीं हो जिनका क्षय॥

ॐ ह्रीं शिक्षाव्रतस्य अतिथि संविभाग व्रतातिचार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब सल्लेखना के पाँच अतिचार कहते हैं

जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानानि ।।37 ।।

जीवन-मरण की इच्छा करना, मित्रों से होवे अनुराग।
सुख की चाह और निंदा यह, अतिचार तू पाँचों त्याग ।।
सल्लेखना के अतिचार यह, जैनागम में कहे जिनेश।
अतिचार से रहित व्रतों का, पालन मैं कर सकूँ विशेष ।।
पुण्याश्रव के द्वारा पाऊँ, मोक्ष मार्ग अनुपम अक्षय।
मोक्ष सुखों को पा जाएँ हम, कभी नहीं हो जिनका क्षय ।।

ॐ ह्रीं सल्लेखनाया पंचातिचार प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दान का स्वरूप

अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ।।38 ।।

स्व-पर के उपकार हेतु धन, का करते हैं जो भी त्याग।
इसको दान कहा आगम में, इससे तू रखना अनुराग ।।
पुण्याश्रव के द्वारा पाऊँ, मोक्ष मार्ग अनुपम अक्षय।
मोक्ष सुखों को पा जाएँ हम, कभी नहीं हो जिनका क्षय ।।

ॐ ह्रीं दान लक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दान में विशेषता

विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ।।39 ।।

नवधा भक्तिपूर्वक क्रमशः, विधि द्रव्य दातृ हो पात्र।
यह विशेषता जान दान के, हेतु खोजो तुम सत्पात्र ।।
पुण्याश्रव के द्वारा पाऊँ, मोक्ष मार्ग अनुपम अक्षय।
मोक्ष सुखों को पा जाएँ हम, कभी नहीं हो जिनका क्षय ।।

ॐ ह्रीं दान पात्रादि विशेषता प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ

अहिंसादि पंच व्रत लोकवर्ती मंगलम्।
मोक्षमार्ग का प्रकाशी जैनागम मंगलम्।।
वीतरागी निर्विकार जैन संत मंगलम्।
लोक में कल्याणकारी जैनधर्म मंगलम्।।
अष्ट द्रव्य का परम अर्घ्य लिए मंगलम्।
पद अनर्घ प्राप्त होय शीघ्र मुझे मंगलम्।।

ॐ ह्रीं पुण्याश्रव प्ररूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित सप्तमाध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जलादि महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य :- ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत पुण्याश्रव निरूपक श्री उमास्वामी विरचित सप्तम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- **मंगलमय जिन सूत्र हैं, मंगलमय श्रुतज्ञान।**
मंगलमय जयमाल कर, मंगल हो गुणगान।।

छंद-हरिगीता

हम अहिंसा आदि अणुव्रत, का स्वयं पालन करें।
हों नहीं अतिचार उनमें, दोष सारे परिहरें।।
शील से परिपूर्ण व्रत को, धार लें हम भाव से।
भावनाएँ नित्य भायें, भाव से हम चाव से।।
मैत्री आदि भावनाओं, को हृदय में धार लें।
लोक का चिंतन करें, वैराग्य हृदय उतार लें।।

पाप हिंसादी कहे जो, उनसे हम बचते रहें।
कष्ट जो आवे उदय में, सर्व समता से सहें।।
व्रतों में अतिचार कोई, न लगे मेरे कभी।
दोष कोई भी लगें वह, दूर हों मेरे सभी।।
महाव्रत हम करें धारण, कर्म का संवर करें।
ध्यान कर निज आतमा का, कर्म सारे परिहरें।।
शुद्ध संयम आचरण के, हेतु सम्यक् ज्ञान हो।
नाश हो मिथ्यात्व का अरु, नाश मम अज्ञान हो।।
निष्प्रमादी बन सकूँ मैं, मोह का मर्दन करूँ।
निष्कषाई हो विशद निज, आत्म का चिंतन करूँ।।
कर्मघाती नाश करके, प्रकट केवलज्ञान हो।
सकल लोकालोक झलके, मुझे यह वरदान हो।।
सदा शिव सर्वोच्च पाकर, कर सकूँ निज में रमण।
ज्ञान का सागर अनंतानंत, को शत्-शत् नमन्।।
ज्ञान दर्शन आचरण के, गीत हम गाते रहें।
सदा ही इस लोक में, जिनधर्म की सरिता बहे।।

घत्तानंद छंद

पाएँ हम संयम, त्याग असंयम, जैनधर्म धन हम पावें।
सद्ज्ञान जगाएँ कर्म नशाएँ, शिवपद पदवी को पावें।।

ॐ ह्रीं पुण्याश्रव निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित सप्तम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्य छंद

पुण्यास्रव को प्राप्त धर्म निधि पाइये, नाश होय अज्ञान ज्ञान गुण गाइये।
सद् दर्शन सद्ज्ञान चरण को पायके, मुक्ति वधु हो प्राप्त शरण जिन आयके।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

अष्टम अध्याय पूजन

स्थापना

कर्म बंध के हेतू का हम, ज्ञान नहीं कर पाए हैं।
इस कारण से चतुर्गति में, बार-बार भटकाए हैं।।
भव वन से छुटकारा पाने, जैनागम को ध्याते हैं।
अब अष्टम अध्याय के सूत्रों, की हम महिमा गाते हैं।
जिनवर कथित रहा जैनागम, उसका करते आह्वानन्।
भक्ति भाव से हाथ जोड़कर, करते हैं शत्-शत् वंदन।।

ॐ ह्रीं बन्ध तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित अष्टम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं बन्ध स्वरूप निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित अष्टम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अष्टकर्मश्चि पुण्य पाप प्रकृति भेद प्ररूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित अष्टम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

दशधर्म की लय

सोरठा- **प्रासुक निर्मल नीर, कलशा झारी में भरूँ।**
देकर धारा तीन, भव की बाधा मैं हरूँ।।

(चौपाई मिश्रित गीता छंद)

चतुर्गति में हम भटकाए, जन्म-जरा-मृत्यु को पाए।
मिथ्यामति ने घेरा डाला, भोगों ने दे हमें हवाला।।
देकर हवाला भोग का, योगों से हमको दूर कर।
उत्पन्न करके विषय तृष्णा, मोह को मजबूर कर।।
अब नीर सम्यक् ज्ञान का ले, कर्म का संवर करूँ।
करके सुतप से निर्जरा मैं, मोक्ष मग में पग धरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं बन्ध तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित अष्टम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- **चंदन ले गोशीर, घिसकर लाया हर्षमय।**
मेंटू भव की पीर, हो जावें सब कर्म क्षय।।

भवसागर में गोते खाए, उनसे छूट नहीं हम पाए।
नरक निगोद सहे दुख भारी, नर पशु में जा गति विगारी।।
जाके विगारी गति अपनी, सुर असुर के बीच में।
मैं हूँ फंसाया मोह मन्मथ, रागमल के कीच में।।
शुभ गंध सम्यक्दर्श का ले, आ गया आगम शरण।।
मिट जाए मेरे रोग तीनों, प्राप्त हो पण्डित मरण।।2।।

ॐ ह्रीं बन्ध तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित अष्टम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- **अक्षय अक्षत लाय, पूजा करते भाव से।**
अक्षय पद सुखदाय, पाने को अर्चन करूँ।।

लोक में जितने भी पद गाए, वह सारे पद हमने पाए।
कोई शाश्वत् रहा नहीं है, तीन लोक में कोई कहीं है।।
कोई कहीं शाश्वत नहीं है, असुर-सुर-नागेन्द्र भी।
न है मनुज अहमिन्द्र पदवी, चक्रवर्ती इन्द्र भी।।
अब भावना है यही मेरी, सुपद अक्षय प्राप्त हो।
बन सकूँ शिवपुर का वासी, विशद ज्ञानी आप्त हो।।3।।

ॐ ह्रीं बन्ध तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित अष्टम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- **पुष्प सुकोमल लाय, करने को पूजा महाँ।**
काम कलंक नशाय, मंगलमय जीवन बने।।

कामवासना बहु दुखदाई, उससे मुक्ति न मिल पाई।
विषयों की तृष्णा बहु जागी, उनका बना रहा मैं रागी।।
रागी बने हम सुत सुता अरु, जमीं जोरू भोग के।
हम बहु सताए लोक में कई, जन्म आदि रोग के।।
विध्वंश करके काम को, निष्काम योगी हम बनें।
ध्यान कर निज आत्मा का, कर्म आठों ही हनें।।4।।

ॐ ह्रीं बन्ध तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित अष्टम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- चरुवर सरस बनाय, भरकर लाया थाल में।
क्षुधा रोग नश जाय, पूजन करके भक्त का।।

षट्रस मिश्रित भोजन खाते, फिर भी भूख मिटा न पाते।
सदियाँ बीती जीवन बीता, पेट रहा रीता का रीता।।
रीता रहा यह पेट हरदम, नित्य हम भरते रहे।
यह पूर्ण करने हेतु हमने, कष्ट कितने ही सहे।।
अब क्षुधा बाधा नाश करके, कर्म की बाधा हरूँ।
अरहंत पदवी प्राप्त करके, शिवमहल में पग धरूँ।।5।।

ॐ ह्रीं बन्ध तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित अष्टम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- घृत का दीप जलाय, आरति करने आए हैं।
मोह अंध नश जाय, केवलज्ञानी हम बनें।।

मोह सभी कर्मों का स्वामी, शेष कर्म उसके अनुगामी।
सब जीवों को मोहित करता, गती मती जीवों की हरता।।
हरता मति है जीव की फिर, कर्म का बंधन पढ़े।
संसार सागर में भ्रमण कर, काल भी बहुतक बढ़े।।

अब ज्ञान का दीपक जले शुभ, मोहतम का नाश हो।
हो ज्ञान केवल प्राप्त हमको, शिवमहल में वास हो।।6।।

ॐ ह्रीं बन्ध तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित अष्टम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- **धूप सुगंध बनाय, खेकर अग्नि में परम।**
आठों कर्म नशाय, मुक्ती कर्मों से मिले।।

अष्ट कर्म मिलकर के सारे, बंधन डाले रहे हमारे।
उन से छूट नहीं हम पाए, भवसागर में गोते खाए।।
खाए हैं गोते कर्म के वश, दास कर्मों के रहे।
ज्यों लोह में अग्नि पिटे, त्यों घात कई हमने सहे।।
जो अष्ट गुण हैं सिद्ध के वह, गुण विशद हम पा सकें।
हम आठ कर्म विनाश कर, भू आठवीं पर जा सकें।।7।।

ॐ ह्रीं बन्ध तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित अष्टम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- **सरस पक्व फल लाय, करना पूजा शास्त्र की।**
मोक्ष महाफल पाय, श्रीफल जो अर्पण करे।।

फल हमने सब जग के खाए, फिर भी तृप्त नहीं हो पाए।
जग के सब फल निष्फल जाने, फिर भी खाने से न माने।।
माने कभी न जिन वचन शुभ, शरण पाई न कभी।
प्राप्त कर अशरण शरण को, दुःख पाये हैं सभी।।
अब मोक्षफल को प्राप्त करने, की लगन मन में लगी।
अतएव जिनवर शास्त्र गुरु की, भक्ति मेरे उर जगी।।8।।

ॐ ह्रीं बन्ध तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित अष्टम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

सोरठा- उत्तम अर्घ्य बनाय, आए भक्ति भाव से।
हाथ जोड़ सिर नाय, पूजा करने आए हैं।।

पद अनर्घ अब तक नहिं पाए, पर पद में ही हम भटकाए।
यूँ ही काल अनंत बिताया, भेद ज्ञान न हमने पाया।।
पाया नहीं है भेद तन अरु, चेतना के ज्ञान का।
अब भाव जागा हृदय में शुभ, धर्म के गुणगान का।।
अब पद अनर्घ हो प्राप्त हमको, मिटे भव-भव का भ्रमण।
हम अर्घ्य अर्पित कर रहे हैं, कर रहे पद में नमन्।।9।।

ॐ ह्रीं बन्ध तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित अष्टम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वलयः

दोहा- तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय अष्टम, की यहाँ पूजा करूँ।
ज्ञान सम्यक् प्राप्त कर मैं, कर्म की बाधा हरूँ।।

(अथ अष्टम वलयोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सूत्र प्रारम्भ

बंध के कारण बतलाते हैं

मिथ्यादर्शनाऽविरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्ध-हेतवः।।1।।

छंद-जोगीरासा

मिथ्यादर्शन पञ्च भेद युत, द्वादश अविरत जानो।
हैं प्रमाद के भेद पञ्चदश, चउ कषाय पहिचानो।।
भेद कहे हैं तीन योग के, बंध के हेतु गाये।
शुभ अरु अशुभ बंध के कारण, पुण्य पाप फल पाए।।
कर्म बंध के सभी हेतुओं, से हम भी बच जाएँ।
जिन सूत्रों का चिंतन करके, सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।

ॐ ह्रीं बंध कारण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बंध का स्वरूप

सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलानाऽऽदत्ते स बन्धः ॥2॥

हों कषाय से सहित जीव तो, कर्म योग्यता पावें।
पुद्गल के परमाणु आकर, चेतन से बंध जावें॥
कर्म बंध के सभी हेतुओं, से हम भी बच जाएँ।
जिन सूत्रों का चिंतन करके, सम्यक् ज्ञान जगाएँ॥

ॐ ह्रीं बंध स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बंध के भेद

प्रकृतिस्थित्यनुभवप्रदेशास्तद्विधयः ॥3॥

कर्मों की प्रकृति प्रथम अरु, द्वितीय स्थिति जानो।
तृतिय भेद अनुभाग बताया, प्रदेश चतुर्थ पहिचानो॥
स्थिति अरु अनुभाग बन्ध तो, हो कषाय से भाई।
प्रकृति और प्रदेश बंध में, योगों की प्रभुताई॥
कर्म बंध के सभी हेतुओं, से हम भी बच जाएँ।
जिन सूत्रों का चिंतन करके, सम्यक् ज्ञान जगाएँ॥

ॐ ह्रीं बंध भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रकृति बन्ध के मूल भेद

आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रान्तरायाः ॥4॥

ज्ञान दर्शनावरण वेदनीय, मोहनीय को जानो।
आयु नाम गोत्र अन्तराय, प्रकृति बंध पहिचानो॥
कर्म बंध के सभी हेतुओं, से हम भी बच जाएँ।
जिन सूत्रों का चिंतन करके, सम्यक् ज्ञान जगाएँ॥

ॐ ह्रीं प्रकृति बंधस्य मूलभेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रकृति बंध के उत्तर भेद

पञ्चनवद्वयष्टा विंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपञ्चभेदा यथाक्रमम् ॥5॥

क्रमशः पंच भेद नव द्वय अरु, अट्ठाइस चउ बियालीस।
दो अरु पाँच भेद हैं क्रमशः, सौ इक अरु अड़तालीस॥
ज्ञानावरण आदि कर्मों के, उत्तर भेद रहे हैं।
श्री जिनेन्द्र ने जैनागम में, लक्षण सहित कहे हैं॥
कर्म बंध के सभी हेतुओं, से हम भी बच जाएँ।
जिन सूत्रों का चिंतन करके, सम्यक् ज्ञान जगाएँ॥

ॐ ह्रीं प्रकृति बंधस्य उत्तर भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण कर्म के पाँच भेद

मतिश्रुतावधि मनःपर्ययकेवलानाम् ॥6॥

मति श्रुत अवधि मनःपर्यय अरु, केवल ज्ञानावरणी।
करे ज्ञान को आवर्णित यह, खोटी इनकी करनी॥
कर्म बंध के सभी हेतुओं, से हम भी बच जाएँ।
जिन सूत्रों का चिंतन करके, सम्यक् ज्ञान जगाएँ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्मस्य पंचभेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शनावरण कर्म के नौ भेद

चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यान-गृद्धयश्च ॥7॥

चक्षु-अचक्षु अवधि अरु केवल, दर्शनावर्णी जानो।
निद्रा अरु निद्रा-निद्रा अरु, प्रचला-प्रचला मानो॥
प्रचला अरु स्त्यानगृद्धि यह, भेद सभी बतलाए।
कर्म दर्शनावरणी के नव, जैनागम में गाए॥

कर्म बंध के सभी हेतुओं, से हम भी बच जाएँ।
जिन सूत्रों का चिंतन करके, सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्मस्य नव भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय कर्म के दो भेद

सदसद्वेद्ये।।8।।

वेदनीय के भेद कहे दो, साता और असाता।
यह अघातिया कर्म कहा है, जैनागम बतलाता।।
कर्म बंध के सभी हेतुओं, से हम भी बच जाएँ।
जिन सूत्रों का चिंतन करके, सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्मस्य द्वौ भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय कर्म के अट्ठाइस भेद बतलाते हैं

दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडशभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्यकषायकषायौ हास्यरत्यरतिशोकभय-जुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसकवेदा अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यान-संज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमाया-लोभाः।।9।।

दर्शन अरु चारित्र मोहनी, प्रथम भेद दो जानो।
मिथ्या सम्यक् उभय रूप, यह दर्शन मोह बखानो।।
नो कषाय षोडस कषाय युत, चारित्र मोह कहाए।
हास्य अरति-रति शोक जुगुप्सा, भय त्रय वेद बताए।।
प्रथम कषाय अनंतानुबन्धी, द्वितीय अप्रत्याख्यानी।
तृतीय प्रत्याख्यान संज्वलन, चौथी प्रभु बखानी।।
चार-चार हैं भेद सभी के, क्रोध लोभ मद माया।
सोलह भेद सहित अट्ठाइस, की संख्या को पाया।।

कर्म बंध के सभी हेतुओं, से हम भी बच जाएँ।
जिन सूत्रों का चिंतन करके, सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्मस्य अष्टाविंशति भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब आयु कर्म के चार भेद बतलाते हैं

नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि ।।10।।

देव नारकी मानव पशु यह, चार भेद बतलाए।
आयु कर्म के लक्षण संयुत, जैनागम में गाए।।
कर्म बंध के सभी हेतुओं, से हम भी बच जाएँ।
जिन सूत्रों का चिंतन करके, सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।

ॐ ह्रीं आयु कर्मस्य चतुःभेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नामकर्म के 42 भेद बतलाते हैं

गतिजातिशरीराङ्गोपाङ्गनिर्माणबन्धनसंघातसंस्थानसंहननस्पर्शरसगन्ध-वर्णानुपूर्व्यागुरुलघूपघातपरघातातपोद्योतोच्छ्वासविहायोगतयः प्रत्येकशरीरत्रससुभग सुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेययशःकीर्ति-सेतराणि तीर्थंकरत्वं च ।।11।।

ताटंक छंद

गति जाति तन अंग उपांग अरु, निर्माण अरु बंधन जानो।
संघात संस्थान तथा संहनन, रस स्पर्श गंध मानो।।
वर्णानुपूर्वी अगुरुलघु अरु, उपघात अरु परघात कहे।
आतप उद्योत उच्छवास अरु, विहायोगति भी साथ रहे।।
है प्रत्येक शरीर सुभग त्रस, सुस्वर शुभ अरु सूक्ष्म कहे।
पर्याप्ति स्थिर आदेय यश कीर्ति के विपरीत कहे।।
तीर्थंकर प्रकृति सब मिलकर, भेद तिरानवे हो जावें।
इन सबसे छुटकारा पाकर, भव वन से मुक्ति पावें।।

चिंतन कर तत्त्वार्थ सूत्र का, सम्यक् ज्ञान प्रकाश करूँ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ अष्ट द्रव्य का, आठों कर्म विनाश करूँ।।

ॐ ह्रीं नाम कर्मस्य द्वि-चत्वारिंशत् भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्रकर्म के दो भेद

उच्चैर्नीचैश्च ।।12।।

उच्च नीच दो गोत्र कर्म के, जैनागम में भेद कहे।
केवलज्ञान के धारी भगवन्, गोत्र कर्म से हीन रहे।।
चिंतन कर तत्त्वार्थ सूत्र का, सम्यक् ज्ञान प्रकाश करूँ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ अष्ट द्रव्य का, आठों कर्म विनाश करूँ।।

ॐ ह्रीं गोत्र कर्मस्य द्वौ भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय कर्म के पाँच भेद बतलाते हैं

दानलाभभोगोपभोगवीर्याणाम् ।।13।।

दान लाभ भोगोपभोग अरु, वीर्य पञ्च यह भेद कहे।
अन्तराय ये भवि जीवों को, करते हरदम विघ्न रहे।।
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्मों का परिहार करूँ।
भवसागर से मुक्ति पाऊँ, आतम का उद्धार करूँ।।

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्मस्य पंच भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान-दर्शनावरण वेदनीय और अन्तराय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति

आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्यः परा स्थितिः ।।14।।

ज्ञानदर्शनावरण वेदनीय, अंतराय की साथ रही।
त्रिंशत् कोड़ा-कोड़ी सागर, स्थिति यह उत्कृष्ट कही।।
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्मों का परिहार करूँ।
भवसागर से मुक्ति पाऊँ, आतम का उद्धार करूँ।।

ॐ ह्रीं ज्ञान दर्शनावरण वेदनीय अन्तराय कर्माणाम् उत्कृष्ट स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति बतलाते हैं

सप्ततिर्मोहनीयस्य ।।15।।

सत्तर कोड़ा-कोड़ी सागर, मोहनीय की भी जानो।
सब कर्मों का शिरोमणि तुम, मोहनीय को पहिचानो।।
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्मों का परिहार करूँ।
भवसागर से मुक्ति पाऊँ, आतम का उद्धार करूँ।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्मस्य उत्कृष्ट स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम और गोत्रकर्म की उत्कृष्ट स्थिति बतलाते हैं

विंशतिर्नामगोत्रयोः ।।16।।

विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, नाम गोत्र की पहिचानो।
यह उत्कृष्ट कही है स्थिति, यह प्रमाणता तुम मानो।।
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्मों का परिहार करूँ।
भवसागर से मुक्ति पाऊँ, आतम का उद्धार करूँ।।

ॐ ह्रीं नाम गोत्र कर्मयोः उत्कृष्ट स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म की उत्कृष्ट स्थिति का वर्णन

त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः ।।17।।

तैंतीस सागर आयु कर्म की, उत्कृष्ट स्थिति रही विशेष।
आठ त्रिभाग बंध के जानो, या फिर अंत में होय विशेष।।
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्मों का परिहार करूँ।
भवसागर से मुक्ति पाऊँ, आतम का उद्धार करूँ।।

ॐ ह्रीं आयु कर्मस्य उत्कृष्ट स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय कर्म की जघन्य स्थिति बतलाते हैं

अपरा द्वादशमुहूर्त्ता वेदनीयस्य ।।18।।

द्वादश मुहूर्त की स्थिति बंधु, वेदनीय की कही जघन्य।
इसके ऊपर कई प्रकार की, मध्यम स्थिति जानो अन्य।।
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्मों का परिहार करूँ।
भवसागर से मुक्ति पाऊँ, आतम का उद्धार करूँ।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्मस्य जघन्य स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम और गोत्र कर्म की जघन्य स्थिति

नामगोत्रयोरष्टौ ।।19।।

नाम कर्म की जघन्य स्थिति, आठ मुहूर्त की कही जिनेश।
गोत्र कर्म की भी इतनी ही, जैनागम में कही विशेष।।
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्मों का परिहार करूँ।
भवसागर से मुक्ति पाऊँ, आतम का उद्धार करूँ।।

ॐ ह्रीं नाम गौत्र कर्मयोः जघन्य स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब शेषज्ञानावरणादि पाँच कर्मों की जघन्य स्थिति बतलाते हैं

शेषाणामन्तर्मुहूर्ता ।।20।।

अन्तर्मुहूर्त शेष कर्मों की, स्थिति कही है सर्व जघन्य।
इनमें ही सब रहे समाहित, और भेद जो भी है अन्य।।
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्मों का परिहार करूँ।
भवसागर से मुक्ति पाऊँ, आतम का उद्धार करूँ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणादि पंच अवशेष कर्माणाम् जघन्य स्थिति प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुभव बन्ध का लक्षण

विपाकोऽनुभवः ॥21॥

हो अनुभाग बंध कर्मों के, विविध विपाकों के अनुसार।
उनके बंध नहीं होता यह, जो हो जाते हैं अविकार॥
रत्नत्रय के द्वारा अपने, कर्मों का परिहार करूँ।
भवसागर से मुक्ति पाऊँ, आतम का उद्धार करूँ॥

ॐ ह्रीं अनुभव बन्ध स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुभाग बंध कर्मों के नामानुसार होता है

स यथानाम् ॥22॥

यथानाम अनुभाग बंध यह, होता कर्मों के अनुसार।
ज्ञानावरण आदि कर्मों का, अनुभव जानो कई प्रकार॥
पढ़कर के तत्त्वार्थ सूत्र को, अंतर में जागे सद् बोध।
मिथ्यादि बंधन के हेतु, का मेरे हो जाय निरोध॥

ॐ ह्रीं कर्म नामानुसार अनुभाग बंध प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब यह बताते हैं कि फल देने के बाद कर्मों का क्या होता है

ततश्च निर्जरा ॥23॥

कर्म उदय में आकर देते, फल जीवों को कई प्रकार।
इसके बाद निर्जरा होती, कर्मों की फल के अनुसार॥
पढ़कर के तत्त्वार्थ सूत्र को, अंतर में जागे सद् बोध।
मिथ्यादि बंधन के हेतु, का मेरे हो जाय निरोध॥

ॐ ह्रीं अनुभागोपरान्त निर्जरा तत्त्व लक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब प्रदेश बंध का वर्णन करते हैं प्रदेश बंध का स्वरूप

नामप्रत्यया: सर्वतो योगविशेषात् सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिता: सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्ता-नन्तप्रदेशा: ॥24॥

कारणभूत अष्ट कर्मों के, प्रति समय पा योग विशेष।
सूक्ष्म एक क्षेत्रावगाह अरु, स्थित अनंतानंत संश्लेष॥
पुद्गल के परमाणु बंधते, आतम के हर एक प्रदेश।
बतलाये लक्षण प्रदेश का, जैनागम में श्री जिनेश॥
पढ़कर के तत्त्वार्थ सूत्र को, अंतर में जागे सद् बोध।
मिथ्यादि बंधन के हेतु, का मेरे हो जाय निरोध॥

ॐ ह्रीं प्रदेश बंध स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य प्रकृतियाँ बतलाते हैं

सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम्॥25॥

वेदनीय साता शुभ आयु, नाम गोत्र शुभ कहे विशेष।
अड़सठ पुण्य प्रकृतियाँ जानो, पाप रूप होती हैं शेष॥
पढ़कर के तत्त्वार्थ सूत्र को, अंतर में जागे सद् बोध।
मिथ्यादि बंधन के हेतु, का मेरे हो जाय निरोध॥

ॐ ह्रीं पुण्य प्रकृति स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब पाप प्रकृतियाँ बतलाते हैं

अतोऽन्यत्पापम्॥26॥

पुण्य प्रकृतियाँ सभी छोड़कर, पाप प्रकृतियाँ कहीं जिनेश।
कर्म घातिया की सैंतालिस, अरु अघातिया की कुछ शेष॥
वर्ण गंध स्पर्श और रस, की प्रकृतियाँ होतीं बीस।
पुण्य-पाप द्वय रूप कहीं यह, ऐसा कहते श्री जिनेश॥

पढ़कर के तत्त्वार्थ सूत्र को, अंतर में जागे सद् बोध।
मिथ्यादि बंधन के हेतु, का मेरे हो जाय निरोध।।

ॐ ह्रीं पाप प्रकृति स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ

सर्व जगत के द्वन्द फन्द, बंधन के नाशी।
जीवादि छह द्रव्य तत्त्व, नव के विश्वासी।।
अजर-अमर अविकार, परम आनंद स्वरूपी।
जिन कर्मों से भिन्न, आत्मा कर्म हैं रूपी।।
परम सूत्र तत्त्वार्थ के द्वारा, ज्ञान जगाया।
विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, शीश झुकाया।।

ॐ ह्रीं बन्ध तत्त्व स्वरूप प्ररूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित अष्टम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य : **- ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत बन्ध तत्त्व निरूपक श्री उमास्वामी विरचित अष्टम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

दोहा- **जग जीवों को कर्म का, बंधन पड़ा त्रिकाल।**
पाने छुटकारा सभी, गाते हैं जयमाल।।

दिग्पाल-छंद

कर्मों के बंध से यह, संसार सब दुखी है।
तिय लोक में जा देखो, कोई नहीं सुखी है।।
नरकादि चार गति में, हमने भ्रमण किया है।
औरों को दुःख देकर, हमने स्वयं लिया है।।
हमने अनंत काल, बिताया निगोद रहके।
कर्मों का बंध पाया, पर को स्वयं का कहके।।

मिथ्या मति ने हमको, मिथ्यात्व में फंसाया।
चारों कषायों ने मिल, गति चार में भ्रमाया।।
अविरत सदैव रहकर, जो भी मिला सो खाया।
हमको प्रमाद ने फिर, सद्धर्म से बचाया।।
योगों ने बेरहम हो, भव रोग में फंसाया।
एकेन्द्रियादि बनकर, हर कष्ट हमने पाया।।
पाकर पशुगति को, बध बंधनादि पाया।
मानव गति को पाके, भोगों में मन लगाया।।
सातों नरक में जाके, झेले हैं दुख घनेरे।
स्वर्गों के सौख्य पाये, पूरे हुए न मेरे।।
अब देव शास्त्र गुरु का, हमको दरश मिला है।
श्रद्धान प्राप्त करके, मेरा हृदय खिला है।।
मैं आ गया सुपथ पर, तत्त्वार्थ सूत्र पाया।
मुक्ति का मार्ग पाया, मन में सुहर्ष छाया।।
अब अष्ट कर्म का हम, संवर यहाँ करेंगे।
अरु कर्म निर्जरा कर, मुक्ति विशद वरेंगे।।
शिवपुर का सौख्य शाश्वत् हमको अखण्ड पाना।
अब छोड़ जगत सारा, शुभ सिद्ध शिला जाना।।

(छन्द-घत्तानन्द)

है बंधन भारी, भव भयकारी, न उसका मैं अधिकारी।
भव बंध नशाऊँ, संवर पाऊँ, सिद्धों की पदवी पाऊँ।।

ॐ ह्रीं बन्ध तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित अष्टम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिन तत्त्वार्थ सूत्र की, महिमा अपरंपार।
ज्ञान प्राप्त कर तत्त्व का, पाऊँ भव से पार।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

नवम अध्याय पूजन

स्थापना

कर्मों के संवर हेतु हम, वीतराग पद ध्याते हैं।
करने कर्म निर्जरा सम्यक्, तप में लगन लगाते हैं।।
अब तत्त्वार्थ सूत्र को अपने, अंतर हृदय सजाते हैं।
इस नौवे अध्याय को पढ़कर, सम्यक् विधि अपनाते हैं।।
संतों के गुण पाने हेतु, सत् संतों को ध्याते हैं।
देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।
विशद हृदय में करते हैं हम, जैनागम का आह्वानन्।
मुक्ति वधु को पाने हेतु, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं संवर निर्जरा तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित नवम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं शुभ चारित्र धर्म निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित नवम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः पद स्थापनं।

ॐ ह्रीं ध्यानादि तप निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित नवम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

तर्ज- सोलहकारण पूजन

लाया प्रासुक निर्मल नीर, जैनागम पूजों गंभीर।
परम पद दाय जय-जय, ग्रन्थ परम सुखदाय।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को ध्याय, पढ़ते नर ज्ञानी बन जाय।
परम पद दाय, रत्नत्रय पा मुक्ती पाय।।
परम पद दाय-जय-जय.............।।1।।

ॐ ह्रीं संवर निर्जरा तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित नवम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगंधित चंदन लाय, भव की बाधा पूर्ण नशाय।
परम पद दाय अर्पित कर, अति हर्ष मनाय।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को ध्याय, पढ़ते नर ज्ञानी बन जाय।
परम पद दाय, रत्नत्रय पा मुक्ती पाय।।
परम पद दाय-जय-जय.............।।2।।

ॐ ह्रीं संवर निर्जरा तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित नवम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल सुगन्धित अक्षत ल्याय, भक्तिभाव से शीघ्र चढ़ाय।
परम पद दाय अक्षय पद दाता सुखदाय।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को ध्याय, पढ़ते नर ज्ञानी बन जाय।
परम पद दाय, रत्नत्रय पा मुक्ती पाय।।
परम पद दाय-जय-जय.............।।3।।

ॐ ह्रीं संवर निर्जरा तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित नवम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भाँति-भाँति के पुष्प मंगाय, अर्पित कर मन में हर्षाय।
परम पद दाय, काम व्यथा को पूर्ण नशाय।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को ध्याय, पढ़ते नर ज्ञानी बन जाय।
परम पद दाय, रत्नत्रय पा मुक्ती पाय।।
परम पद दाय-जय-जय.............।।4।।

ॐ ह्रीं संवर निर्जरा तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित नवम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक ले नैवेद्य महान्, करके भाव सहित गुणगान।
परम पद दाय, क्षुधा व्याधि को पूर्ण नशाय।।

जिन तत्त्वार्थ सूत्र को ध्याय, पढ़ते नर ज्ञानी बन जाय।
परम पद दाय, रत्नत्रय पा मुक्ती पाय।।
परम पद दाय-जय-जय.............।।5।।

ॐ ह्रीं संवर निर्जरा तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित नवम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन दीपक लिया जलाय, आरति करके नाचे गाय।
परम पद दाय, मोह-तिमिर को पूर्ण नशाय।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को ध्याय, पढ़ते नर ज्ञानी बन जाय।
परम पद दाय, रत्नत्रय पा मुक्ती पाय।।
परम पद दाय-जय-जय.............।।6।।

ॐ ह्रीं संवर निर्जरा तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित नवम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक पावन धूप बनाय, अग्नि में वह दिए जलाय।
परम पद दाय, अष्ट कर्म को शीघ्र नशाय।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को ध्याय, पढ़ते नर ज्ञानी बन जाय।
परम पद दाय, रत्नत्रय पा मुक्ती पाय।।
परम पद दाय-जय-जय.............।।7।।

ॐ ह्रीं संवर निर्जरा तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित नवम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला आदि मँगाय, फल अर्पित करके शिर नाए।
परम पद दाय, मोक्ष सुफल हमको मिल जाए।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को ध्याय, पढ़ते नर ज्ञानी बन जाय।
परम पद दाय, रत्नत्रय पा मुक्ती पाय।।
परम पद दाय-जय-जय.............।।8।।

ॐ ह्रीं संवर निर्जरा तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित नवम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फल आदी द्रव्य मिलाय, जिन चरणों में दिए चढ़ाय।
परम पद दाय, पद अनर्घ पा शिव पद पाय।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को ध्याय, पढ़ते नर ज्ञानी बन जाय।
परम पद दाय, रत्नत्रय पा मुक्ती पाय।।
परम पद दाय-जय-जय................।।9।।

ॐ ह्रीं संवर निर्जरा तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित नवम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवम वलयः

दोहा- **संवर करके निर्जरा, सकल व्रतों को धार।**
सकल व्रतों को धारकर, हो जाते भवपार।।

(अथ नवमवलयो परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सूत्र प्रारम्भ

संवर का लक्षण

आस्रवनिरोधः संवरः ।।1।।

वीर छंद

आस्रव शुभ अरु अशुभ रोकने, से होता संवर भाई।
यही कहा संवर का लक्षण, जैनागम में सुखदाई।।
द्रव्य भाव संवर होने से, कर्मों का हो जाता रोध।
ज्ञान ध्यान संयम के द्वारा, प्राणी पाते आतम बोध।।

ॐ ह्रीं संवरस्य लक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवर के कारण

स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरीषहजय-चारित्रैः ॥2॥

तिय गुप्ति अरु पंच समीति, क्षमा आदि दश धर्म कहे।
द्वादश अनुप्रेक्षा द्वाविंशति, परिषह जय चारित्र रहे॥
संवर के हेतु हैं यह सब, इनसे आस्रव रुक जावे।
द्रव्य भाव संवर होते ही, कर्म बंध न हो पावे॥
द्रव्य भाव संवर होने से, कर्मों का हो जाता रोध।
ज्ञान ध्यान संयम के द्वारा, प्राणी पाते आतम बोध॥

ॐ ह्रीं संवरस्य कारण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्जरा और संवर का कारण

तपसा निर्जरा च ॥3॥

तप के द्वारा संवर होता, और निर्जरा भी होवे।
उभय रूप से कारण बनकर, कर्मों की शक्ति खोवे॥
सम्यक् तप की शक्ति जागे, विशद भावना मैं भाऊँ।
सर्व कर्म का क्षय करके मैं, भव वन से मुक्ति पाऊँ॥
द्रव्य भाव संवर होने से, कर्मों का हो जाता रोध।
ज्ञान ध्यान संयम के द्वारा, प्राणी पाते आतम बोध॥

ॐ ह्रीं सम्यक् तप फल प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुप्ति का लक्षण और भेद

सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ॥4॥

काय वचन मन की प्रवृत्ति, मानव की यदि रुक जावे।
सम्यक् योगों के निग्रह से, प्राणी फिर गुप्ती पावे॥

संवर पूर्वक होय निर्जरा, यही सर्व सुखदायक है।
मोक्षमार्ग पर बढ़ने हेतु, पूर्ण रूप से लायक है।।
गुप्ती प्राप्त नहीं कर सकते, मोही अरु अज्ञानी जीव।
वह कर्मास्रव करते रहते, नित्य निरंतर सदा अतीव।।
द्रव्य भाव संवर होने से, कर्मों का हो जाता रोध।
ज्ञान ध्यान संयम के द्वारा, प्राणी पाते आतम बोध।।

ॐ ह्रीं त्रिगुप्ति स्वरूप एवं भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समिति के पाँच भेद

ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ॥5॥

चार हाथ भूमि को लखकर, राह में चलते हैं मुनिराज।
ईर्यापथ यह कही समीति, आगम जानो सकल समाज।।
हित मित प्रिय जो वचन बोलते, बोलें सत्याश्रय के साथ।
भाषा समिति कही आगम में, पालन करते हैं मुनिनाथ।।
विधीपूर्वक भोजन लेते, दिन में एक बार जो शुद्ध।
समिति ऐषणा पालन करते, जैन मुनि जो रहे विशुद्ध।।
वस्तू देख प्रमार्जित करके, ग्रहण करें रखते मुनिराज।
यह आदान निक्षेपण समीति, कहते हैं ऐसा जिनराज।।
निर्जन्तुक स्थान देखकर, क्षेपण करते हैं मल-मूत्र।
यह व्युत्सर्ग समीति जानो, घोषित करते हैं जिनसूत्र।।
पञ्च समीति का आगम में, किया गया है शुभ व्याख्यान।
इनका पालन करने वाले, कहे गये हैं संत महान्।।
द्रव्य भाव संवर होने से, कर्मों का हो जाता रोध।
ज्ञान ध्यान संयम के द्वारा, प्राणी पाते आतम बोध।।

ॐ ह्रीं पंच समिति भेद स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्म

उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिञ्चन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ।।6 ।।

उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम तप त्याग।
आकिंचन्य अरु ब्रह्मचर्य दश, धर्मों के प्रति हो अनुराग।।
द्रव्य भाव संवर होने से, कर्मों का हो जाता रोध।
ज्ञान ध्यान संयम के द्वारा, प्राणी पाते आतम बोध।।

ॐ ह्रीं दश धर्म प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह अनुप्रेक्षा

अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रवसंवरनिर्जरालोकबोधिदुर्लभधर्म-स्वाख्यातत्त्वानु-चिन्तनमनुप्रेक्षाः ।।7 ।।

हैं वैराग्य भाव की जननी, द्वादश अनुप्रेक्षाएँ श्रेष्ठ।
कुछ भी नित्य नहीं इस जग में, यह अनित्य का भाव यथेष्ठ।।
नहीं शरण कोई इस जग में, रत्नत्रय ही एक शरण।
है संसार परावर्तनमय, इसमें होता जन्म-मरण।।
कर्म एक करता है प्राणी, फल भी उसका पावे एक।
मैं हूँ एक अन्य मुझसे हैं, सब पदार्थ जग में कई नेक।।
चित् चैतन्य स्वरूपी हूँ मैं, अशुचि देह मल से परिपूर्ण।
मिथ्या अविरत आदी द्वारा, कर्मास्रव होता है क्रूर।।
गुप्ति समीति धर्मादि से, कर्मों का संवर हो पूर्ण।
चौदह राजू उच्च लोक यह, षट् द्रव्यों से है परिपूर्ण।।

पाया ज्ञान हमेशा लौकिक, बोधी दुर्लभ सदा रही।
सभी भावनाएँ निष्फल हैं, धर्म भावना एक सही।।
कर्मों के संवर करने में, रही भावनाएँ अनुकूल।
लगे हुए जो कर्म पुराने, वह सब हो जावें निर्मूल।।
द्रव्य भाव संवर होने से, कर्मों का हो जाता रोध।
ज्ञान ध्यान संयम के द्वारा, प्राणी पाते आतम बोध।।

ॐ ह्रीं द्वादश अनुप्रेक्षा स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिषह सहन करने का उपदेश

मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ।।8 ।।

मोक्ष मार्ग से च्युत न हो अरु, कर्म निर्जरा होय विशेष।
कष्ट सहन परीषह जय कहते, जैनागम में वीर जिनेश।
परीषह जय करने में तत्पर, रहते हैं नित जैन मुनीश।
उनके चरणों विशद भाव से, झुका रहे हम अपना शीश।।
द्रव्य भाव संवर होने से, कर्मों का हो जाता रोध।
ज्ञान ध्यान संयम के द्वारा, प्राणी पाते आतम बोध।।

ॐ ह्रीं परिषह स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिषह के बाईस भेद

क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशवधयाचना-लाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाज्ञानाऽदर्शनानि ।।9 ।।

बाईस परीषह सहने वाले, रत्नत्रय के धारी हैं।
वीतराग निर्ग्रंथ मुनीश्वर, आतम ब्रह्म विहारी हैं।।

क्षुधा तृषा जय शीत उष्ण अरु, दंशमशक में समताधार।
नग्न अरति स्त्री चर्या जय, और निषद्या के आधार।।
शैय्या वध आक्रोश याचना, और अलाभ परीषह रोग।
तृण स्पर्श मल से मलीन तन, का पावें मुनिवर संयोग।।
है सत्कार पुरस्कार परीषह, प्रज्ञा अरु अज्ञान रहा।
और अदर्शन को भी परिषह, जैनागम में साथ कहा।।
द्रव्य भाव संवर होने से, कर्मों का हो जाता रोध।
ज्ञान ध्यान संयम के द्वारा, प्राणी पाते आतम बोध।।

ॐ ह्रीं द्वाविंशति परिषह भेद स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दसवें से बारहवें गुणस्थान तक की परिषह

सूक्ष्मसाम्पराय-छद्मस्थवीत-रागयोश्चतुर्दश।।10।।

गुणस्थान दसवें से बारह, तक परीषह चौदह जानो।
परीषह का कारण निश्चय से, निज का कर्म उदय मानो।।
क्षुधा पिपासा शीत उष्ण अरु, दंश मशक चर्या बध जान।
शैय्या तृण-स्पर्श अलाभ मल, रोग और प्रज्ञा अज्ञान।।
द्रव्य भाव संवर होने से, कर्मों का हो जाता रोध।
ज्ञान ध्यान संयम के द्वारा, प्राणी पाते आतम बोध।।

ॐ ह्रीं चतुर्दश परिषह युक्त गुणस्थान प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब तेरहवें गुणस्थान पर परिषह बतलाते हैं

एकादश जिने।।11।।

गुणस्थान तेरह में ग्यारह, परीषह हो सकते हैं मूल।
किया गया उपचार कथन यह, जैनागम से ही अनुकूल।।

प्रज्ञा और अज्ञान परीषह, अरु अलाभ न होते तीन।
पूर्व कथित चौदह में कमकर, जिनवर के यह कहे नवीन।।
द्रव्य भाव संवर होने से, कर्मों का हो जाता रोध।
ज्ञान ध्यान संयम के द्वारा, प्राणी पाते आतम बोध।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश गुणस्थानवर्ती जिनस्य परिषह प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छठवें से नवमें गुणस्थान तक के परीषह

बादरसाम्पराये सर्वे।।12।।

बादर साम्परायिक के धारी, साधु सहते परिषह पूर्ण।
कठिन परीषह सहकर भी वह, समता में रहते परिपूर्ण।।
द्रव्य भाव संवर होने से, कर्मों का हो जाता रोध।
ज्ञान ध्यान संयम के द्वारा, प्राणी पाते आतम बोध।।

ॐ ह्रीं बादर साम्पराय गुणस्थान पर्यन्त सर्वमुनिश्वरानाम् परिषह प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण कर्म के उदय से होने वाले परीषह

ज्ञानावरणे प्रज्ञाऽज्ञाने।।13।।

ज्ञानावरणी कर्मोदय में भाई रे !, प्रज्ञा अरु अज्ञान परिषह पाई रे!
उदय में आते हैं जीवों को भाई रे ! परिषह से मुक्ति जिनवर ने पाई रे!
कर्म परीषह से मुक्ति हो भाई रे ! जीवन बने हमारा यह सुखदाई रे!

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्मोदयात् उत्पन्न परीषह प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन मोहनीय तथा अन्तराय कर्म के उदय से होने वाले परीषह

दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनाऽलाभौ।।14।।

कर्मोंदय में दर्शन मोह के भाई रे ! होय अदर्शन परिषह जग में भाई रे !
अंतराय कर्मोंदय हो तो भाई रे ! पावे जीव अलाभ परिषह भाई रे!

कर्म परीषह से मुक्ति हो भाई रे ! जीवन बने हमारा यह सुखदाई रे!

ॐ ह्रीं दर्शनमोहान्तराय कर्मोदयात् उत्पन्न परीषह प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब चारित्र मोहनीय के उदय से होने वाले परिषह बतलाते हैं

चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्याऽऽक्रोशयाचनासत्कारपुरस्काराः ॥15॥

चारित मोहोदय से परिषह भाई रे ! नग्न अरति स्त्री परिषह हो भाई रे!
और याचनाक्रोश परिषह भाई रे ! सत्कार पुरुस्कार होय परीषह भाई रे!
कर्म परीषह से मुक्ति हो भाई रे !, जीवन बने हमारा यह सुखदाई रे!

ॐ ह्रीं चारित्र मोहोदयात् उत्पन्न परिषह प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय कर्म के उदय से होने वाले परिषह

वेदनीये शेषाः ॥16॥

शेष सभी परिषह जितने हैं भाई रे ! वेदनीय के उदय से होते भाई रे !
शीत उष्ण अरु क्षुधा तृषा हो भाई रे ! दंश मशक-चर्या शैय्या बधकारी रे !
तृण स्पर्श मल रोग परिषह भाई रे ! यह एकादश परिषह जानो भाई रे!
कर्म परीषह से मुक्ति हो भाई रे ! जीवन बने हमारा यह सुखदाई रे!

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्मोदयात् उत्पन्न एकादश परिषह प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब एक जीव के साथ होने वाले परिषहों की संख्या बतलाते हैं

एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकोनविंशतेः ॥17॥

एकादी उन्नीस परीषह भाई रे ! एक जीव को एक साथ हों भाई रे !
यह विकल्प से कहे परीषह भाई रे ! जैनागम में कहे परीषह भाई रे!
कर्म परीषह से मुक्ति हो भाई रे ! जीवन बने हमारा यह सुखदाई रे!

ॐ ह्रीं जीवस्य युगपत् उत्पन्न परिषह प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित्र के पाँच भेद

सामायिकच्छेदोपस्थापना परिहारविशुद्धिसूक्ष्मसाम्पराय यथाख्यातमिति चारित्रम्।।18।।

चाल-टप्पा

पञ्च भेद सम्यक्चारित के, आगम में गाये।
सामायिक समता धारण को, जिनवर बतलाए।।
छेदोपस्थापना छह से नौवे, तक दोनों होवें।
हो परिहार विशुद्धी संयम, सब कालुष खोवें।।
छठे सातवें गुणस्थान में, होता है भाई।
सूक्ष्म साम्पराय दशवें में ही, प्रकटे सुखदाई।।
यथाख्यात ग्यारह से चौदह, तक होता भाई।
वीतराग निर्ग्रंथ दिगम्बर, मुनिवर यह पाई।।
भवि जीवों को सर्व जगत् में, होते सुखदाई।
इनकी महिमा जैनागम में, वर्णित है भाई।।

ॐ ह्रीं चारित्रस्य पंचभेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्य तप के छह भेद

अनशनावमौदर्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविविक्तशय्यासन कायक्लेशा बाह्यं तपः।।19।।

छंद-सखी

अब बाह्य सुतप को जानो, छह भेद सभी पहिचानो।
चऊ विधि भोजन के त्यागी, अनशन तप के अनुरागी।।
इच्छा से कम जो खावें, वह ऊनोदर तप पावें।
व्रत परिसंख्या तप धारी, इनकी है महिमा न्यारी।।
भोजन में रस के त्यागी, रस त्याग सुतप अनुरागी।
तप विविक्त शैय्याशन धारे, ऐसे हैं मुनि हमारे।।

जो काय क्लेश करते हैं, चेतन में चित् धरते हैं।
हम भक्ति करने आए, चरणों में शीश झुकाएँ।।
तत्त्वार्थ सूत्र को ध्याएँ, जिन सिद्ध श्री को पाएँ।
लागे जो कर्म हमारे, वह शीघ्र नाश हों सारे।।

ॐ ह्रीं बाह्य तपभेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब आभ्यंतर तप के छह भेद बतलाते हैं

प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्त्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम्।।20।।

तप अंतरंग भी गाया, छह भेद रूप बतलाया।
व्रत में जो दूषण होवें, प्रायश्चित्त से सारे खोवें।।
जो विनय सुतप को पावें, गुणियों को शीश झुकावें।
वैयावृत्ती तपधारी, हर लेते बाधा सारी।।
स्वाध्याय परम तप जानो, मुक्ति का कारण मानो।
जो देह से नेह घटावें, व्युत्सर्ग सुतप को पावें।।
हैं सुतप ध्यान के धारी, उनकी है महिमा न्यारी।
जो सम्यक् तप को धारें, सब कर्म शत्रु निरवारें।।
तत्त्वार्थ सूत्र को ध्यावें, जिन सिद्ध श्री को पावें।
लागे जो कर्म हमारे वह, शीघ्र नाश हों सारे।।

ॐ ह्रीं आभ्यंतर तपभेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब अभ्यंतर तप के उपभेद

नवचतुर्दशपञ्चद्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात्।।21।।

तप अंतरंग जो गाये, उनके भी भेद गिनाए।
नव चार और दश जानो, दो पञ्च भेद पहिचानो।।

यह ध्यान के पूर्व कहे हैं, क्रमशः सब भेद रहे हैं।
जो सम्यक् तप को धारें, सब कर्म शत्रु वे हारें।।
तत्त्वार्थ सूत्र को ध्यावें, जिन सिद्ध श्री को पावें।
लागे जो कर्म हमारे वह, शीघ्र नाश हों सारे।।

ॐ ह्रीं आभ्यंतर तपभेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब सम्यक् प्रायश्चित्त के नव भेद बतलाते हैं

आलोचनाप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापनाः ।।22।।

चाल-टप्पा

भेद कहे नौ प्रायश्चित्त के, आगम में गाया।
आलोचन अरु प्रतिक्रमण शुभ, उभय रूप पाया।।
है विवेक व्युत्सर्ग सुतप अरु, छेद रूप जानो।
अरु परिहार उपस्थापन भी, इसको पहिचानो।।
श्रद्धा प्रायश्चित्त भी आगम में, कई आचार्य कहे।
देव-शास्त्र-गुरु के प्रति मेरी, श्रद्धा पूर्ण रहे।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, जग में श्रेष्ठ कही।
पढ़कर करें आचरण जो भी, पावें मार्ग सही।।

ॐ ह्रीं सम्यक् प्रायश्चित्त तपभेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब सम्यक् विनय तप के चार भेद बतलाते हैं

ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ।।23।।

विनय सुतप के चार भेद शुभ, आगम में गाये।
दर्शन ज्ञान चारित्र और, उपचार रूप पाये।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, जग में श्रेष्ठ कही।
पढ़कर करें आचरण जो भी, पावें मार्ग सही।।

ॐ ह्रीं सम्यक् विनय तपभेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब सम्यक् वैयावृत्त्य तप के दस भेद बतलाते हैं

आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्ष्यग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानाम् ॥24॥

वैयावृत्ति के दश भाई, भेद बताए हैं।
आचार्योपाध्याय और तपस्वी, शैक्ष्य गिनाए हैं॥
हैं ग्लान गण संघ साधु कुल, और मनोज्ञ कहे।
यह सब भेद दिगम्बर मुनियों, के अनुरूप रहे॥
प्रथम कहे आचार्य श्री जो, पंचाचारी हैं।
उपाध्याय ग्यारह अंगों अरु, पूरबधारी हैं॥
आतापन आदी तपधारी, परम तपस्वी हैं।
शैक्ष्य कहे शिक्षा पाते जो, महामनस्वी हैं॥
ग्लान कहे रोगी साधुगण, अरु समूह जानो।
दीक्षा गुरु के शिष्य कहे कुल, संघ चार मानो॥
चिर दीक्षित साधु कहलाए, समता के धारी।
हैं मनोज्ञ मन प्रमुदित करते, जग मंगलकारी॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, जग में श्रेष्ठ कही।
पढ़कर करें आचरण जो भी, पावें मार्ग सही॥

ॐ ह्रीं सम्यक् वैयावृत्त्य तपभेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् स्वाध्याय तप के पाँच भेद

वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः ॥25॥

स्वाध्याय के पञ्च भेद शुभ, प्रभु ने बतलाए।
प्रथम वाचना शास्त्र पठन को, जिनवाणी गाए॥
संशय क्षय के हेतु पृच्छना, होती है भाई।
बार-बार चिंतन करना शुभ, अनुप्रेक्षा गाई॥

आम्नाय निर्दोष पाठ शुभ, चिंतन से आवे।
धर्मोपदेश तत्त्व का गुरुजन, से यह जग पावे।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, जग में श्रेष्ठ कही।
पढ़कर करें आचरण जो भी, पावें मार्ग सही।।

ॐ ह्रीं सम्यक् स्वाध्याय तपभेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् व्युत्सर्ग तप के दो भेद बतलाते हैं

बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ।।26।।

कहे भेद व्युत्सर्ग सुतप के, आगम में भाई।
अंतरंग बहिरंग परिग्रह, त्याग रूप पाई।।
दश प्रकार वहिरंग के साधु, होते हैं त्यागी।
अंतरंग चौदह को त्यागें, संयम अनुरागी।।
क्षेत्र वास्तु सोना-चाँदी अरु, दासी दास रहे।
कुप्य भाण्ड धन-धान्य सहित दश, यह बहिरंग कहे।।
मिथ्या चार कषाएँ भाई, नो कषाय जानो।
परिग्रह चौदह भेद युक्त यह, अंतरंग मानो।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, जग में श्रेष्ठ कही।
पढ़कर करें आचरण जो भी, पावें मार्ग सही।।

ॐ ह्रीं सम्यक् व्युत्सर्ग तपभेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् ध्यान तप का लक्षण

उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्तात् ।।27।।

वज्र वृषभ नाराच संहनन उत्तम के धारी।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, मुनिवर अनगारी।।

हो एकाग्र रोध चिंता का, ध्यान किए भाई॥
श्रेष्ठ संहनन पाने वाले, अन्तर्मुहूर्त पाई॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, जग में श्रेष्ठ कही।
पढ़कर करें आचरण जो भी, पावें मार्ग सही॥

ॐ ह्रीं सम्यक्ध्यान तप लक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान के भेद

आर्त्तरौद्रधर्म्यशुक्लानि॥28॥

आर्त्त रौद्र अरु धर्म शुक्ल चउ, ध्यान के भेद कहे।
अशुभ ध्यान दो कहे आदि के, शुभ दो शेष रहे॥
मन में खेद होय जिससे वह, आर्त्तध्यान जानो।
जिससे हो परिणाम क्रूर वह, रौद्रध्यान मानो॥
जागे धर्म भावना मन में, धर्मध्यान गाया।
शुक्ल ध्यान शुद्धोपयोग का, हेतू कहलाया॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, जग में श्रेष्ठ कही।
पढ़कर करें आचरण जो भी, पावें मार्ग सही॥

ॐ ह्रीं ध्यान भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब मोक्ष के कारण रूप ध्यान बताते हैं

परे मोक्षहेतू॥29॥

धर्म शुक्ल दो ध्यान कहे हैं, मुक्ती के हेतु।
भवसागर से पार हेतु यह, बनते हैं सेतु॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, जग में श्रेष्ठ कही।
पढ़कर करें आचरण जो भी, पावें मार्ग सही॥

ॐ ह्रीं धर्मशुक्ल ध्यान परिणाम प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्त्तध्यान के चार भेद अनुक्रम से कहते हैं

आर्त्तममनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः ॥30॥

जो अनिष्ट वस्तु के चिंतन, में ही लीन रहे।
वह अनिष्ट संयोगज ध्यानी, सारे जीव कहे॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, जग में श्रेष्ठ कही।
पढ़कर करें आचरण जो भी, पावें मार्ग सही॥

ॐ ह्रीं अनिष्ट संयोगज आर्त्तध्यानस्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपरीतं मनोज्ञस्य ॥31॥

इष्ट वस्तु के खो जाने पर, उसको ही ध्यावें।
इष्ट वियोगज आर्त्तध्यान के, धारी कहलावें॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, जग में श्रेष्ठ कही।
पढ़कर करें आचरण जो भी, पावें मार्ग सही॥

ॐ ह्रीं इष्टवियोगज आर्त्तध्यानस्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनायाश्च ॥32॥

तन की पीड़ा के चिंतन में, जिनका मन जावें।
वही वेदना आर्त्तध्यान के, धारी कहलावें॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, जग में श्रेष्ठ कही।
पढ़कर करें आचरण जो भी, पावें मार्ग सही॥

ॐ ह्रीं वेदना आर्त्तध्यान स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निदानं च ॥33॥

आगामी भोगों की वाञ्छा, जिनके हृदय जगे।
आर्त्तध्यान करते निदान वह, उसमें जीव लगे॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, जग में श्रेष्ठ कही।
पढ़कर करें आचरण जो भी, पावें मार्ग सही॥

ॐ ह्रीं निदान आर्त्तध्यान स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब गुणस्थान की अपेक्षा आर्त्तध्यान के स्वामी बतलाते हैं

तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम् ॥34॥

आर्त्तध्यान अविरति देशव्रत, का धारी पावे।
अरु प्रमत्त संयम के धारी, में भी हो जावे॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, जग में श्रेष्ठ कही।
पढ़कर करें आचरण जो भी, पावें मार्ग सही॥

ॐ ह्रीं आर्त्तध्यान संयुक्त गुणस्थान प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब रौद्रध्यान के भेद और स्वामी बतलाते हैं

हिंसानृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः ॥35॥

रौद्र ध्यान के जैनागम में, चार भेद गाए।
हिंसानृत चोरी विषयों का, संरक्षण पाए॥
रौद्र ध्यान अविरती देशव्रत, के धारी पावें।
चतुर्गति में रौद्र ध्यान के, धारी भटकावें॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, जग में श्रेष्ठ कही।
पढ़कर करें आचरण जो भी, पावें मार्ग सही॥

ॐ ह्रीं रौद्रध्यान भेद एवं स्वामित्व प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब धर्मध्यान के भेद बतलाते हैं

आज्ञाऽपायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यम् ॥36॥

धर्म ध्यान के चार भेद हैं, इनको भी जानो।
आज्ञापाय विपाक विचय अरु, संस्थान मानो॥
जैनागम है पूर्ण प्रमाणिक, आज्ञा विचय कहा।
अपाय विचय भव दुख से मुक्ति, पाने रूप रहा।
विपाक विचय कर्मों के फल का, चिंतन कहलाया॥
संस्थान विचय में चिंतन तीनों, लोकों का गाया।
गुणस्थान चौथे से भाई, सप्तम तक होवें।
पूर्वबद्ध कर्मों की सत्ता, को भी यह खोवें॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, जग में श्रेष्ठ कही।
पढ़कर करें आचरण जो भी, पावें मार्ग सही॥

ॐ ह्रीं धर्मध्यान भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब शुक्ल ध्यान के स्वामी बतलाते हैं

शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ॥37॥

अंग पूर्व के ज्ञाता मुनिवर, जो भी हो जाते।
आदि के शुभ शुक्ल ध्यान वश, उनको हो पाते॥
गुणस्थान अष्टम से ग्यारह, तक पहला होवे।
दूजा बारहवे में होकर, भव संतति खोवे॥
जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, जग में श्रेष्ठ कही।
पढ़कर करें आचरण जो भी, पावें मार्ग सही॥

ॐ ह्रीं द्वौ शुक्लध्यान स्वामी प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब यह बतलाते हैं कि बाकी के दो भेद किसके होते हैं

परे केवलिनः ।।38।।

केवलज्ञानी शुक्ल ध्यान दो, अन्तिम के पाते।
गुणस्थान तेरह चौदह में, क्रमशः प्रगटाते।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, जग में श्रेष्ठ कही।
पढ़कर करें आचरण जो भी, पावें मार्ग सही।।

ॐ ह्रीं अपर द्वय शुक्लध्यान भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल ध्यान के चार भेद

पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवर्तीनि ।।39।।

(वीर छंद)

पृथक्त्व वितर्क एकत्व वितर्क अरु, सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती ध्यान।
व्युपरत क्रिया निवृत्ति भाई, शुक्ल ध्यान यह चार सुजान।।
विनय सहित तत्त्वार्थ सूत्र की, पूजन करने आए हैं।
पढ़कर के तत्त्वार्थ सूत्र को, मोक्ष मार्ग अपनाए हैं।।

ॐ ह्रीं चतुः प्रकार शुक्लध्यानादि भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब योग की अपेक्षा से शुक्ल ध्यान के स्वामी बतलाते हैं

त्र्येकयोगकाययोगाऽयोगानाम् ।।40।।

काय वचन अरु मन के द्वारा, होवे पहला ध्यान।
दूजा एक योग वालों को, होता यह पहिचान।।
तीजा काय योग के धारी, शुक्ल ध्यान पाते।
चौथा योग रहित ज्ञानी जिन, पाकर शिव पाते।।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र की महिमा, जग में श्रेष्ठ कही।
पढ़कर करें आचरण जो भी, पावें मार्ग सही।।

ॐ ह्रीं योगापेक्षया शुक्लध्यान स्वामी प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल ध्यान के पहिले भेद की विशेषता बतलाते हैं

एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे ॥41॥

वीर छंद

श्रुत ज्ञान के आश्रय से द्वय, रहते भाई शुक्ल ध्यान।
हैं वितर्क वीचार सहित शुभ, प्रथम कहे ऐसा भगवान॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, हम सब करते हैं पूजन।
विनय सहित तत्त्वार्थ सूत्र को, करते हैं शत्-शत् वंदन॥

ॐ ह्रीं प्रथम शुक्ल ध्यानस्य विशेषता प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल ध्यान के द्वितीय भेद की विशेषता

अवीचारं द्वितीयम् ॥42॥

शुक्ल ध्यान का भेद दूसरा, होता है वीचार विहीन।
ध्यान पूर्ण होने पर मुनिवर, होते केवलज्ञान प्रवीण॥
गुणस्थान तेरह के अन्तिम, समय में होता तीजा ध्यान।
चौथा व्युपरत क्रिया निवृत्ति, चौदहवें में होय महान्।
शुक्ल ध्यान के धारी मुनिवर, निर्विकल्पता को पाते।
सर्व क्रिया स्वमेव छोड़कर, शिवपुर वासी बन जाते॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, हम सब करते हैं पूजन।
विनय सहित तत्त्वार्थ सूत्र को, करते हैं शत्-शत् वंदन॥

ॐ ह्रीं द्वितीय शुक्ल ध्यानस्य विशेषता प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वितर्क का लक्षण

वितर्कः श्रुतम् ।।43।।

श्रुत कहलाता है वितर्क शुभ, जैनागम में यही कहा।
मतिज्ञान पूर्वक होता श्रुत, शब्द श्रवण युत श्रेष्ठ रहा।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, हम सब करते हैं पूजन।
विनय सहित तत्त्वार्थ सूत्र को, करते हैं शत्-शत् वंदन।।

ॐ ह्रीं वितर्क स्वरूप प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीचार का लक्षण

वीचारोऽर्थ व्यञ्जन योगसङ्क्रान्तिः ।।44।।

अर्थ और व्यंजन योगों का, सहज रूप से परिवर्तन।
यह वीचार का लक्षण भाई, संक्रान्तिमय किया कथन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, हम सब करते हैं पूजन।
विनय सहित तत्त्वार्थ सूत्र को, करते हैं शत्-शत् वंदन।।

ॐ ह्रीं वीचार लक्षण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब पात्र की अपेक्षा से निर्जरा में होने वाली न्यूनाधिकता बतलाते हैं

सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानन्तवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशांत-मोहक्षपकक्षीणमोह जिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुणनिर्जराः ।।45।।

असंख्यात गुण कर्म निर्जरा, क्रमशः यह सब पाते हैं।
सम्यक् दर्शन के सम्मुख जो, मिथ्यादृष्टि जाते हैं।।
असंख्यात गुण इससे भी फिर, सम्यक् दृष्टि पाते हैं।
असंख्यात गुण इससे भी फिर, देशव्रती पा जाते हैं।।

सकल व्रतों के धारी हैं जो, इससे भी असंख्यात गुणी।
कर्म निर्जरा संयम तप से, पा लेते हैं जैन मुनी॥
कषाय अनन्तानुबन्धी की, विसंयोजना करते जीव।
असंख्यात गुण कर्म निर्जरा, करने वाले रहे अतीव॥
दर्शन मोह क्षीण कर्त्ता के, इससे भी असंख्यात गुणी।
असंख्यात गुणी उपशम श्रेणी, वाले करते जैन मुनी॥
उपशांत मोह करने वाले को, होय निर्जरा असंख्यात गुणी।
असंख्यात गुण कर्म निर्जरा, क्षपक श्रेण्यारूढ़ मुनी॥
असंख्यात गुण कर्म निर्जरा, क्षीण मोह वाले करते।
उससे असंख्यात गुण जिनवर, कर्म घातिया को हरते॥
समुद्घात करने वाले जिन, अयोग केवली को जानो।
असंख्यात गुण कर्म निर्जरा, क्रमशः सबको पहचानो॥
पूर्ण निर्जरा हो जाने पर, जीवों का होता निर्वाण।
सिद्ध शिला पर जाने वाले, बन जाते हैं सिद्ध महान्॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, हम सब करते हैं पूजन।
विनय सहित तत्त्वार्थ सूत्र को, करते हैं शत्-शत् वंदन॥

ॐ ह्रीं पात्रापेक्षया निर्जराया न्यूनाधिकता प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब निर्ग्रंथ साधु के भेद बतलाते हैं

पुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः॥46॥

पंच भेद निर्ग्रन्थ साधुओं, के आगम में कहे जिनेश।
क्रमशः पुलाक वकुश कुशील, निर्ग्रन्थ स्नातक रहे विशेष॥
उत्तर गुण से हीन मूलगुण, में पुलाक कर लेते दोष।
मूलगुणों का वकुश मुनि शुभ, पालन करते हैं निर्दोष॥

प्रतिसेवना कुशील धारी के, उत्तर गुण में किंचित दोष।
छोड़ संज्वलन कषाय कुशील, मुनिचर्या पालें निर्दोष।
मोह कर्म उपशांत क्षीण कर, हो जाते साधु निर्ग्रन्थ।।
स्नातक मुनि कर्म घातिया, का भाई कर देते अन्त।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, हम सब करते हैं पूजन।
विनय सहित तत्त्वार्थ सूत्र को, करते हैं शत्-शत् वंदन।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थ साधु स्वरूप भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुलाकादि मुनियों में विशेषता

संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिङ्गलेश्योपपादस्थानविकल्पतः साध्याः ।।47।।

संयम श्रुत प्रतिसेवन धारी, तीर्थलिंग लेश्या उपपाद।
शुभ स्थान सहित जिन मुनि के, अन्य भेद रखना तुम याद।।
संयम आदि श्रेष्ठ भावना, मुझे प्राप्त होवे स्वामी।
जिन मुनियों सम श्रेष्ठ भावना, भा कर बनूँ मोक्षगामी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, हम सब करते हैं पूजन।
विनय सहित तत्त्वार्थ सूत्र को, करते हैं शत्-शत् वंदन।।

ॐ ह्रीं पुलाकादि निर्ग्रन्थानाम् उत्तरोत्तर विशेषता प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ

संवर पूर्वक करूँ निर्जरा, निज आतम का पाऊँ ध्यान।
क्षपक श्रेण्यारोहण करके, प्रकट होय मम् केवल ज्ञान।।
सर्व कर्म का नाश करूँ मैं, सिद्ध अवस्था को पाऊँ।
मिट जाए संसार भ्रमण अब, शिव नगरी को मैं जाऊँ।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, हम सब करते हैं पूजन।
विनय सहित तत्त्वार्थ सूत्र को, करते हैं शत्-शत् वंदन।।

ॐ ह्रीं संवर निर्जरा तत्त्व प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित नवम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्य जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य **:- ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत संवर निर्जरा तत्त्व निरूपक श्री उमास्वामी विरचित नवम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

दोहा- **कर्म शत्रुओं के लिए, संवर होता ढाल।**
उसको पाने के लिए, गाते हैं जयमाल।।

चौपाई

चउ गति भ्रमण महा दुखकार, इससे मिला कभी न पार।
किया नहीं कर्मों का रोध, जगा नहीं अन्तर में बोध।
आस्रव रुकते संवर होय, तप से कर्म निर्जरा सोय।
संवर के कारण कई एक, तप के हेतू रहे अनेक।
संवर कर्मों का हो जाय, यही भावना है सुखदाय।
तीन गुप्तियाँ कहीं जिनेश, इनसे संवर होय विशेष।
पञ्च समीति को उरधार, चर्या में हो यत्नाचार।
उत्तम क्षमा आदि को पाय, धर्मभाव जागे सुखदाय।
चिंतन अनुप्रेक्षा का होय, मोह राग की वृत्ति खोय।
परिषह जय में काय क्लेश, तप की शक्ति जगे विशेष।
सम्यक् चारित उर में धार, व्रत का पालन होय अपार।

इन्द्रिय वाणी के आधार, संयम होता दोय प्रकार।
संयम धारी जो गुणवान, करते निज आतम का ध्यान।
कर्म निर्जरा करें विशेष, जैनागम में कहे जिनेश।
आर्त्त रौद्र दो खोटे ध्यान, जागें न मेरे भगवान।
धर्म ध्यान में भाव लगे, शुद्ध ध्यान की प्रीति जगे।
श्रेणी आरोहण हो प्राप्त, होवे भव संताप समाप्त।
निर्ग्रन्थों का मार्ग मिले, वीतराग शुभ गंध खिले।
विशद ज्ञान का दीप जले, कर्मास्रव मम् पूर्ण टले।
सर्व कर्म का होय विनाश, मोक्षपुरी में होय निवास।
मन में जागे भाव यथेष्ठ, जीवन बन जाए मम् श्रेष्ठ।
मन में जागी है यह आश, जैन धर्म का होय विकास।
जब तक मेरी श्वास चले, जिन गुरु का आशीष मिले।
उनके चरण झुकाता माथ, जन्म-जन्म मैं पाऊँ साथ।

छन्द-घत्तानन्द

संयम को पाएँ ध्यान लगाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
हम कर्म नशाएँ शिव सुख पाएँ, शिव नगरी को हम जाएँ।।

ॐ ह्रीं संवर निर्जरा तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित नवम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- संवर तप से निर्जरा, होय कर्म की हान।
अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, पाऊँ केवल ज्ञान।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

अध्याय दशम पूजा

स्थापना

मोक्षमार्ग की महिमा सारे, जग में अपरंपार कही।
मोक्षमार्ग दर्शाने वाली, शक्ती मंगलकार कही।।
मोक्षशास्त्र में मोक्ष तत्त्व का, वर्णन यहाँ विशेष रहा।
मंगलमय मंगलकारी शुभ, जैनधर्म का ग्रंथ कहा।।
मोक्ष तत्त्व को पाने का शुभ, भाव हृदय में आया है।
आह्वानन् कर तिष्ठाते, सौभाग्य विशद यह पाया है।।

ॐ ह्रीं मोक्ष तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित दशम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान स्वरूप निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित दशम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः पद स्थापनं।

ॐ ह्रीं मुक्त स्थल स्वरूप निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित दशम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

तर्ज- शांति पाठ की (चौपाई)

निर्मल प्रासुक जल की झारी, चढ़ा रहे हम मंगलकारी।
जन्म-जरा-मृत्यु हे भाई ! हो विनाश जो है दुखदाई।।
मोक्ष तत्त्व को पाने आए, पूजा के सौभाग्य जगाए।
मिले मोक्ष हमको सुखकारी, विशद भावना यही हमारी।।1।।

ॐ ह्रीं मोक्ष तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित दशम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

राग द्वेष ने हमें सताया, हमको चैन नहीं मिल पाया।
भव संताप मिटाने आए, चंदन आज चढ़ाने लाए।।

मोक्ष तत्त्व को पाने आए, पूजा के सौभाग्य जगाए।
मिले मोक्ष हमको सुखकारी, विशद भावना यही हमारी ॥2॥

ॐ ह्रीं मोक्ष तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित दशम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जगवास रहा दुखकारी, कष्ट सहे जग में कई भारी।
अक्षय पद अब पाने आए, अक्षत यहाँ चढ़ाने लाए॥
मोक्ष तत्त्व को पाने आए, पूजा के सौभाग्य जगाए।
मिले मोक्ष हमको सुखकारी, विशद भावना यही हमारी ॥3॥

ॐ ह्रीं मोक्ष तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित दशम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम व्यथा ने जगत भ्रमाया, चेतन कभी चेत न पाया।
काम वासना नाशनकारी, पुष्प चढ़ाते मंगलकारी॥
मोक्ष तत्त्व को पाने आए, पूजा के सौभाग्य जगाए।
मिले मोक्ष हमको सुखकारी, विशद भावना यही हमारी ॥4॥

ॐ ह्रीं मोक्ष तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित दशम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस व्यंजन हमने खाए, क्षुधा शांत न हम कर पाए।
क्षुधा वेदना नाशनकारी, चढ़ा रहे नैवेद्य सुखारी॥
मोक्ष तत्त्व को पाने आए, पूजा के सौभाग्य जगाए।
मिले मोक्ष हमको सुखकारी, विशद भावना यही हमारी ॥5॥

ॐ ह्रीं मोक्ष तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित दशम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महातम है भयकारी, जिसमें फंसी है दुनियाँ सारी।
मोह नाश करने हम आए, दीपक यहाँ जलाने लाए॥

मोक्ष तत्त्व को पाने आए, पूजा के सौभाग्य जगाए।
मिले मोक्ष हमको सुखकारी, विशद भावना यही हमारी।।6।।

ॐ ह्रीं मोक्ष तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित दशम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हमको कर्मों ने आ घेरा, हर प्रदेश में डाला डेरा।
अष्ट कर्म की नाशनकारी, धूप जलाते मंगलकारी।।
मोक्ष तत्त्व को पाने आए, पूजा के सौभाग्य जगाए।
मिले मोक्ष हमको सुखकारी, विशद भावना यही हमारी।।7।।

ॐ ह्रीं मोक्ष तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित दशम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल हमने सब जग के खाए, फिर भी तृप्त नहीं हो पाए।
हमको मोक्ष सुफल मिल जाए, फल अर्पण को हम ले आए।।
मोक्ष तत्त्व को पाने आए, पूजा के सौभाग्य जगाए।
मिले मोक्ष हमको सुखकारी, विशद भावना यही हमारी।।8।।

ॐ ह्रीं मोक्ष तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित दशम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ हमने न पाया, कर्मों ने जग भ्रमण कराया।
अष्टम वसुधा पर हम जाएँ, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ।।
मोक्ष तत्त्व को पाने आए, पूजा के सौभाग्य जगाए।
मिले मोक्ष हमको सुखकारी, विशद भावना यही हमारी।।9।।

ॐ ह्रीं मोक्ष तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित दशम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम वलयः

दोहा- कथन किया है मोक्ष का, सर्व जगत् सुखदाय।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, हम दसवाँ अध्याय।।

(अथ दशमवलयो परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सूत्र प्रारम्भ

केवलज्ञान की उत्पत्ति का कारण

मोहक्षयाज्ज्ञान-दर्शनावरणान्तराय-क्षयाच्च केवलम् ।।1 ।।

वीर-छंद

**मोहकर्म के क्षय होते ही, तीन कर्म भी होते क्षीण।
ज्ञान-दर्शनावरणी क्षय हो, अंतराय हो जाय विलीन।।
लोकालोक प्रकाशक क्षण में, हो जाता है केवलज्ञान।
जिनवाणी को सुनकर जग के, भवि जीवों का हो कल्याण।।
करते हैं तत्त्वार्थ सूत्र की, पूजन विनय भाव के साथ।
तीन योग से झुका रहे हैं, भक्ति भाव से अपना माथ।।**

ॐ ह्रीं केवलज्ञानोत्पत्ति हेतू प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष का कारण और उसका लक्षण कहते हैं

बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्न-कर्म-विप्रमोक्षो मोक्षः ।।2 ।।

**मिथ्या अविरति अरु प्रमाद से, योग कषायों के आधार।
बंध के हेतू रहे सभी यह, कर अभाव यह सभी प्रकार।।
पूर्ण रूप से सब कर्मों का, भव्य जीव जब कर दें नाश।
यही दशा शुभ मोक्ष कहाए, सिद्ध शिला पर होय निवास।।**

करते हैं तत्त्वार्थ सूत्र की, पूजन विनय भाव के साथ।
तीन योग से झुका रहे हैं, भक्ति भाव से अपना माथ।।

ॐ ह्रीं मोक्ष हेतु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह बतलाते हैं कि कर्मों के अलावा और किसका अभाव होता है

औपशमिकादि-भव्यत्वानां च ।।3।।

औपशमिक को आदि करके, क्षायोपशम औदायिक भाव।
पारिणामिक भव्यत्व भाव का, हो जाता है पूर्ण अभाव।।
केवल ज्ञान की महिमा है यह, सर्व जगत् में अपरंपार।
भवि जीवों को पथ दर्शायक, परम पवित्र हैं मंगलकार।।
करते हैं तत्त्वार्थ सूत्र की, पूजन विनय भाव के साथ।
तीन योग से झुका रहे हैं, भक्ति भाव से अपना माथ।।

ॐ ह्रीं औपशमिकादि भावानाम् अभाव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्य भावों के अभाव से मोक्ष होता है

अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसिद्धत्वेभ्यः ।।4।।

केवल हो सम्यक्त्व ज्ञान अरु, दर्शन हो सिद्धत्व महान्।
अन्यभाव का हो अभाव यह, सिद्धों की है शुभ पहिचान।।
सिद्ध शिला पर सिद्धों की है, महिमा जग से अपरंपार।
सिद्धों सम गुण हमें प्राप्त हों, यही भाव मम् मंगलकार।।
करते हैं तत्त्वार्थ सूत्र की, पूजन विनय भाव के साथ।।
तीन योग से झुका रहे हैं, भक्ति भाव से अपना माथ।।

ॐ ह्रीं स्वभाव भाव प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्त जीवों का स्थान बतलाते हैं

तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्याऽऽलोकान्तात्॥5॥

सर्व कर्म का क्षय होते ही, ऊर्ध्व गमन करते हैं जीव।
ऊर्ध्वलोक के अन्तभाग तक, सिद्ध शिला पर जाएँ सजीव॥
यह विशेष गुण पाते हैं शुभ, सिद्ध अनंतानंत महान्।
उनके गुण को पाने हेतू, भाव सहित करते गुणगान॥
करते हैं तत्त्वार्थ सूत्र की, पूजन विनय भाव के साथ।
तीन योग से झुका रहे हैं, भक्ति भाव से अपना माथ॥

ॐ ह्रीं मुक्त जीव स्थान प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्त जीव के ऊर्ध्व गमन का कारण

पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्-बन्धच्छेदात् तथा-गतिपरिणामाच्च॥6॥

पूर्व प्रयोगों के कारण से, होय संग का पूर्ण अभाव।
बंध का होवे अन्त पूर्णतः, ऊर्ध्व गमन है जीव स्वभाव॥
ऊर्ध्वगमन करने में हेतू, कारण यह सब कहे विशेष।
जैनागम में यही व्यवस्था, बतलाते हैं वीर जिनेश॥
करते हैं तत्त्वार्थ सूत्र की, पूजन विनय भाव के साथ।
तीन योग से झुका रहे हैं, भक्ति भाव से अपना माथ॥

ॐ ह्रीं मुक्त जीवानाम् ऊर्ध्वगमन हेतु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊपर के सूत्र में कहे गये कारणों के दृष्टान्त

आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगतलेपाऽलाम्बुवदेरण्डबीजवदग्निशिखावच्च॥7॥

कुम्भकार के चलित चक्र सम, पूर्व प्रयोगों के द्वारा।
ऊर्ध्वगमन होवे जीवों को, यही भाव मेरा प्यारा॥
अग्नि शिखा ऐरण्ड बीजवत्, लेप रहित तुंबी सम जान।
ऊर्ध्वगमन होता स्वभाव से, ऐसा कहते हैं भगवान॥
पूर्व प्रयोगादि भेदों के, यह दृष्टांत बताए चार।
ऊर्ध्वगमन हो प्राप्त हमें शुभ, नाश होय मेरा संसार॥
करते हैं तत्त्वार्थ सूत्र की, पूजन विनय भाव के साथ।
तीन योग से झुका रहे हैं, भक्ति भाव से अपना माथ॥

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वगमन स्वभावोदाहरण प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकाग्र से आगे नहीं जाने का व्यवहार कारण

धर्मास्ति-कायाभावात्॥8॥

धर्मास्तिकाय गमन में भाई, पावन होता है साधन।
है अभाव आगे इसका तो, नहीं करे फिर जीव गमन॥
मुक्त जीव फिर वहीं ठहरते, निज आतम में रहते लीन॥
सादीनन्तानन्त सिद्ध जिन, होते केवल ज्ञान प्रवीण॥
करते हैं तत्त्वार्थ सूत्र की, पूजन विनय भाव के साथ।
तीन योग से झुका रहे हैं, भक्ति भाव से अपना माथ॥

ॐ ह्रीं लोकाग्र स्थिति हेतु प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्त जीवों में व्यवहार नय की अपेक्षा से भेद

क्षेत्रकालगतिलिङ्गतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानाऽवगाहनान्तरसंख्याल्प-बहुत्वतः साध्याः ॥9॥

क्षेत्र काल गति लिंग तीर्थ अरु, चारित बुद्ध कहे प्रत्येक।
बोधित बुद्ध ज्ञान अवगाहन, अंतर संख्या जानो नेक॥
अल्प बहुत्व सहित द्वादश इन, अनुयोगों से होता ज्ञान।
भूतपूर्व नैगम नय से यह, होती सिद्धों की पहिचान॥
यह सब भेद कहे औपचारिक, सिद्ध सर्वदा रहे अभेद।
सिद्ध प्रभु को वंदन करके, मिट जाए सब मन का खेद॥
ऐसी सिद्ध दशा को पाकर, हो जाऊँ मैं भी अविकार।
तीन योग से वंदन करता, विशद भक्ति से बारंबार॥
करते हैं तत्त्वार्थ सूत्र की, पूजन विनय भाव के साथ।
तीन योग से झुका रहे हैं, भक्ति भाव से अपना माथ॥

ॐ ह्रीं व्यवहार नयापेक्षया मुक्त जीव भेद प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ

जीवादि शुभ सप्त तत्त्व हैं, पुण्य पाप भी साथ रहे।
आस्रव बंध कराने वाले, पुण्य पाप यह दोय कहे॥
यह संसार भ्रमण के कारण, जैनागम में कहे विशेष।
संवर और निर्जरा दोनों, मोक्ष के हेतु कहे जिनेश॥
मोक्ष तत्त्व है भिन्न सभी से, यही साध्य होता है श्रेष्ठ।
जिन तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, साध्य सिद्ध हो जाए यथेष्ठ॥

मोक्ष तत्त्व को पाने हेतु, करते भाव सहित पूजन।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हैं सम्यक् अर्चन।।
करते हैं तत्त्वार्थ सूत्र की, पूजन विनय भाव के साथ।
तीन योग से झुका रहे हैं, भक्ति भाव से अपना माथ।।

ॐ ह्रीं मोक्ष तत्त्व प्ररूपक श्री उमास्वामी विरचित दशम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य : - ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत मोक्ष तत्त्व निरूपक श्री उमास्वामी विरचित दशम् अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- मोक्ष तत्त्व को अब हमें, पाना है हर हाल।
इसीलिए गाते यहाँ, भाव सहित जयमाल।।

छंद- सरसी

मोह कर्म का हो अभाव तो, कर्म नशे भाई।
ज्ञान दर्शनावरणी नशते, अंतराय जाई।।

केवलज्ञान प्रकट हो जाए, जग में सुखदाई।
सर्व चराचर द्रव्य दिखाई, देते फिर भाई।।

पाकर के अरहन्त दशा भी, मोक्ष नहीं मिलता।
सिद्ध दशा का उपवन भाई, फिर भी न खिलता।।

कर्म चार जो शेष रहे वह, रोक लगाते हैं।
बनकर के अर्हंत जगत में, बोध जगाते हैं।।

दिव्य-ध्वनि के द्वारा भगवन्, पथ दर्शाते हैं।
इसीलिए जग अर्हन्तों की, महिमा गाते हैं।।

सर्व कर्म का नाश किये फिर, मुक्ती मिलती है।
सिद्ध दशा की भवि जीवों में, बगिया खिलती है।।

अव्याबाध अखण्ड अतीन्द्रिय, सुख वह पाते हैं।
काल अनन्तानन्त रहें फिर, लौट न आते हैं।।

यही भावना जगी हमारी, अर्हत् पद पायें।
कर्म घातिया लगे हमारे, वह सब नश जायें।।

शेष कर्म का नाश करूँ मैं, शिव पद को पाऊँ।
भव सागर का अन्त होय मम्, अब न भटकाऊँ।।

सिद्ध दशा पाने को उर में, भाव जगाये हैं।
अतः सिद्ध के चरण-शरण में, हम भी आये हैं।।

जिन तत्त्वार्थ सूत्र को पढ़कर, हमने जाना है।
हम भी सिद्ध स्वरूपी हैं यह, हमने माना है।।

अन्तर इतना रहा प्रभु ने, सिद्ध दशा पाई।
हम संसारी जीवों में वह, शक्ति है भाई।।

शक्ति की अभिव्यक्ति करने, पूजन को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, आज यहाँ लाए।।

(छन्द-घत्तानन्द)

पूजा को आए, ज्ञान जगाए, भक्ति भाव से सिर नाए।
तत्त्वों को ध्याये, ध्यान लगाए, पूजा करके हर्षाए।।

ॐ ह्रीं मोक्ष तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित दशम अध्यायस्य तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **मोक्ष तत्त्व हमको मिले, जगा हृदय में भाव।**
शुद्ध ध्यान से प्राप्त हो, हमको सिद्ध स्वभाव।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

महाअर्घ्य

छन्द सरसी

शुभ तत्त्वार्थ सूत्र के द्वारा, हमने यह जाना।
सिद्ध शुद्ध स्वभाव हमारा, हमने पहिचाना।।
रत्नत्रय के द्वारा अपना, धर्म जगायेंगे।
उत्तम क्षमा आदि भावों से समता पायेंगे।।

वीर छंद

अष्ट कर्म ज्ञानावरणादी, से हम बहुत सताए हैं।
काल अनादी उनके वश हो, सारा जग भटकाए हैं।।
जागा अब सौभाग्य हमारा, जिन सूत्रों का ज्ञान मिला।
सम्यक्दर्शन का उर में जो, मेरे सुरभित कमल खिला।।
देव-शास्त्र-गुरु के प्रति मेरे, मन में सम्यक् भक्ति जगी।
उनकी पूजा अर्चा करने, में जो मेरी लगन लगी।।
इनकी भक्ति पूजा करके, अक्षय पुण्य कमाऊँगा।
संयम को पाकर अनुक्रम से, अपने कर्म नशाऊँगा।।
कर्म नाशकर अपने सारे, मोक्ष महापद पाना है।
सिद्धों के गुण आठ प्राप्त कर, उनमें ही रम जाना है।।

दोहा - उमास्वामी कृत ग्रन्थ को, चढ़ा रहे हम अर्घ्य।
ज्ञान ध्यान तप प्राप्त कर, पाने सुपद अनर्घ।।

ॐ ह्रीं सर्व तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य :- ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत सर्व तत्त्व निरूपक श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- निज में निज के रमण का, जागा मन में भाव।
गाते हैं जयमालिका, पाने निज स्वभाव।।

शम्भू छंद

काल अनादि से सब प्राणी, इस जग में भटकाए हैं।
मोह महामद को पीने से, कभी सम्हल न पाए हैं।।
धर्म प्रवर्तन करने वाले, तीर्थंकर होते चौबीस।
इन्द्र और नागेन्द्र भाव से, चरणों में झुकते शत् ईश।।
गणधर के द्वारा जिनवर की, वाणी झेली जाती है।
हेयाहेय का ज्ञान जगत् के, जीवों को बतलाती है।।
अनुक्रम से जिनवाणी को फिर, आचार्यों ने पाया है।
रत्नत्रय से भेद ज्ञान को, अपने हृदय जगाया है।।
जिनवाणी से जिन का अनुभव, आचार्यों ने पाया है।
मोक्ष मार्ग यह मोक्ष प्रदायक, जीवों को दर्शाया है।।
जैनाचार्य उमास्वामी ने, मंगलमय यह कार्य किया।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र यह, मंगलमय निर्माण किया।।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण से, मोक्षमार्ग का हो निर्माण।
इस पर चलने वाला प्राणी, निश्चय पाएगा निर्वाण।।
रत्नत्रय की ध्वजा पताका, हमको अब फहराना है।
ज्ञान शक्ति से मुक्ति पथ पर, हमको बढ़ते जाना है।।
लोकजयी सर्वोत्तम ध्वज है, महिमा अपरंपार कही।
तीन लोक में सर्वश्रेष्ठ है, अतिशय मंगलकार रही।।
सप्त तत्त्व अरु छह द्रव्यों का, जिसमें सुन्दर कथन किया।
अनेकांत अरु स्याद्वाद के, द्वारा जिसका मथन किया।।
जीवाजीव द्रव्य का लक्षण, बतलाया है सविस्तार।
उनके भेद प्रभेदों का भी, वर्णन किया है मंगलकार।।

सप्त तत्त्व की व्याख्या जिसमें, बतलाई है भली प्रकार।
वर्णन किया गया है पावन, जिनवर वाणी के अनुसार।।
हेय तत्त्व को हेय बताया, उपादेय को कहा महान्।
जिसके द्वारा पा लेते हैं, जग के प्राणी सम्यक्ज्ञान।।
ज्ञानानंद स्वभावी होकर, करता राग-द्वेष को दूर।
सदाचरण को पाने वाला, शुभ भावों से हो भरपूर।।
स्वर्ण कीच में रहकर के ज्यों, होता नहीं है उससे लिप्त।
त्यों ज्ञानी जन जग में रहकर, पूर्ण रूप से रहें अलिप्त।
रागभाव का हो अभाव तो, होता नहीं कर्म का बंध।
मोहनीय का नाश होय तो, प्राणी होता पूर्ण अबन्ध।।
फल पाऊँ तत्त्वार्थ सूत्र को, पढ़ने का मैं हे भगवन्।
सदाचार के द्वारा मेरा, छूट जाए भव का बंधन।।
विशद ज्ञान को प्राप्त करूँ मैं, अष्ट कर्म का होय विनाश।
यह संसार असार छोड़कर, पा जाऊँ मैं मुक्ति वास।।

छंद - घत्तानंद

पढ़के जिनवाणी, हो श्रद्धानी, बन जाएँ सम्यक् ज्ञानी।
हो आतम ध्यानी, केवलज्ञानी, तत्त्वार्थ सूत्र पढ़ के प्राणी।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व तत्त्व निरूपक जिनेन्द्र कथित श्री उमास्वामी विरचित तत्त्वार्थ सूत्रेभ्यो समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर विधान तत्त्वार्थ सूत्र का, मन में जागे हर्ष अपार।
शुभ भावों का फल पाता वह, सर्व जगत् में मंगलकार।।
कर देता अज्ञान दूर वह, बन जाता सम्यक्ज्ञानी।
मोक्षमार्ग का राही बनता, सत्य यही आगम वाणी।।
इस विधान की पूजा का फल, हमें प्राप्त हो हे भगवन्।
रत्नत्रय की निधि प्राप्त हो, विशदभाव से मम् वंदन।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

लाघव प्रदर्शन

शुभ तत्त्वार्थ सूत्र में कोई, अक्षर मात्रा पद स्वर हीन।
व्यंजन संधि रेफ आदि से, शब्द हुए हों कोई विहीन।।
क्षमा करें साधुजन हमको, हमसे त्रुटि हुई जो कोय।
शास्त्र रूप सागर में जाकर, कौन पुरुष न मोहित होय।।1।।
दश अध्यायों में विभक्त, तत्त्वार्थ सूत्र यह ग्रंथ महान्।
वह उपवास का फल पावे शुभ, पाठ करें जो भी इंसान।।2।।
शुभ तत्त्वार्थ सूत्र के कर्त्ता, गृद्धपिच्छ संयुक्त कहे।
नमूँ उमास्वामी गुरुवर को, मुनि वृन्द से युक्त रहे।।3।।
प्रथम चार अध्यायों में शुभ, जीव तत्त्व का है वर्णन।
पुद्गल का पंचम में भाई, किया गया है श्रेष्ठ कथन।।4।।
छठे सातवें में आस्रव का, बंध का अष्टम में जानो।
संवर निर्जरा का नौवें में, मोक्ष का दसवें में मानो।।5।।
इस प्रकार दश अध्यायों में शुभ, सप्त तत्त्व का है वर्णन।
मुनि पुंगव के द्वारा भाई, किया गया है शुभम् कथन।।6।।
तपश्चरण व्रत धारण करके, संयम का आश्रय हो प्राप्त।
जीव दया का पालन हो शुभ, मरण समाधि हो सम्प्राप्त।।7।।
चारों गतियों के दुःखों का, होय निवारण भली प्रकार।
ग्रन्थराज तत्त्वार्थ सूत्र को, वंदन मेरा बारम्बार।।8।।

दोहा- मोक्षशास्त्र को नमन है, विशद भाव के साथ।
पुष्पाञ्जलि करते शुभम्, झुका रहे हम माथ।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिंक्षिपेत्)

समुच्चय महार्घ

मैं देव श्री अर्हंत पूजूँ सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ साधु पूजूँ भाव सों।।1।।
अर्हन्त-भाषित बैन पूजूँ द्वादशांग रची गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरन शिव हेतु सब आशा हनी।।2।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि दया-मय पूजूँ सदा।
जजुँ भावना षोड्श रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।।3।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजत भजूँ।।4।।
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।।5।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस-वसु जयि होय पति शिव गेह के।।6।।

दोहा- **जल गंधाक्षत पुष्प चरु दीप धूप फल लाय।**
सर्वपूज्य पद पूजहूँ बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करै करावै भावना भावै श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन-विशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर-नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक मध्य लोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा, चमत्कारजी, महावीरजी, पदमपुरी, तिजारा, विराटनगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे .... देशे.... प्रान्ते.... नाम्नि नगरे.... मासानामुत्तमे .... मासे शुभ पक्षे .... तिथौ .... वासरे .... मुनि आर्यिकानां श्रावक-श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ (भाषा)

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिये)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एकसो आठ बिराजे, निरखत नयन कमलदल लाजै॥1॥

पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमो शांतिहित शांतिविधायक॥2॥

दिव्य विटप पहुपन की बरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तव प्रातिहार्य मनहारी॥3॥

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजों शिरनाई।
परम शांति दीजै हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघको॥4॥

वसंत तिलका

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके, इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप, मेरे लिये करहि शांति सदा अनूप॥5॥

इन्द्रवज्रा

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा-प्रजा राष्ट्रसुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन शांति को दे॥6॥

स्रग्धरा छन्द

होवे सारी प्रजा को सुखबल युत धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समे पे तिलभर न रहे व्याधियों का अन्देशा॥
होवे चोरी न जारी सुसमय वरते हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारै जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी॥7॥

दोहा- घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करो सब जगत में वृषभादिक जिनराज॥8॥

अथेष्टक प्रार्थना (मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रों का हो पठन सुखदा लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढांकुं सभी का॥
बोलु प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊं।
तोलों सेऊं चरण जिनके मोक्ष जौलों न पाऊं॥1॥

आर्या छन्द

तब पद मेरे हियमें, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलों लीन रहों प्रभु जबलों पाया न मुक्ति पद मैंने॥10॥
अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुडाहु भवदुःख से॥11॥
हे जगबन्धु जिनेश्वर, पाऊं तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मोंका क्षय हो सुबोध सुखकारी॥12॥

(परिपुष्पांजलि क्षेपण) यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिए।
इति शान्तये शांतिधारा, इति शान्तये शांतिधारा, इति शान्तये शांतिधारा

चौपाई

मैं तुम चरण कमल गुणगाय, बहुविधि भक्ति करो मनलाय।
जनम जनम प्रभु पाऊं तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि।।
कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय।
बार बार मैं विनती करूं, तुम सेवा भवसागर तरुं।।
नाम लेत सब दुःख मिट जाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूँ चरण तव सेव।।
जिनपूजा तें सब सुख होय, जिनपूजा सम और न कोय।
जिनपूजा तें स्वर्ग विमान, अनुक्रमतें पावे निर्वाण।।
मैं आयो पूजन के काज, मेरे जन्म सफल भयो आज।
पूजा करके नवाऊं शीश, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश।।

दोहा- सुख देना दुःख मेटना, यही आपकी बान।
मो गरीब की विनती, सुन लिज्यो भगवान।।
पूजन करते देव की, आदि मध्य अवसान।
सुरगन के सुख भोगकर, पावे मोक्ष निदान।।
जैसी महिमा तुम विषें, और धरे नहिं कोय।
जो सूरज में ज्योति है, नहि तारगण होय।।
नाथ तिहारे नामते अघ छिनमांहि पलाय।
ज्यों दिनकर प्रकाशतें, अन्धकार विनशाय।।
बहुत प्रशंसा क्या करूँ मैं प्रभु बहुत अजान।
पूजाविधि जानूं नहीं शरण राखो भगवान।।
इस अपार संसार में शरण नाहिं प्रभु कोय।
यातैं तव पद भक्तको भक्ति सहाई होय।।

विसर्जन

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोई।
आप प्रसाद ते परमगुरु, सो सब पूरण होय॥1॥

पूजनविधि जानूँ नहीं, नहीं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करहु भगवान॥2॥

मंत्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरणकी सेव॥3॥

आये जो-जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमाण।
ते सब जावहु कृपाकर, अपने-अपने स्थान॥4॥

सर्वे: देवा: स्वस्थाने गच्छन्तु। मम अपराधं क्षम्यन्तु, क्षम्यन्तु, क्षम्यन्तु, ज:, ज:, ज:।

इत्याशीर्वादः।

आशिका लेना

श्रीजिनवर की आशिका, लीजै शीश चढ़ाय।
भव-भवके पातक कटे, दु:ख दूर हो जाय॥1॥

प्रेम प्रकृति का सबसे मधुर उपहार है।
यह उन्ही को मिलता, जिनका अच्छा व्यवहार है॥
प्रेम कहीं बाहर खोजने पर नहीं मिलता।
प्रेम तो विशद अन्तश् चेतना की पुकार है॥

आरती तत्त्वार्थ सूत्र की

(तर्ज- आज करें हम....)

आज करे तत्त्वार्थ सूत्र की, आरती सब नर-नार -2
घृत के दीपक लेकर आए-2, जिनवर के दरबार।
ओ जिनवर ! हम सब उतारे मंगल आरती।।

तीर्थंकर की दिव्य देशना, ॐकार मय प्यारी।
गणधर द्वारा गुँथित की है, जग में मंगलकारी।।
ओ जिनवर.....

आचार्यों ने क्रमशः जिसका, मौखिक वर्णन कीन्हा।
पुष्पदंत अरु भूतबलि ने, लिपिबद्ध कर दीन्हा।।
ओ जिनवर.....

उमास्वामी आचार्य ने अनुपम, रचना कीन्ही भाई।
शुभ तत्त्वार्थ सूत्र यह मनहर, कृति सामने आई।।
ओ जिनवर.....

सप्त तत्त्व छह द्रव्यों का, शुभ वर्णन जिसमें कीन्हा।
दश अध्याय के द्वारा अतिशय, मोक्षमार्ग शुभ दीन्हा।।
ओ जिनवर......

वह उपवास के फल को पाते, भाव सहित जो ध्यावें।
'विशद' भाव से पाठ करें अरु, आरती मंगल गावें।।
ओ जिनवर......

प्रशस्ति

भारत देश प्रदेश यह, नाम है राजस्थान।
जिसकी सारे देश में, अलग रही पहिचान।।
शहर गुलाबी श्रेष्ठ है, जयपुर जिसका नाम।
काल अनादि से रहा, ऋषि-मुनियों का धाम।।
जिनबिम्बों का भी यहाँ, होता है निर्माण।
विद्वानों की पूर्व से, रही निराली शान।।
तीर्थों में शुभ तीर्थ है, शहर लोक विख्यात।
जैनों की काशी कहा, होवे सबको ज्ञात।।
किशनपोल बाजार में, मंदिर जी छाबड़ान्।
पुष्पदंत जिसमें रहे, मूलनायक भगवान।।
पुष्पदंत मण्डल युवा, जिसमें बना महान्।
देव-शास्त्र-गुरु का सदा, करते हैं सम्मान।।
शहर मध्य चौपड़ बड़ी, जिसकी अलग मिशाल।
धर्म सभा चौबीस दो, आठ को हुई विशाल।।
मण्डल के द्वारा हुआ, जिसका पूर्ण प्रबंध।
भवि जीवों ने तप किया, पुण्य का शुभ अनुबंध।।
विक्रम संवत् बीस सौ, चौसठ रहा महान्।
फाल्गुन कृष्णा तीज को, हुआ पूर्ण गुणगान।।
शुभ भावों के हेतु यह, रचना हुई विशाल।
जिन आगम गुरु पद 'विशद', वंदन करूँ त्रिकाल।।
लेखक कवि मैं हूँ नहीं, मैं हूँ लघु आचार्य।
भूल-चूक को भूलकर, पढ़े सभी जन आर्य।।

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वच-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥

पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बसंत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)